सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 42, नई दिल्ली । मंगलवार, 22 अप्रैल 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अपने मिशन में सफल होने के लिए आपको अपने लक्ष्य के प्रति एक चित भाव से समर्पित होना पड़ेगा।

03 रेखा सरकार का हीट एक्शन 2025 लॉच

06 चिकित्सा विज्ञान का वरदान बन रहा अभिशाप

08 ममता को बर्खास्त कर बंगाल में राष्ट्रपति शासन की मांग पर धरना प्रदर्शन

दिल्ली परिवहन विभाग लोगों में मोटर वाहन नियमों के पालन के लिए जागरूकता अभियान चलाने की जगह चालान करवाने पर ज्यादा दबाव क्यों बनाती हैं?

संजय बाटला

दिल्ली भारत देश की राजधानी पर सड़कों के नाम पर

1. अधिक्रमित सड़के,
2. टूटी फूटी गड्ढों के साथ गंदगी से भरपूर सड़के,
3. ना सड़कों पर पैदल पथ,
4. ना ही पैदल यात्रियों के लिए सड़कों को पार करने के लिए अंडर/ओवर ब्रिज,
5. अतिक्रमण के साथ बिना नियम कायदे के सड़कों पर चल रहे कंस्ट्रक्शन कार्य,

कैसे दिल्ली की सड़कों पर समय से अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए मोटर वाहन चालक करे नियमों का पालन।

1. सार्वजनिक सवारी सेवा के नाम पर बड़ी बड़ी बाते पर सेवा शून्य कैसे कोई सार्वजनिक सवारी सेवा पर भरोसा करे ?
2. दिल्ली में सार्वजनिक सवारी सेवा को सुखद एवम्-समयानुसार सभी क्षेत्रों में प्रदान करने वाली दिल्ली परिवहन निगम के पास अपने नाम से पंजीकृत एक भी बस नहीं पर विज्ञापनों के अनुसार दावा 10000 पार,
3. घर से मुख्य सड़क तक और सड़क से गंतव्य स्थान तक जनता के पहुंचने के लिए एक भी सुरक्षित सार्वजनिक सवारी वाहन सेवा उपलब्ध नहीं,

दिल्ली की सड़कों को जाम मुक्त, दुर्घटना मुक्त बनाने के लिए कोई जागरूकता अभियान नहीं

दिल्ली की जनता निजी वाहनों की जगह किस सार्वजनिक सवारी सेवा के भरोसे पहुंचे समयानुसार सुरक्षित और सुखद अनुभव से गंतव्य स्थान पर बताने के लिए कोई नहीं।

क्या दिल्ली की जनता और बाहरी राज्यों/ बाहरी देशों से दिल्ली में आए हुए नागरिक

1. अनाधिकृत सवारी वाहन सेवा,
2. बिना चालक प्रमाण पत्र (चालक लाइसेंस) के चलाने वालो,
3. बिना फिटनेस, बिना इंश्योरेंस, बिना पूर्ण वाहन के कागजों के सड़कों पर चल रहे वाहनों
4. ऐसे वाहनो जिनके मालिकों का परिवहन विभाग के पास डाटा ही उपलब्ध नहीं के भरोसे

ऊपरलिखित श्रेणी के सवारी सेवा वाहनों द्वारा दिल्ली की सड़कों पर सुरक्षित, सुखद यात्रा करे और परिवहन विभाग इस बात की गारंटी देगा की ऐसे वाहनो से गंतव्य स्थान तक जनता सुगम सुरक्षित पहुंच जाएगी।

परिवहन विभाग को इन वाहनों के सड़कों पर बेखौफ चलने से कोई परेशानी नहीं आखिर क्यों ?

*. परिवहन विभाग को राजस्व में इजाफा करवाने के लिए जागरूकता अभियान चलाने से, सुरक्षित सार्वजनिक सवारी सेवा उपलब्ध कराने से परेशानी है।

*. अधिकृत रूप से चल रहे सार्वजनिक सवारी सेवा के वाहनों द्वारा की गई छोटी गलती पर चालान कर मोटा जुर्माना वसूल करवाने से मतलब है।

अब आप ही बताए जनता के हित के लिए बनाए गए विभाग और उसमें जनहित के प्रति ध्यान रखने के लिए नियुक्त आई.ए.एस. अधिकारी ही जनता के हित की जगह राजस्व के लिए जनता का अहित करने लगे तो कैसे मिलेगा दिल्ली की सड़कों पर सुरक्षित सुखद यात्रा, बड़ा सवाल ?

अति विशेष सूचना

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर .एन .आई . द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद से आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से मार्च में अपने 2 साल पूरे कर चुका है। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा हैं जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

आप सभी को यह जान कर खुशी होगी की "परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" का द्वितीय वार्षिकी समारोह अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने के साथ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य का उद्देश्य रखा गया है। इस समारोह में निम्नलिखित मुद्दों पर वाद- विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा

1. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
2. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
3. "दिल्ली को कैसे प्रदूषण मुक्त राज्य बनाया जा सकता है?"

वाद- विवाद प्रतियोगिता में हिस्सेदारी लेने वाले वक्ताओं के वक्तव्य के साथ परामर्शदाताओं से चर्चा भी इस समारोह में रखी जा रही है। इसके साथ इस आयोजन में भारत देश में निर्मित ई वाहनो, वीएलटीडी संयंत्र, एवम् अन्य उपयोगी स्टाल भी सब को आकृषित करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस समारोह में

1. सबसे अच्छा विचार / तर्क और समाधान प्रदान करने वाले वक्ता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े एंकर, वीडियो ग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योतिषाचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

संजय कुमार बाटला
संपादक

दिल्ली में अब शुरू होगा प्लास्टिक वाली सड़कों का चलन

सड़कों की उम्र बढ़ाने और कचरे के निपटान के लिए सीआरआरआई से मदद ले रही सरकार

राजधानी दिल्ली में अब प्लास्टिक वाली सड़कों का दौर शुरू होने वाला है। सरकार सड़कों की उम्र बढ़ाने और कचरे के निपटान के लिए सीआरआरआई से मदद ले रही है। प्लास्टिक कचरे का उपयोग करके सड़कें दो साल तक अधिक चलेंगी। दिल्ली कैंट में पहले किए गए प्रयोग सफल रहे हैं। इस तकनीक से सड़कों की दशा में सुधार होगा।

नई दिल्ली। सड़कें बनाए जाने के बाद ज्यादा दिनों तक चलें, इसे देखते हुए दिल्ली में प्लास्टिक वाली सड़कों का दौर शुरू होने वाला है, इससे दिल्ली में सड़कों की उम्र दो साल और बढ़ सकेगी। ऐसे में दिल्ली में सड़कों के जल्द टूट जाने की समस्या से निजात मिल जाने की संभावना है। दिल्ली में प्लास्टिक मिक्स सामग्री की सड़क बनाने के लिए दिल्ली सरकार सीआरआरआई (केंद्रीय सड़क अनुसंधान संगठन) से मदद लेने पर विचार कर रही है।

सीआरआरआई भी मदद देने को तैयार है, जल्द ही दोनों के बीच बैठक होने की संभावना है। कुछ साल पहले सीआरआरआई ने प्रयोग के तौर पर दिल्ली कैंट में इस तरीके की सड़क का किया निर्माण किया था, जिसके परिणाम बेहतर आए हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि प्लास्टिक के इस्तेमाल से सड़कों की उम्र कम से कम दो साल और बढ़ जाएगी। एक किलोमीटर सड़क बनाने में एक टन तक प्लास्टिक कचरे का उपयोग किया जा सकता है।इससे प्लास्टिक कचरे का भी निपटान हो सकेगा।

सड़क के क्षेत्र में दिल्ली में एक बड़ा प्रयोग होने की संभावना

दिल्ली में भाजपा की सरकार आने के बाद से प्रशासनिक स्तर पर तमाम तरह के बदलाव देखे जा रहे हैं। बदलाव कामकाज के तौर तरीके तरीकों और नई-नई तकनीक के प्रयोग करने के भी सामने आ रहे हैं। इसी कड़ी में अगर सड़कों की बात करें तो इस क्षेत्र में दिल्ली में एक बड़ा प्रयोग होने की संभावना है।

दिल्ली सरकार सड़कों की दशा को लेकर चिंतित है जो पिछले 10 साल में अक्सर खराब ही रही हैं। इस समस्या से जनता को सबसे ज्यादा जूझना पड़ा है। इसे ध्यान में रखते हुए सरकार अब सड़कों की मजबूती और लंबे समय तक चलने वाली सड़क बनाने की रणनीति के तहत प्लास्टिक वाली सड़कों पर विचार कर रही है।

कैसे तैयार होता है प्लास्टिक का कचरा

सीआरआरआइ के वैज्ञानिकों के अनुसार सड़क बनाने की कोलतार व रोड़ी मिक्स सामग्री में प्लास्टिक के उस कचरे को शामिल किया जाता है जो बेकार हो चुकी प्लास्टिक की वस्तुओं को मशीनों द्वारा काट कर छोटे छोटे टुकड़ों में तैयार किया जाता है। मानक के अनुसार 1 किलोमीटर सड़क बनाने में लगभग एक टन तक ऐसा कचरा उपयोग किया जा सकता है।

इसका क्या होता है लाभ

वैज्ञानिकों की मानें तो मिक्स सामग्री में प्लास्टिक के कचरे के डाले जाने से सड़क में मजबूती आती है और सड़क जल्द खराब होने से बचती है।इस तरह की सड़कें बरसात के समय भी जल्द खराब नहीं होती हैं।सड़कों की उम्र दो साल तक बढ़ाई जा सकती है यानी जो सड़क पांच साल तक चलती है उसे सात साल तक बचाया जा सकता है।मिक्स सामग्री में प्लास्टिक कचरा डालने से बहुत मामली खर्च बढ़ता है।

सफल रहा है इसका प्रयोग

प्लास्टिक कचरा मिक्स सड़कें बनाने का प्रयोग कुछ साल पहले दिल्ली में कैंट एरिया में किया गया था। जहां सदर बाजार रोड को बनाया गया था, जो आज तक अच्छी हालत में है। इससे पहले भी कुछ स्थानों पर इसका प्रयोग किया गया था, जो सफल रहा है।

सड़कों को लेकर अभी क्या है स्थित

दिल्ली में लोक निर्माण विभाग के पास 1259 किलोमीटर सड़के हैं। ये सड़कें प्रमुख सड़के हैं जिन पर शहर का अधिक दबाव रहता है। पीडब्ल्यूडी की मानें तो सड़क पांच साल तक चलने में ही खराब हो जाती है, इस दौरान कई बार मरम्मत भी करानी पड़ती है। अधिकारियों के अनुसार सड़क पर भरने वाले पानी के कारण भी जल्दी सड़कें खराब होती हैं।

क्या कहते हैं सीआरआरआई के वैज्ञानिक

हम दिल्ली सरकार से इस बारे में बात कर रहे हैं, उम्मीद है जल्दी मुख्यमंत्री के साथ इस बारे में बैठक होने की संभावना है। भाजपा सरकार सड़कों को लेकर बेहतर काम करने के प्रयास में है।अगर इस तकनीक को अपनाया जाता है, शहर की जनता को बहुत लाभ मिल सकेगा।

– डॉ. अंबिका बहल, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, सीआरआरआई

आज से दिल्ली के 70 से ज्यादा रूटों पर पर दौड़ेंगी 310 नई एसी इलेक्ट्रिक बसें

दिल्ली सरकार 22 अप्रैल को 320 नई एसी इलेक्ट्रिक बसें सड़कों पर उतारने की तैयारी में है। इनमें 240 मिनी और 80 स्टैंडर्ड साइज की बसें शामिल हैं। मुख्यमंत्री और परिवहन मंत्री की मौजूदगी में कुशक नाला डिपो से इन्हें रवाना किया जाएगा। ये बसें 70 से ज्यादा रूटों पर चलेंगी जिनमें पूर्वी और मध्य दिल्ली के रूट प्रमुख हैं।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। राजधानी में बसों की कमी से जूझ रही दिल्ली की जनता को आने वाले दिनों में कुछ राहत मिल सकती है। दिल्ली सरकार 22 अप्रैल को सड़कों पर 320 नई एसी इलेक्ट्रिक बसें उतारने की योजना बना रही है। जिससे लोगों का आवागमन आसान होगा।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और परिवहन मंत्री डा. पंकज कुमार सिंह की मौजूदगी में कुशक नाला डिपो से इन बसों को हरी झंडी दिखाकर रवाना करने की योजना है।

बसों को 70 से अधिक रूटों पर लगाया जाएगा

जो बसें उतारने की बात हो रही है, उनमें नौ मीटर लंबी 240 मिनी इलेक्ट्रिक बसों के अलावा 12 मीटर लंबी स्टैंडर्ड साइज वाली 80 इलेक्ट्रिक बसें शामिल हैं। इन बसों को 70 से अधिक रूटों पर लगाया जाएगा। जिसमें सबसे ज्यादा पूर्वी व मध्य दिल्ली के रूट शामिल हैं।

इसी के साथ नौ मीटर लंबी मोहल्ला बसों की नए नाम दिल्ली इलेक्ट्रिक व्हीकल इंटरचेंज (देवी) के साथ आधिकारिक शुरुआत भी हो जाएगी।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/ एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

दिल्ली में निर्माण कार्य से जुड़े रिश्वत कांड के बाद, पुलिस कमिश्नर सख्त, पुलिस वालों को दी हिदायत

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली: दिल्ली में निर्माण कार्य करने की अनुमति को लेकर बीते दिनों दिल्ली पुलिस के एएसआई ने जिस तरह दो लाख रिश्वत लेते गिरफ्तार हुआ है, एक बार फिर पुलिस की भूमिका पर सवाल उठ खड़े हुए थे. अब एक बार फिर पुलिस कमिश्नर संजय अरोड़ा ने आदेश जारी कर सभी को हिदायत दी है कि पुलिस कर्मी इसके लिए अधिकृत नहीं हैं.

दिल्ली पुलिस के कमिश्नर संजय अरोड़ा द्वारा जारी सर्कुलर में कहा गया है कि दिल्ली सरकार द्वारा जारी आदेश के बाद एक बार फिर से सूचित किया गया है कि अनाधिकृत कंस्ट्रक्शन को रोकना या ध्वस्त करना संबंधित सिविक विभागों, जैसे कि डीडीए, एमसीडी, रेवेन्यू विभाग का ही मूल एवं प्राथमिक कर्तव्य है. कोई भी पुलिस अधिकारी व कर्मी, खुद से ही, इस तरह के कार्यों को रोकने हेतु अधिकृत नहीं है.

संजय अरोड़ा ने कहा है कि पुलिस का कर्तव्य मात्र ऐसी गतिविधियों की सूचना सम्बंधित विभाग को देने भर की है. पुलिस विभाग से अनाधिकृत कंस्ट्रक्शन को रोकने, या ध्वस्त करने करने के लिए जब भी सिविक विभाग के कर्मचारी मौके पर आते है, तब ऐसी सूरत में, उनके द्वारा सहायता मांगने पर, उचित सहायता और सुरक्षा प्रदान करना पुलिस का काम है.

पुलिस की भूमिका पर उठे सवालः पुलिस कमिश्नर ने सभी अधिकारियों व थानाध्यक्ष से इस बारे में निर्देश देने और जागरूकता पैदा करने को कहा है. दरअसल, उक्त रिश्वतकांड के बाद इस संबंध में 16 अप्रैल को दिल्ली सरकार के शहरी विकास विभाग ने पुलिस कमिश्नर को पत्र लिख पुलिस कर्मियों को आदेश देने को कहा था. इससे पहले भी दिल्ली में निर्माण कार्य से संबंधित वैध/अवैध मामले को लेकर पुलिस की भूमिका हमेशा से संदिग्ध रही है, इस पर रोक के लिए कई आदेश पुलिस महकमे और सरकार की तरफ से जारी किए गए हैं, लेकिन इसमें पुलिस की भूमिका पर हमेशा से सवाल उठते रहे हैं.

दिल्ली में नई सरकार बनने के बाद गृह मंत्रालय और दिल्ली सरकार की सख्त हिदायतों के बावजूद दिल्ली पुलिस में कथित तौर पर निर्माण क्षेत्र में थाना स्तर पर रिश्वत का नहीं खेल नहीं थमा. जिस पर दिल्ली में निर्माण कार्य से जुड़ें मामलों में पुलिस की दखलंदाजी पर गृह मंत्रालय ने गत दिनों में आपत्ति भी जताई थी. जिसके बाद दिल्ली में नई सरकार बनने के बाद शहरी विकास विभाग ने स्पष्ट आदेश जारी कर पुलिस को दूर रहने का दिया आदेश था.

बावजूद दिल्ली पुलिस का एएसआई जिस तरह दो लाख रिश्वत लेते गिरफ्तार हुआ था.दिल्ली में निर्माण कार्य की अनुमति जारी करने में पुलिस की भूमिका स्पष्ट करने के लिए दिल्ली में बनी बीजेपी सरकार ने एक मार्च को एक सर्कुलर जारी किया था जो गृह मंत्रालय के आदेश पर जारी किया गया था. अब दोबारा पुलिस कमिश्नर ने महकमे के लिए उक्त आदेश जारी किया है।

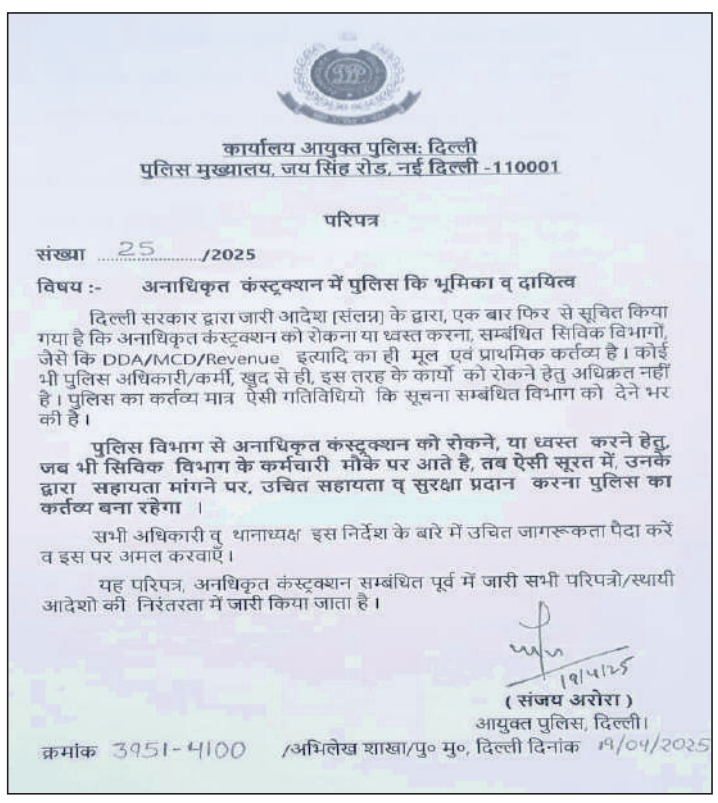

कार्यालय आयुक्त पुलिस: दिल्ली
पुलिस मुख्यालय, जय सिंह रोड, नई दिल्ली -110001

परिपत्र

संख्या 25 /2025

विषय :- अनाधिकृत कंस्ट्रक्शन में पुलिस कि भूमिका व् दायित्व

दिल्ली सरकार द्वारा जारी आदेश [संलग्न] के द्वारा, एक बार फिर से सूचित किया गया है कि अनाधिकृत कंस्ट्रक्शन को रोकना या ध्वस्त करना, सम्बंधित सिविक विभागों, जैसे कि DDA/MCD/Revenue इत्यादि का ही मूल एवं प्राथमिक कर्तव्य है। कोई भी पुलिस अधिकारी/कर्मी, खुद से ही, इस तरह के कार्यों को रोकने हेतु अधिकृत नहीं है। पुलिस का कर्तव्य मात्र ऐसी गतिविधियों कि सूचना सम्बंधित विभाग को देने भर की है।

पुलिस विभाग से अनाधिकृत कंस्ट्रक्शन को रोकने, या ध्वस्त करने हेतु, जब भी सिविक विभाग के कर्मचारी मौके पर आते है, तब ऐसी सूरत में, उनके द्वारा सहायता मांगने पर, उचित सहायता व् सुरक्षा प्रदान करना पुलिस का कर्तव्य बना रहेगा ।

सभी अधिकारी व् थानाध्यक्ष इस निर्देश के बारे में उचित जागरूकता पैदा करें व इस पर अमल करवाएँ।

यह परिपत्र, अनधिकृत कंस्ट्रक्शन सम्बंधित पूर्व में जारी सभी परिपत्रो/स्थायी आदेशो की निरंतरता में जारी किया जाता है।

19/4/25
(संजय अरोरा)
आयुक्त पुलिस, दिल्ली।

क्रमांक 3951-4100 /अभिलेख शाखा/पु० मु०, दिल्ली दिनांक 19/04/2025

क्या होते हैं पंचक? किन कामों की है पंचक में मनाही

पंचक शब्द से आप शायद परिचित हों लेकिन पंचक क्या होता है, पंचक कितने तरह के होते हैं। शुभ और अशुभ पंचक कौन-कौन से होते हैं, इसके बारे में जानिए- हिंदू धर्म में हर शुभ काम अच्छा मुहूर्त देखकर किया जाता है। भारतीय ज्योतिष के अनुसार, अशुभ समय में किए काम मनचाहा परिणाम नहीं देते। यही कारण है कि पंचक में बहुत से शुभ काम करने की मनाही है। पंचक के अंतर्गत धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तरा भाद्रपद, पूर्वा भाद्रपद व रेवती नक्षत्र आते हैं।

इतने तरह के होते हैं पंचक?

1. रोग पंचक रविवार को शुरू होने वाला पंचक रोग पंचक कहलाता है। इसके प्रभाव से ये पांच दिन शारीरिक और मानसिक परेशानियों वाले होते हैं। इस पंचक में किसी भी तरह के शुभ कार्य नहीं करने चाहिए। हर तरह के मांगलिक कार्यों में ये पंचक अशुभ माना गया है।

2. राज पंचक सोमवार को शुरू होने वाला पंचक राज पंचक कहलाता है। ये पंचक शुभ माना जाता है। इसके प्रभाव से इन पांच दिनों में सरकारी कामों में सफलता मिलती है। राज पंचक में संपत्ति से जुड़े काम करना भी शुभ रहता है।

3. अग्नि पंचक मंगलवार को शुरू होने वाला पंचक अग्नि पंचक कहलाता है। इन पांच दिनों में कोर्ट कचहरी और विवाद आदि के फैसले, अपना हक प्राप्त करने वाले काम किए जा सकते हैं। इस पंचक में अग्नि का भय होता है। इस पंचक में किसी भी तरह का निर्माण कार्य, औजार और मशीनरी कामों की शुरुआत करना अशुभ माना गया है। इनसे नुकसान हो सकता है।

4. मृत्यु पंचक शनिवार को शुरू होने वाला पंचक मृत्यु पंचक कहलाता है। नाम से ही पता चलता है कि अशुभ दिन से शुरू होने वाला ये पंचक मृत्यु के बराबर परेशानी देने वाला होता है। इन पांच दिनों में किसी भी तरह के जोखिम भरे काम नहीं करना चाहिए। इसके प्रभाव से विवाद, चोट, दुर्घटना आदि होने का खतरा रहता है।

5. चोर पंचक शुक्रवार को शुरू होने वाला पंचक चोर पंचक कहलाता है। विद्वानों के अनुसार इस पंचक में यात्रा करने की मनाही है। इस पंचक में लेन-देन, व्यापार और किसी भी तरह के सौदे भी नहीं करने चाहिए। मना किए गए कार्य करने से धन हानि हो सकती है,

6. अन्य पंचक इसके अलावा बुधवार और गुरुवार को शुरू होने वाले पंचक में ऊपर दी गई बातों का पालन करना जरूरी नहीं माना गया है। इन दो दिनों में शुरू होने वाले दिनों में पंचक के पांच कामों के अलावा किसी भी तरह के शुभ काम किए जा सकते हैं।

पंचक में न करें ये 5 काम

1. पंचक में चारपाई बनवाना अच्छा नहीं माना जाता। विद्वानों के अनुसार ऐसा करने से कोई संकट आ सकता है।

2. पंचक के दौरान जिस समय धनिष्ठा नक्षत्र हो, उस समय घास, लकड़ी आदि जलने वाली वस्तुएं एकत्र नहीं करनी चाहिए, इससे आग लगने का भय रहता है।

3. पंचक के दौरान दक्षिण दिशा में यात्रा नही करनी चाहिए, क्योंकि दक्षिण दिशा, यम की दिशा मानी गई है। इन नक्षत्रों में दक्षिण दिशा की यात्रा करना हानिकारक माना गया है।

4. पंचक के दौरान जब रेवती नक्षत्र चल रहा हो, उस समय घर की छत नहीं बनाना चाहिए, ऐसा विद्वानों का कहना है। इससे धन हानि और घर में क्लेश होता है।

5. यदि शव का अंतिम संस्कार करना हो:- पंचक में शव का अंतिम संस्कार करने से पहले किसी योग्य पंडित की सलाह अवश्य लेनी चाहिए। यदि ऐसा न हो पाए तो शव के साथ पांच पुतले आटे या कुश (एक प्रकार की घास) से बनाकर अर्थी पर रखना चाहिए और इन पांचों का भी शव की तरह पूर्ण विधि-विधान से अंतिम संस्कार करना चाहिए, तो पंचक दोष समाप्त हो जाता है। ऐसा गरुड़ पुराण में लिखा है।

शरीर सुख नहीं भोगता, मन शरीर और इंद्रियो के माध्यम से सुखद दुःखद असुखद अदुखद अनुभव करता हैं

मनुष्य का अचेतन मन 24 घंटे इंद्रिय और विषय के सम्पर्क से उत्पन होने वाली तरंग वायब्रेशन जो शरीर में उत्पन होती हैं उनसे जुड़ा है और उन तरंग को मन सुखद दुःखद या असुखद अदुखद मानता हे और मनराग द्रेष और मोह की प्रतिक्रिया करता हैं। सुखद मान ने पर राग की प्रतिक्रिया दुःख पर द्रेष की और न्यूट्रल पर मोह की प्रतिक्रिया 24 घंटे अचेतन में चल रही हे जिसका चेतन मन को कुछ पता नहि ये प्रतिक्रिया ही मन की कंडीशन बनती हे जिसे कर्म संस्कार या कर्म बंधन कहते है। चॉइसलेस नेस जो पूरे शरीर में अनुभव हो रहा उस के प्रति कोई चॉइस नहीं होनी चाहिए। कोई भी अनुभव अनित्य परिवर्तन शील है शाश्वत नहीं हैं इस लिए यह दुःख है। हम जिसे सुखद मानते हैं वह भी बदल जाता हे नश्वर है जब बदलता है तो दुःख में ही बदलता है। जैसे कि धन का सुख है धन लूट गया तो धन सुख गया अब वो दुःख बन गया कोई प्रियजन होने का सुख है उसकी मृत्यु होने पर दुःख होगा क्योंकि हमें उसने प्रिय सुखद माना। समाज में प्रतिष्ठा है उसका सुख है वो गई तो दुःख होगा क्योंकि प्रतिष्ठा को सुख माना था समझा था। संसार में सब बदलता है जिसको सुख मान रहे वो भी दुःख में ही बदलता है। इसका अनुभव जन्य ज्ञान नहीं होना इसको ही मिथ्या दृष्टि या अज्ञान या अविद्या कहाँ गया हे ज्ञानीओ द्वारा।

आज थाइरॉइड एक बहुत बड़ी समस्या बन चुकी है

इससे बचने के लिए पिएं धनिए का पानी, साथ में अपनाए और भी आसान घरेलू नुस्खे

1. थाइरॉइड को साइलेंट किलर माना जाता है क्योंकि इस बीमारी के लक्षण बहुत धीरे-धीरे पता चलते हैं,

2. दरअसल थाइरॉइड हमारी बॉडी में पाई जाने वाली एंडोक्राइन ग्लैंड में से एक है,

3. गले में मौजूद तितली जैसे आकार वाली यह ग्लैंड थायरॉक्सिन हॉर्मोन बनाती है जो हमारी बॉडी की ऊर्जा खर्च करने की क्षमता और कई फंक्शन्स पर असर डालता है !

थाइरोइड के घरेलू उपाय

उपाय नम्बर- 1

काली मिर्च से वजन और हाइपो-थायरॉयड दोनो को ही कन्ट्रोल करता है।

क्यों और कैसे.?

1. पिपेराईन, एक खास रसायन है जो काली मिर्च में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। यह कमाल का फ़ैट बर्नर हैऱ वसा के विघटन के लिए खासम-खास।

2. अक्सर महिलाओं में थायरॉक्सिन लेवल कम होने से तेजी से वजन बढ़ता है और पेपेराईन इस समस्या से छुटकारा दिला सकता है,

3. जिन्हें हाईपोथायरॉइड की समस्या है, उन्हें सिर्फ 21 दानें काली मिर्च के कुचलकर 15 दिनों तक रोज सुबह एक ही बार में एक साथ खा लें, सकारात्मक परिणाम आना तय और निश्चित है।

उपाय नम्बर- 2

25 ग्राम शुद्ध दालचीनी लें यह जितनी तीखी हो उतना ही अच्छा रहेगा, इसे पीस कर चूर्ण बना लें और एक चुटकी चूर्ण प्याज रस में मिलाकर सेवन करें।

यह प्रयोग बासी मुंह सिर्फ 21 दिन करें। 21 दिन सेवन से थाइरोइड सामान्य हो जाएगा और फिर कभी नहीं बढ़ेगा। महीने बाद इस प्रयोग को दोहराइए, अचूक लाभ होगा।

जिसने लगन व विश्वास के साथ कर लिया, समझो वो व्यक्ति जिन्दगी भर दवा खाने से बच गया। फिर क्या, शुरू हो जाओ और स्वस्थ एवम्-आरोग्य जीवन जियो।

विश्व पृथ्वी दिवस आज

विश्व पृथ्वी दिवस (WED) हर साल 22 अप्रैल को मनाया जाने वाला एक वैश्विक कार्यक्रम है, जो पिछले 53 वर्षों से पिछले लक्ष्यों पर विभिन्न नीति निर्माताओं, कार्यकर्ताओं और विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों की उपलब्धियों का सम्मान करता है। पृथ्वी के पारिस्थितिकी तंत्र और मानव जाति के साथ इसके संबंधों की रक्षा के लिए कई जागरूकता अभियान और गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। इस दिन, दुनिया भर के शासन अधिकारी, पर्यावरणविद और प्रकृति प्रेमी प्रकृति और पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा के महत्व के संबंध में जन जागरूकता बढ़ाने के एजेंडे के साथ गतिविधियों को अंजाम देने के लिए एक साथ आते हैं। इन गतिविधियों में पेड़ लगाना, प्लास्टिक के इस्तेमाल के खिलाफ़ आवाज़ उठाना, वन संरक्षण के लिए रैली निकालना, कागज़ की बर्बादी को कम करना आदि शामिल हैं, लेकिन ये यहीं तक सीमित नहीं हैं।

विश्व पृथ्वी दिवस (WED) का महत्व प्राकृतिक आपदाएँ मानवता के लिए लगातार ख़तरनाक होती जा रही हैं, जनसंख्या में वृद्धि और ग्लोबल वार्मिंग के कारण जलवायु परिवर्तन और समुद्र के स्तर में वृद्धि हो रही है। यह अधिक संभावना है कि भविष्य में, मानव जाति हर साल कई आपदाओं का सामना करेगी, जिससे हज़ारों लोग मारे जाएँगे। 2022 में, दुनिया भर की सरकारों द्वारा कई महत्वपूर्ण हरित नीति प्रस्तावों को अपनाया गया। हालाँकि, 2050 तक ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी) तटस्थता प्राप्त करने के उपायों को केवल कुछ ही लागू कर रहे हैं। जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल की हालिया रिपोर्ट के अनुसार, यदि ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए तत्काल अतिरिक्त कदम नहीं उठाए गए, तो पृथ्वी का तापमान पूर्व-औद्योगिक स्तरों से 3.2 डिग्री सेल्सियस अधिक हो जाएगा, जो मानव जीवन के लिए विनाशकारी होगा। पृथ्वी को प्राकृतिक आपदाओं से बचाना और रहने तथा जीवित रहने के लिए बेहतर स्थान प्रदान करना प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है। विश्व पृथ्वी दिवस स्थानीय पर्यावरण अधिकारियों द्वारा नई नीतियों का मसौदा तैयार करने और मौजूदा पर्यावरणीय मुद्दों पर कार्रवाई को लागू करने के महत्व को दर्शाता है। इसके अलावा, WED पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करने वाले कारकों और पृथ्वी के वनस्पतियों और जीवों की रक्षा के तरीकों के बारे में जनता को शिक्षित करता है।

विश्व पृथ्वी दिवस (WED) का इतिहास पहला पृथ्वी दिवस 22 अप्रैल, 1970 को मनाया गया था, और विस्कॉन्सिन के सीनेटर गेलॉर्ड नेल्सन ने एक युवा कार्यकर्ता डेनिस हेस के साथ मिलकर इसे आयोजित किया था। 1969 में तेल रिसाव की घटना के नुकसान को देखकर उन्हें इस आयोजन की शुरुआत करने की प्रेरणा मिली और लोगों को पर्यावरण संरक्षण के महत्व के बारे में बताने के लिए जागरूकता दिवस की आवश्यकता महसूस हुई।

1990 में, पृथ्वी दिवस को विश्व स्तर पर मान्यता मिली, क्योंकि 141 देशों के 20 करोड़ लोग विश्व भर में पुनर्चक्रण को बढ़ावा देने के लिए एक साथ आए, जिसने 1992 में ब्राजील (रियो डी जेनेरो) में पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के लिए आधार तैयार किया।

2010 में, EARTHDAY.ORG ने पृथ्वी दिवस को दुनिया भर के लोगों के लिए पर्यावरण के लिए कदम उठाने का एक महत्वपूर्ण अवसर बनाया। EARTHDAY.ORG के नेतृत्व में 193 देशों के लाखों लोग पर्यावरण आंदोलन में शामिल हुए हैं। संगठन ने हर साल पृथ्वी दिवस कार्यक्रम में 100 करोड़ से ज़्यादा लोगों को शामिल किया है, जिससे यह वैश्विक पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम बन गया है।

प्लास्टिक प्रदूषण से बचाव के उपाय

1. एकल-उपयोग प्लास्टिक की खपत को कम करना।
2. पुनः प्रयोज्य बैग, बोतलें और कंटेनरों का उपयोग करना।
3. प्लास्टिक कचरे का उचित तरीके से निपटान करें, जब भी संभव हो पुनर्चक्रण करें।
4. प्लास्टिक के विकल्प को बढ़ावा देने वाली पहलों का समर्थन करना।
5. प्लास्टिक प्रदूषण के प्रभाव के बारे में दूसरों को शिक्षित करना।

रुद्राक्ष के महत्व, लाभ और धारण करने की विधि

एक मुखी रुद्राक्ष इसके मुख्य ग्रह सूर्य होते हैं। इसे धारण करने से हृदय रोग, नेत्र रोग, सिर दर्द का कष्ट दूर होता है। चेतना का द्वार खुलता है, मन विकार रहित होता है और भय मुक्त रहता है। लक्ष्मी की कृपा होती है।

दो मुखी रुद्राक्ष मुख्य ग्रह चन्द्र हैं यह शिव और शक्ति का प्रतीक है मनुष्य इसे धारण कर फेफड़े, गुर्दे, वायु और आंख के रोग को बचाता है। यह माता-पिता के लिए भी शुभ होता है।

तीन मुखी रुद्राक्ष मुख्य ग्रह मंगल, भगवान शिव त्रिनेत्र हैं। भगवती महाकाली भी त्रिनेत्रा है। यह तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करना साक्षात भगवान शिव और शक्ति को धारण करना है। यह अग्नि स्वरूप है इसका धारण करना रक्तविकार, रक्तचाप, कमजोरी, मासिक धर्म, अल्सर में लाभप्रद है। आज्ञा चक्र जागरण (थर्ड आई) में इसका विशेष महत्व है।

चार मुखी रुद्राक्ष चार मुखी रुद्राक्ष के मुख्य देवता ब्रह्मा हैं और यह बुधग्रह का प्रतिनिधित्व करता है इसे वैज्ञानिक, शोधकर्त्ता और चिकित्सक यदि पहनें तो उन्हें विशेष प्रगति का फल देता है। यह मानसिक रोग, बुखार, पक्षाघात, नाक की बीमारी में भी लाभप्रद है।

पांच मुखी रुद्राक्ष यह साक्षात भगवान शिव का प्रसाद एवं सुलभ भी है। यह सर्व रोग हरण करता है। मधुमेह, ब्लडप्रैशर, नाक, कान, गुर्दा की बीमारी में धारण करना लाभप्रद है। यह बृहस्पति ग्रह का प्रतिनिधित्व करता है।

छः मुखी रुद्राक्ष शिवजी के पुत्र कार्तिकेय का प्रतिनिधित्व करता है। इस पर शुक्रग्रह सत्तारूढ़ है। शरीर के समस्त विकारों को दूर करता है, उत्तम सोच-विचार को जन्म देता है, राजदरबार में सम्मान विजय प्राप्त कराता है।

सात मुखी रुद्राक्ष इस पर शनिग्रह की सत्तारूढ़ता है। यह भगवती महालक्ष्मी, सप्त ऋषियों का प्रतिनिधित्व करता है। लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होती है, हड्डी के रोग दूर करता है, यह मस्तिष्क से संबंधित रोगों को भी रोकता है।

आठ मुखी रुद्राक्ष भैरव का स्वरूप माना जाता

है, इसे धारण करने वाला व्यक्ति विजय प्राप्त करता है। गणेश जी की कृपा रहती है। त्वचा रोग, नेत्र रोग से छुटकारा मिलता है, प्रेत बाधा का भय नहीं रहता। इस पर राहू ग्रह सत्तारूढ़ है।

नौ मुखी रुद्राक्ष नवग्रहों के उत्पात से रक्षा करता है। नौ देवियों का प्रतीक है। दरिद्रता नाशक होता है। लगभग सभी रोगों से मुक्ति का मार्ग देता है।

दस मुखी रुद्राक्ष भगवान विष्णु का प्रतीक स्वरूप है। इसे धारण करने से परम पवित्र विचार बनता है। अन्याय करने का मन नहीं होता। सन्मार्ग पर चलने का ही योग बनता है। कोई अन्याय नहीं कर सकता, उदर और नेत्र का रोग दूर करता है।

ग्यारह मुखी रुद्राक्ष रुद्र के ग्यारहवें स्वरूप के प्रतीक, इस रुद्राक्ष को धारण करना परम शुभकारी है। इसके प्रभाव से धर्म का मार्ग मिलता है। धार्मिक लोगों का संग मिलता है। तीर्थयात्रा कराता है। ईश्वर की कृपा का मार्ग बनता है।

बारह मुखी रुद्राक्ष बारह ज्योतिर्लिंगों का प्रतिनिधित्व करता है। शिव की कृपा से ज्ञानचक्षु खुलता है, नेत्र रोग दूर करता है। ब्रेन से संबंधित कष्ट का निवारण होता है।

तेरह मुखी रुद्राक्ष इन्द्र का प्रतिनिधित्व करते हुए मानव को सांसारिक सुख देता है, दरिद्रता का विनाश करता है, हड्डी, जोड़ दर्द, दांत के रोग से बचाता है।

चौदह मुखी रुद्राक्ष भगवान शंकर का प्रतीक है। शनि के प्रकोप को दूर करता है, त्वचा रोग, बाल के रोग, उदर कष्ट को दूर करता है। शिव भक्त बनने का मार्ग प्रशस्त करता है।

रुद्राक्ष को विधान से अभिमंत्रित किया जाता है, फिर उसका उपयोग किया जाता है। रुद्राक्ष को अभिमंत्रित करने से वह अपार गुणशाली होता है। अभिमंत्रित रुद्राक्ष से मानव शरीर का प्राण तत्व अथवा विद्युत शक्ति नियमित होती है। भूतबाधा, प्रेतबाधा, ग्रहबाधा, मानसिक रोग के अतिरिक्त हर प्रकार के शारीरिक कष्ट का निवारण होता है। केंद्रीय तंत्रिका तंत्र को सशक्त करता है, जिससे रक्त चाप का नियंत्रण होता है। रोगनाशक उपाय रुद्राक्ष से किए जाते हैं, तनावपूर्ण जीवन शैली में ब्लडप्रैशर के साथ ब्रेन हैमरेज, लकवा, मधुमेह जैसे भयानक रोगों की भीड़ लगी है। यदि इस आध्यात्मिक उपचार की ओर ध्यान दें तो शरीर को रोगमुक्त कर सकते हैं।

"जिन और काले जादू का साया": कैसे पहचानें कि कोई है बुरी ताकतों के निशाने पर?

किसी पर जिन का असर है या जादू है कैसे पता चलेगा :– जिन और जादू का असर व्यक्ति के सामान्य जीवन को प्रभावित करता हैं। माना जाता है की जिन का बुरा असर अच्छी खासी चल रही लाइफ को भी बर्बाद कर सकती हैं। कुछ बुरे प्रकृति के लोग काला जादू का इस्तेमाल जलन की वजह से दूसरों को हानि पहुँचाने के लिए करते हैं। जिन और काले जादू की पहचान करना बहुत ही आसान हैं। क्योकि जब कोई व्यक्ति इन नकारात्मक उर्जाओं से प्रभावित होता है तब कई प्रकार के लक्षण दिखाई देते हैं। इनका असर मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर भी पड़ता हैं। इसलिए सही समय पर लक्षणों पर गौर कर समस्या का निदान करने का प्रयत्न करना चाहिए। गूगल पर लोग अक्सर सर्च करते है की किसी पर जिन का असर है या जादू है तो कैसे पता चलेगा ?। जिन का असर या जादू लाइफ में भयंकर उथल-पुथल मचा देती हैं। आपको बता दूं की काले जादू या जिन के दुष्प्रभाव को को नष्ट करने के लिए हनुमान मंत्र और विष्णु जी के मंत्र का रोजाना जप करने की सलाह दी जाती हैं। नीचे विस्तारपूर्वक आपके सवाल "कैसे पता करूँ कि मुझ पर किसी ने जादू टोना किया है या नहीं?" का जवाब दिया गया हैं।

किसी पर जिन का असर है या जादू है कैसे पता चलेगा शास्त्र कहते है की जिन या काले जादू का असर मनुष्य के व्यवहार, बोलचाल, कार्य क्षमता, सोचने की शक्ति और शारीरिक स्वास्थ्य पर होता हैं। अगर किसी पर जिन या काले जादू का असर है तो निम्नलिखित लक्षणों के आधार पर इसकी पहचान की जा सकती हैं।

हर काम में अड़चन आना जिन जादू का बुरा असर दैनिक कार्यों के साथ-साथ प्रोफेशनल लाइफ पर भी पड़ता हैं। जब कोई व्यक्ति ऐसी नकारात्मक उर्जा के वश में होता है तब हर काम बाधित होने लगता हैं। बिज़नस और जॉब में मुश्किलें बढ़ने लगती हैं। जिस किसी भी कार्य में आप हाथ लगाते है वह कार्य बिगड़ने लगता हैं।

धन की लगातार होती है हानि माना जाता है की जिन का असर सबसे ज्यादा व्यक्ति के मष्तिष्क पर होता हैं। व्यक्ति गलत संगत और बुरी आदतों का शिकार हो जाता हैं। जिसकी वजह से धन हाथ से निकलता जाता हैं। अगर आप स्वयं को बुरी संगत और आदतों से दूर रख पाने में असमर्थ महसूस कर रहे है तो यह काले जादू या जिन का असर के लक्षण हो सकते हैं

बार-बार बीमार पड़ना इस दुनियां में ऐसा कोई इंसान नहीं जो कभी बीमार न पड़ा हो। लेकिन कुछ लोग साल के 365 दिन किसी न किसी बीमारी से परेशान ही रहते हैं। अगर बीमारियां आपका पीछा नहीं छोड़ रही है तो समझ जाना चाहिए की यह किसी शक्ति जैसे जिन, भुत-प्रेत या नकारात्मक शक्तियों की छाया हैं।

धार्मिक कार्यों में रूचि न लेना चाहे व्यक्ति किसी भी धर्म से ताल्लुक रखता हो, जादू टोना और जिन का असर व्यक्ति की सोच और कर्म को प्रभावित करता हैं। व्यक्ति अच्छाई और बुराई में अंतर नहीं कर पाता हैं। से विश्वास उठने लगता हैं। अधर्म कार्यों में रूचि बढ़ने लगती हैं।

व्यक्ति भ्रम का शिकार होने लगता हैं कहा जाता है की जो लोग जिन या जादू के प्रभाव में होते है वे लक्ष्य से भ्रमित होकर बेकार के कार्यों में अधिक रूचि लेने लगते हैं। इसके अलावे उल्टी-सीधी आवाजें सुनना और अँधेरे में खतरनाक शैडो का दिखना भी काले जादू के ही लक्षणों में से एक हैं।

लक्ष्य से भटकना हर कोई जीवन में कुछ बड़ा और अलग करने की चाहत रखता हैं। अच्छी शिक्षा और जॉब समाज में आपकी एक अलग पहचान बनाती हैं। नकारात्मक शक्तियां जैसे जादू टोने और जिन का असर व्यक्ति के मष्तिस्क को भ्रमित करने की कोशिश करता हैं। जिसकी वजह से जुएं, शराब और पराई स्त्री के प्रति आकर्षण और लत बढ़ने लगती हैं। ये सभी बुरे कार्य व्यक्ति को लक्ष्य से दूर ले जाता हैं।

शरीर के साथ अजीबोगरीब चीजें होना कभी भी भूख न लगना, बार-बार अजीबोगरीब डरावने सपने आना, शरीर पर कुछ रेंगता हुआ महसूस होना, बिना किसी बीमारी के कमजोरी जैसा लगना आदि बुरी शक्तियों के दुष्प्रभाव के रूप में दिखाई देते हैं। बिना वजह डरा महसूस करना भी इसी तरफ इशारा करता हैं।

निष्कर्ष किसी पर जिन का असर है या जादू है कैसे पता चलेगा आपको बताने का प्रयास किया है। जिन और बुरी शक्तियां तन और मन को वश में कर समस्यायों को जन्म देती हैं। जब कोई व्यक्ति इन नकारात्मक शक्तियों की जद में होता है तो उसकी लाइफ बुरे दौड़ का हिस्सा बन जाता हैं। बार-बार भ्रम होना, धन हानि, शारीरिक मानसिक बीमारियां और धार्मिक कार्यों में रूचि का कम होना जिन के असर का ही दुष्परिणाम हो सकता हैं।

घुटनों का दर्द और उसके बचाव

आज के दौर में घुटनों में दर्द एक आम बात बन चुका है जिसके कारण हम अपना काम सही ढंग से नहीं कर सकते। बढ़ती हुई उम्र के कारण या फिर वृद्धावस्था में हड्डियों के कमजोर हो जाने से अक्सर घुटनों में दर्द होने लगता है यह सभी आयु वर्ग के लोगों को प्रभावित करता है। घुटना हमारे शरीर का सबसे बड़ा और सबसे जटिल जोड़ है.. कभी कभी घुटने में दर्द के साथ सूजन भी रहती है. जब यह दर्द अधिक हो जाये तो छोटे मोटे रोज मर्रा के काम भी मुश्किल हो सकते हैं, जैसे की रूक्का वजन उठाना, सीढ़ियां चढ़ना, या थोड़े दूर पैदल चलना है। घुटनों से ही पैरों को मुड़ने की क्षमता मिलती है। लेकिन कई कारणों से घुटनों में दर्द होने लगता है। वैसे तो चोटों, उम्र, मोटापा, संरचनात्मक असामान्यताएं, मांसपेशियों में लचीलेपन की कमी आदि जिम्मेदार कारक होते हैं। लेकिन कुछ बीमारियों गठिया, बर्साइटिस और मांसपेशियों के दर्द आदि भी जोड़ों के दर्द का कारण होते हैं।

घुटने के दर्द के कारण

1-ऑस्टियोआर्थराइटिस, जब हड्डियों के सिरों पर कार्टिलेज परत धिस जाती है. आगे चलकर यह रोग जोड़ों की हड्डियों को भी प्रभावती करता है. ऑस्टियोआर्थराइटिस उपचार के द्वारा नियंत्रित तो किया जा सकता है परन्तु पूरी तरह ठीक नहीं किया जा सकता है. ऑस्टियोआर्थराइटिस के कारण घुटने में दर्द और सूजन की समस्या आम है. वैसे तो यह बीमारी किसी भी महिला या पुरुष को हो सकती है, पर 50 की उम्र पार कर चुकी रजोनिवृति वाली ज्यादातर महिलाओं में हार्मोन स्तर में बदलाव के कारण अधिक पाई जाती है।

१-टेन्डीनाइटिस; घुटने में सामने की ओर दर्द जो सीढ़ियों अथवा चढ़ाई पर चढ़ते या उतरते समय बढ़ जाने के कारण टेन टीनाइटिस की समस्या होती है। यह समस्या धावकों, और साइकिल चलाने वालों में अधिक पाई जाती है।

३-बर्साइटिस बर्साइटिस बर्सा की सूजन और जलन है। बर्सा तरल पदार्थ से भरी थैली है जो मांसपेशियों, नसों और हड्डियों के बीच एक तकिया के रूप में कार्य करती है। बर्साइटिस सामान्यतः अत्यधिक दबाव के कारण होता है। जोड़ों में दर्द और कठोरता बनी रहती है और साथ ही बर्सा के चारों ओर घेरे में जोड़ों के आसपास सूजन रहती है।

4- मिनिस्कस टियर – हमारे घुटने में दो मिनिस्कस होते हैं. एक घुटने एक अन्दर की ओर और एक घुटने के जोड़ के बाहर की तरफ. यह हमारे घुटने को स्थिरता देते हैं और घुटने में होने वाली आर्टिकुलर कार्टिलेज पर पड़ने वाले दबाव को कम करते हैं. अगर मिनिस्कस कार्टिलेज में कोई चोट लग जाए तो घुटने का जोड़ अस्थिर हो जाता है और अधिक दबाव से दर्द और सूजन दोनों हो सकती है.

5- पोस्ट-ट्रॉमेटिक अर्थराइटिस- पोस्ट-ट्रॉमेटिक अर्थराइटिस गंभीर घुटने की चोट के कारण होता है, यह चोटें घुटने को नुकसान पहुंचाकर दर्द, सूजन करती हैं।

-घुटनों के दर्द के और भी कई कारण हो सकते हैं जैसे कि :-
-लम्बे समय तक घुटने में बल बैठना और दबाव के कारण घुटने में सुजन आना।
- सीढ़ियों के ज्यादा चढ़ने या उतरने से होना।
-झटका लगना, -अधिक वजन होना।
-कैल्शियम की कमी

.— लक्षण —

- घुटने में दर्द के साथ साथ सूजन का दिखना
-घुटने के असंतुलित होने से चलने में कठिनाई।
- घुटने में जकड़न
- मोड़ने या सीधा करने की असमर्थता।

घुमने फिरने में तेज और चुभने वाला दर्द
.साधारण चलने में भी कठिनाई का अहसास

— रोकथाम – घुटने के दर्द को हमेशा नहीं रोका जा सकता, ।उचित वजन बनाए रखें। जोर या खिंचाव डालने वाले व्यायाम करने के बाद विश्राम लेने से घुटनों में होने वाले दर्द को रोकने में सहायता मिलती है।.

घुटने की समस्या से बचने के लिए आराम करें और ऐसे कार्यों से बचे जो दर्द बढ़ा देते हैं, विशेष रूप से वजन उठाने वाले कार्यों से बचें। इसके अलावा वजन को कम करने करने वाली एक सरसाइज को अपनी दिनचर्या में शामिल करें।

- डॉ प्रशांत मिश्रा

योग करें और नशें से दूर रहें - जयपाल शास्त्री

पहला सुख निरोगी काया पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के तत्वावधान में गाँव नीमका फ़रीदाबाद में साप्ताहिक नि:शुल्क योग चिकित्सा शिविर का आयोजन चल रहा है आज योग शिविर के समापन पर पंच यज्ञ कर खीर प्रशाद वितरण करा गया आजकल की भागदौड़ भरी ज़िंदगी व ग़लत ख़ानपान के कारण अनेकों रोग लग जाते हैं इसलिए हम सबको अपनी दिनचर्या में योगसन को ज़रूर जोड़ना चाहिए जयपाल शास्त्री जी ने कहा कि रोग भगाए रोग हमेशा ख़तरनाक से ख़तरनाक बीमारी योग के द्वारा ठीक की जा सकती है शुद्ध आहार का ख़ानपान करें अपने सुंदर शरीर ग़लत दिशाओं में ना ले जाए

रोड सेफ्टी ओमनी फाउंडेशन से वाइस प्रेसिडेंट बिजेंद्र सैनी ने योग शिविर में भाग ले रहे लाभार्थियों को सड़क सुरक्षा व नशें से दूर रहने के लिए जागरूक करा यहाँ गाँव के युवाओं को समझाया कि आप सड़क पर बहुत ही संभल के वाहन चलाए तेज गति में वाहन बिलकुल भी ना चलाए अगर ड्राइविंग करते समय नींद आए तो रुक कर आराम करें एक छोटी सी लापरवाही से बड़ी दुर्घटना हो जाती है मोटर व्हीकल एक्ट 2019 के तहत ट्रैफिक के चलन अब 10 गुना हो चुके हैं कृपया सावधानी से सड़क पर चले अपने गाड़ी के पेपर पूरे रखें

आज इस योग शिविर में योगाचार्य शास्त्री जयपाल जी, रिंकु, अनिल, नीमका सरपंच बेगराज स्टेट रोड सेफ्टी कांउंसिल सरदार देवेंद्र सिंह सैनी, एवं रोड सेफ्टी ओमनी फाउंडेशन से बिजेंद्र सैनी, जसबीर, व अन्य मोजूद रहे।

रेखा सरकार का हीट एक्शन 2025 लॉच

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

दिल्ली: दिल्ली में मुख्यमंत्री ने तीन कल रूप पायलट परियोजनाओं का उद्घाटन किया। दिल्ली में बढ़ते तापमान के प्रभावों का मुकाबला करने के उद्देश्य से इस योजना को मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने शुरू किया, जिन्होंने शहर में तीन कूल रूफ पायलट परियोजनाओं का भी उद्घाटन किया।

दिल्ली को गर्मी के अनुकूल बनाना लक्ष्य: CM रेखा गुप्ता

मुख्यमंत्री ने कहा, ₹हमारा मिशन दिल्ली को गर्मी के अनुकूल बनाना, लोगों की जान बचाना और हर मौसम को उसके निवासियों के लिए रहने योग्य बनाना है।₹ उन्होंने कहा कि सरकार हीटवेव के प्रभाव को कम करने के लिए बड़े पैमाने पर काम कर रही है, जो लगातार और तीव्र होती जा रही है।

दिल्ली में तापमान 52.9 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है। योजना के हिस्से के रूप में सरकार ने अस्पतालों को हीटस्ट्रोक रोगियों के लिए आईसीयू बेड और आवश्यक दवाओं से लैस समर्पित वार्ड बनाने के लिए कहा है।

झुग्गी-झोपड़ियों के पास बनेंगे कूलिंग सेंटर

घनी आबादी वाले इलाकों में खासकर फुटपाथ और झुग्गी-झोपड़ियों के पास कूलिंग सेंटर भी बनाए जाएंगे। गुप्ता ने कहा कि अन्य पहलों में ग्रीन रूफ, बस स्टॉप पर छायादार क्षेत्र और हीटवेव के लिए प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली शामिल हैं।

उन्होंने कहा कि सरकार मेडिकल पोर्टल और टेक्स्ट मैसेज के जरिए हीटवेव अलर्ट जारी करेगी। उन्होंने कहा कि सरकारी स्कूल बच्चों के बीच नियमित रूप से पानी का सेवन सुनिश्चित करने के लिए सख्त दिनचर्या का पालन करेंगे और झुग्गियों में ठंडे आश्रयों की व्यवस्था की जाएगी और ठंडा पीने का पानी उपलब्ध कराया जाएगा।

तीन रूफ पायलट परियोजनाओं का उद्घाटन

हुआ मुख्यमंत्री ने कश्मीरी गेट, आनंद विहार और दिल्ली सचिवालय में तीन कूल रूफ पायलट परियोजनाओं का भी वर्चुअल उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि जल्द ही ऐसी परियोजनाओं की संख्या बढ़ाई जाएगी। इस कार्यक्रम में स्वास्थ्य मंत्री पंकज सिंह, पीडब्ल्यूडी और जल मंत्री परवेश राणा और वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए।

खाटू श्याम दिल्ली धाम में भगवान वाल्मिकी धाम का भव्य शिलान्यास किया गया

मुख्य संवाददाता

दिल्ली: खाटू श्याम दिल्ली धाम में भगवान वाल्मीकि धाम का भव्य शिलान्यास मुख्य अतिथि बीएल संतोष राष्टीय संगठन महामंत्री भाजपा ने शिलान्यास करते हुए ये एक सनातन के लिए अग्रणीय कदम की शुरुवात के राष्टीय अध्यक्ष घनश्याम गुप्ता जावेरी को श्याम बाबा के आदेशनुसार इस अद्भुत कार्य के लिए शिल्पकार की संज्ञा दे खाटू श्याम दिल्ली धाम के साथ जुड़े 16700 ट्रस्टी और अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े लाखो व्यक्तियों को साधु वाद देते भारतीय संस्कृति और सनातन का के केंद्र बिंदु बनते जा रहे खाटू श्याम दिल्ली धाम की सराहना की।

आजादी के 76 वर्ष के इतिहास में पहली बार बाबा के आदेश से वाल्मीकि धाम को बनाने वाल्मीकि नहीं ,खाटू श्याम दिल्ली धाम के ट्रस्टी जी वाल्मीकि नहीं है साथ में बन रहे अयोध्या धाम , बन चुके गौतम बुद्धा धाम सामाजिक समरसता का प्रतीक , गुरुद्वारा धाम ,महावीर स्वामी धाम सनातन को बढ़ाने और भारत को विश्व गुरु की और अग्रसर कर रहा है परिणाम स्वरूप अब सभी मंदिरों में होगी सभी देवी देवताओं की पूजा वाल्मीकि समाज से महामेंदलेशर संत कृष्ण शाह विधार्थी महामेंडलेशर गुरु योगनी माता ने भी इसे राष्टीय अध्यक्ष घनश्याम गुप्ता जावेरी को श्याम बाबा से मिला स्वप्न में आदेश और आशीर्वाद का चमत्कार बताया।

तारों के जंजाल से सदर बाजार में हो सकता है बड़ा हादसा

जल्दी फेडरेशन करेगी सभी विभागों से वार्ता

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली में बढ़ रही गर्मी के कारण आए दिन आग की घटनाएं भी बढ़ती जा रही है इसको लेकर सदर बाजार के व्यापारियों में काफी दहशत है फेडरेशन ऑफ सदर बाजार ट्रेड्स एसोसिएशन चेयरमैन परमजीत सिंह पम्मा व अध्यक्ष राकेश यादव सदर बाजार की विभिन्न मार्केट में तारों का जंजाल बना हुआ है जिससे कभी भी कोई बड़ा हादसा हो सकता है इसके लिए लगातार व्यापारी बिजली विभाग, एमटीएनएल, एयरटेल सहित एजेंटीयों को लगातार सूचित कर रहे हैं मगर कोई भी कार्रवाई नहीं हो रही ।इसको लेकर फेडरेशन सभी विभागों से जल्द ही वार्ता करेगी। जिससे यह समस्या का हाल जल्द से जल्द निकल सके। परमजीत सिंह पम्मा व राकेश यादव ने बताया सदर बाजार की मटके वाली गली, ग्रीन मार्केट, कुताब रोड, पान मंडी, तोलिया वाली गली सहित अनेक मार्केट में तारों के जंजाल से बुरा हाल है जिससे आए दिन शॉर्ट सर्किट होते रहते हैं और कई बार आग लगने की बड़ी घटनाएं भी हुई है जिसमें करोड़ों रुपए का व्यापारियों का नुकसान हुआ है। परमजीत सिंह पम्मा व राकेश यादव ने बताया जल्दी कोई करे ना हुआ तो फेडरेशन इन के खिलाफ आंदोलन करेगी। साथी उन्होंने दिल्ली के मुख्यमंत्री से भी निवेदन किया है वह कृपया इस और ध्यान देकर व्यापारियों की सुरक्षा का ख्याल करें।

"नाक का लोकतंत्र: एक ऐतिहासिक ब्यंग" लोग बोलें : कुछ खास देशभक्त नेताजीयों की नाक अब केवल नाक नहीं रही—यह एक सांविधानिक संस्था, एक राष्ट्रीय धरोहर और एक राजनीतिक पथप्रदर्शक बन चुकी है।

- इन देश हितेषी नाक को अब ₹राष्ट्रीय नाक₹ घोषित किया जाए, ताकि आने वाली पीढ़ियां समझ सकें कि लोकतंत्र सिर्फ जनकल्याण से नहीं, बल्कि बयानबाज़ी और नाक की लंबाई से भी संचालित होता है।----
- इसी विकासशील नाक अब एक जीवंत धरोहर हैं, जिन्होंने कभी भी ग़रीब जनता को भड़काऊ, गुमराहु और भ्रमित करने वाले बयान नहीं दिये और दिखावटी देशभक्ति की शान तथा सत्ता का अहंकार कभी नहीं किया।-----
- आज़ देश की राजनीति में विशेष नाक का महत्व अचानक इतना बढ़ गया है कि अब संविधान, कानून और लोकतंत्र की परिभाषाएं भी इसके इर्द-गिर्द घूमती नजर आ रही हैं।

नई दिल्ली,—संजय सागर सिंह। नोटः इस व्यंग्य में प्रयुक्त चित्रों का इस व्यंग्य में व्यक्त विचारों अथवा कथनों से कोई प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध नहीं है। ये केवल प्रतीकात्मक रूप से उपयोग किए गए हैं और इनका उद्देश्य केवल व्यंग्य की प्रस्तुति को सशक्त बनाना है, न कि किसी व्यक्ति, संस्था या समूह को लक्षित करना।

आज़ देश की राजनीति में नाक का महत्व अचानक इतना बढ़ गया है कि अब संविधान, कानून और लोकतंत्र की परिभाषाएं भी इसके इर्द-गिर्द घूमती नजर आ रही हैं। कुछ खास नेताजीयों की नाक अब केवल नाक नहीं रही—यह एक सांविधानिक संस्था, एक राष्ट्रीय धरोहर और एक राजनीतिक पथप्रदर्शक बन चुकी है।

बुजुर्गों और लोगों का कहना है कि जब नेताजी पहली बार चुनाव लड़े थे, तब उनकी नाक आम इंसानों जैसी थी—संतुलित और विनम्र। मगर जैसे-जैसे उन्होंने देशहित और गरीबहित के 'ऐतिहासिक कार्य' किए, उनकी नाक लंबाई और ऊंचाई दोनों में बढ़ती गई। यह विकासशील नाक अब एक जीवंत धरोहर हैं, जिसने कभी भी ग़रीब जनता को भड़काऊ, गुमराहु और भ्रमित करने वाले बयान नहीं दिये और दिखावटी देशभक्ति की शान, सत्ता का अहंकार नहीं किया।

उन्होंने यह भी बताया कि अब वे नई पार्टी (महा महा गठबंधन) बनाने की सोच रहे हैं ताकि पुरानी पार्टी पर कोई आपस में आरोप ना लगा सकें, फिर नई को पुरानी बनाएँ और पुरानी को नई।

राजनीति में भ्रम बनाए रखना ही उनका नया मिशन है। ये हारे ही नहीं ! ये देश और ग़रीब हित में किये महान और ऐतिहासिक कार्यों की वजह से सस्ता से बाहर आज़ सड़कों पर हैं और जो बाकि हैं वो भी बहुत जल्द इसी स्तिथि में आने बाले हैं।

उन्होंने सरकार को सुझाव दिया है कि इस नाक को "राष्ट्रीय नाक" घोषित किया जाए, ताकि आने वाली पीढ़ियां समझ सकें कि लोकतंत्र सिर्फ जनकल्याण से नहीं, बल्कि बयानबाज़ी और नाक की लंबाई से भी संचालित होता है।

बड़ी नाक बोलीः "हमारी हार जनता की

जीत है, और जनता की जीत आखिर हमारी ही जीत है—मतलब, हम हारे ही नहीं ! हम अपने अच्छे कार्यों की वजह से आज़ सड़कों पर हैं।"

एक बुजुर्ग ने जब नेताजी से पूछा कि उनकी नाक इतनी लंबी कैसे हो गई, तो उन्होंने मुस्कुराकर कहा, "ये देश की जनता के प्यार की वजह से हुई है।" हालांकि कोई यह पूछने की हिम्मत नहीं जुटा पाया कि ये प्यार कब फाड़काऊ और गुमराहु 'बयानबाज़ी' में बदल गया।

सत्ता में रहते हुए नेताजी के महान जनकल्याणकारी जवाब भी ऐतिहासिक थेः

"पानी नहीं आ रहा ? तो समझिए हम जल संरक्षण को बढ़ावा दे रहे हैं !"

"बिजली नहीं है ? आत्मनिर्भर बनिए, मोमबत्ती जलाइए, लालटेन से बचपन की यादें ताजा कीजिए !"

"अस्पतालों में डॉक्टर नहीं हैं ? बीमारियों से खुद लड़िए, प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाइए !"

जनता उनकी इन बातों में इतनी तल्लीन हो गई कि उसे लगने लगा, शायद समस्या में ही समाधान छुपा है।

चुनाव के समय नेताजी के भाषण और भी ऐतिहासिक हो जाते थेः

"हमने गरीबों के इतने काम किए हैं कि गिनने बैठोगे तो उंगलियाँ कम पड़ जाएंगी।"

जब जनता ने पूछा—"बताइए, कौन-कौन से काम ?"

नेताजी बोलेः

1. हमारी पार्टी मजबूत हुई,
2. हमारा परिवार समृद्ध हुआ,
3. हमारे करीबी ठेकेदारों की किस्मत चमकी...

और बाकी जनता खुद समझदार है।

सड़क, बिजली, पानी, सफाई व्यवस्था पर नेताजी के जवाब भी लाजवाब थेः

"सड़कों की हालत देख कर मत घबराइए, वोट जितनी लंबी संख्या में देंगे, उतनी लंबी सड़कें बनेंगी।"

"कूड़ा उठाना बाकी है, पर हमने उसे ऐतिहासिक कूड़ा घोषित कर दिया है। योजना बन रही है—चुनाव बाद उठ जाएगा।"

अंत में, जब चुनाव परिणाम आया और नाक बाले नेताजी हार गए।

इनका अंतिम दृश्यः नेताजी संसद भवन के गेट पर खड़े थे, नाक हवा में तनी हुई, और मन में एक ही ख्यालः ₹काश, हमारी पार्टी कि याददाश्त और काम भी मेरी नाक जितनी लम्बे और देश एवं ग़रीब जनता के हित में होते तो जनता हमें नफ़रत से कभी नकारती नहीं। काश ! आगे मौका मिला तो हम भी देशहित, न्यायहित और ग़रीब जनता के हित में काम जरूर करेंगे, जिससे आने वाली पीड़ियां हमारा भी नाम गर्व से ले सके और हमारा भारत शांति एवं तरक्की के पथ पर और तेजी से अग्रसर हो।

पी एंड जी शिक्षा ने "ट्वेंटी टेल्स ऑफ ट्रायम्फ" का किया अनावरण और बच्चो में लर्निंग गैप को मिटाने के लिए

मुख्य संवाददाता

दिल्ली : पीएंडजी इंडिया का प्रमुख सीएसआर कार्यक्रम 'पीएंडजी शिक्षा' इस वर्ष एक महत्वपूर्ण पड़ाव पर है और एक प्रमुख उपलब्धि का उत्सव मना रहा है - शिक्षा के माध्यम से बच्चो के जीवन में बदलाव के 20 वर्ष।

पिछले दो दशकों में, यह कार्यक्रम देश भर में वंचित समुदायों में शिक्षा की पहुंच और शिक्षा में सुधार लाकर 50 लाख से अधिक बच्चों के जीवन पर सकारात्मक रुप से प्रभावित कर रहा हैं।

इस यात्रा को यादगार बनाने के लिए, पीएंडजी ने "20 टेल्स ऑफ ट्रायम्फ" नामक एक विशेष कॉफी टेबल बुक का अनावरण किया है, जिसमें परिवर्तन और संभावनाओं की प्रेरक कहानियां शामिल हैं - यह इस बात की सशक्त याद दिलाती है कि कि जब हर बच्चे को उभरने का अवसर मिलता है, तो शिक्षा कैसे बदलाव ला सकती है।

मौजूद कार्यक्रमों के साथ-साथ, पीएंडजी शिक्षा ने लर्निंग गैप्स पर बड़े पैमाने पर जागरूकता फैलाने का भी कार्य किया है। इस वर्ष का अभियान।

केवल 28* प्रतिशत बालिग़ ही लर्निंग गैप्स को पूरी तरह समझते हैं, इसलिए समय पर सहायता का अभाव रहता है। यह अभियान हस्तक्षेप की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करता है, यह दिखाते हुए कि सही सहारा और माता-पिता, शिक्षकों और साथियों से मिले प्रोत्साहन से बच्चे इन चुनौतियों को पार कर सकते हैं।

जैसा कि बिकास की यात्रा दिखाती है, जब वह सफल होता है, तो पूरा समुदाय उत्सव मनाता है, यह दर्शाता है कि हर बच्चे की जीत, हम सभी की जीत है।

दिल्ली में, दो दशकों से पीएंडजी शिक्षा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में मौजूद महत्वपूर्ण बाधाओं को दूर करने के लिए प्रतिबद्ध रहा है। यह कार्यक्रम 2005 में शुरू हुआ था, उस समय जब कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) से जुड़े कानून भी अस्तित्व में नहीं आए थे। ज़मीनी स्तर पर आवश्यकताओं का मूल्यांकन करते हुए, इस कार्यक्रम की शुरुआत स्कूल के बुनियादी ढांचे के निर्माण से हुई। सामाजिक-आर्थिक प्रगति के साथ, यह कार्यक्रम एक 360-डिग्री समग्र पहल के रूप में विकसित हुआ, जो शैक्षिक ढांचे को सुदृढ़ करने, सीखने के परिणामों में सुधार लाने और वंचित समुदायों को शिक्षा के माध्यम से सशक्त करने पर केंद्रित है।

पीएंडजी शिक्षा अपने साझेदारों के साथ मिलकर काम कर रहा है। इस साल का अभियान परिवारों और समुदायों से लर्निंग गैप्स को जल्दी पहचानने और उन्हें दूर करने की अपील करता है, ताकि हर बच्चे को सफलता का उचित अवसर मिले।"

इस अवसर पर अभिनेत्री और लेखिका सोहा अली खान ने कहा, "मैं कई वर्षों से पीएंडजी शिक्षा से जुड़ी रही हूं और यह देखकर बेहद गर्व होता है कि पिछले 20 वर्षों में इसने एजुकेशन पर इतना गहरा प्रभाव किया है।पीएंडजी शिक्षा शुरू से ही जटिल लेकिन महत्वपूर्ण मुद्दों जैसे लर्निंग गैप्स पर काम कर रहा है।

समर्थन का एक सरल इशारा - एक शिक्षक का आश्वासन या एक सहपाठी का प्रोत्साहन शिक्षा पर एकनिष्ठ रूप से केंद्रित रहकर 'शिक्षा' कार्यक्रम ने गहरा और स्थायी प्रभाव उत्पन्न किया है।

पिछले 20 वर्षों में, पीएंडजी शिक्षा ने देशभर में हजारों स्कूलों और समुदायों का समर्थन किया है, जिससे वंचित क्षेत्रों के 50 लाख से अधिक बच्चों पर लक्षित शैक्षिक हस्तक्षेपों के माध्यम से सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इस प्रयास के अंतर्गत, बच्चों के सीखने के परिणामों में सुधार के लिए पीएंडजी शिक्षा रोकथाम और सुधार दोनों पर ध्यान केंद्रित करता है। सुधार के लिए, यह 'एजुकेशनल इनिशिएटिव्स' के साथ साझेदारी में 'माइंडस्पार्क' नामक एक कंप्यूटर-आधारित एआई समर्थित अनुकूली लर्निंग टूल का उपयोग करता है। कार्यक्रम 'प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन' के साथ साझेदारी में जमीनी स्तर पर सुधारात्मक शिक्षण हस्तक्षेपों को भी लागू करता है, जो प्रशिक्षित स्वयंसेवकों और शिक्षकों द्वारा समर्थित सामुदायिक-आधारित और स्कूल-आधारित मॉडल के माध्यम से संचालित होते हैं। रोकथाम के लिए, पीएंडजी शिक्षा 'प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन' के माध्यम से प्रारंभिक बाल शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करता है, जिसमें बच्चों में मोटर, संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक, भाषा और रचनात्मक कौशल विकसित किए जाते हैं ताकि शिक्षा में अंतराल की रोकथाम हो सके और स्कूल में प्रवेश करते समय उनके लिए एक मजबूत नींव तैयार हो। पीएंडजी शिक्षा, 'राउंड टेबल इंडिया' के साथ मिलकर, सीखने के लिए अनुकूल वातावरण को और बेहतर बनाने की दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है।

दिल्ली भाजपा 5 मई तक प्रदेश भर में चलाएगी वक्फ सुधार जनजागरण अभियान

सबका साथ सबका विकास का विस्तार हो रहा है – अनीश अब्बासी

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा द्वारा आज से पूरे प्रदेश में वक्फ सुधार जनजागरण अभियान की शुरुआत की गई जिसको लेकर दिल्ली प्रदेश भाजपा कार्यालय में अल्पसंख्यक मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जमाल सिद्दीकी एवं प्रदेश महामंत्री विष्णु मित्तल की उपस्थिति में एक बैठक की गई। बैठक में कार्यक्रम के संयोजक आतिफ रशीद, अल्पसंख्यक मोर्चा दिल्ली प्रदेश प्रभारी कारी मोहम्मद हारून, अध्यक्ष अनीश अब्बासी के अलावा अनेकों जिला अध्यक्ष वा प्रदेश टीम के लोग उपस्थित रहे।

इस मौके पर भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जमाल सिद्दीकी ने मुस्लिम समाज को वक्फ संशोधन बिल से मिलने वाले लाभ के विषय में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि 5 मई तक मंडल स्तर पर इस जन जागरण अभियान का आयोजन किया गया है ताकि विपक्ष द्वारा दिल्ली के लोगों को वक्फ संशोधन बिल को लेकर फैलाए जा रहे भ्रम को दूर किया जा सके।

अपने संबोधन में जमाल सिद्दीकी ने कहा कि केंद्र की भाजपा सरकार किसी भी हालत में वक्फ बोर्ड को कमजोर नहीं करना चाहती है बल्कि उसे लौह स्तंभ की तरह और मजबूत करना चाहती है जिसके लिए कुछ संशोधन किए गए है और जो देश के मुसलमानों को धैर्यपूर्ण समझने की आवश्यकता है।

उन्होंने कहा कि इस बिल के माध्यम से देश के अनेकों राज्यों में भाजपा सरकार वक्फ़ प्रॉपर्टियों को कब्जे से मुक्त करवाएगी और गरीब, पिछड़े मुस्लिमों को उनका हक दिलवाने का काम करेगी और इसी कारण इन प्रापर्टी चोरों पर नकेल कसने के लिए ही ये संशोधन बिल लाया गया है।

जमाल ने कहा कि आने वाले समय में भारत में मुसलमानों का विकास होने से कोई रोक नहीं सकता क्योंकि दुनिया में लोगों का भला करने के लिए अल्लाह अपना एक बंदा भेजता है और हमारे बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अल्लाह के उसी बंदे के रूप में कार्य कर रहे हैं।

वही इस मौके पर भाजपा दिल्ली प्रदेश के महामंत्री विष्णु मित्तल ने कहा कि वक्फ़ बोर्ड का मतलब भ्रष्टाचार का अड्डा लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की दूरदर्शिता के चलते और देश के मुसलमानो के अधिकारों की रक्षा करते हुए इस बिल को पास करवाया जिससे अब भ्रष्टाचारियों द्वारा कब्जाई जमीनें मुक्त हो सकेंगी और जरूरतमंदों के हितों में काम आ सकेंगी।

अल्पसंख्यक मोर्चा दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष अनीश अब्बासी ने अपने संबोधन में कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के सबका साथ सबका विकास का विस्तार हो रहा है जिसमें महिलाओं की सहभागिता को प्रमुख रूप से देखा जा रहा है। उन्होंने कहा के हम मोदी जी का धन्यवाद करते हैं कि उन्होंने वक्फ बिल को संशोधित करके देश के मुसलमानों को उनका हक दिलाने का काम किया है।

गांव नंगथला में डॉक्टर बीआर अंबेडकर की प्रतिमा खंडित करने के मामले में दलित संगठनों ने हिसार में किया जबरदस्त जबरदस्त रोष प्रदर्शन, एसडीएम को सौंपा मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन

बाबा साहब की मूर्तियां तोड़ने वालों को पुलिस का संरक्षण, इसलिए बढी इस तरह की घटनाएं : रजत कल्सन

हिसार/ 21 अप्रैल

जिला हिसार के गांव नंगथला में 14 /15 की रात को डॉक्टर बीआर अंबेडकर की प्रतिमा खंडित कर दी गई थी जिस मामले में पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है परंतु गांव के एससी समाज के ग्रामीणों का कहना है कि मुख्य आरोपी जो मास्टरमाइंड हैं वो अभी भी पुलिस की गिरफ्त से बाहर है।

इसी के चलते दलित ग्रामीणो व दलित संगठनों के प्रतिनिधियों ने नेशनल अलायंस फ़ॉर दलित ह्यूमन राइट्स के संयोजक रजत कल्सन के नेतृत्व में लघु सचिवालय हिसार के बाहर जबरदस्त रोष प्रदर्शन किया।

इस प्रदर्शन के दौरान जनसभा को संबोधित करते हुए रजत कल्सन ने कहा कि गांव नंगथला में डॉक्टर अंबेडकर की मूर्ति खंडित करके मामले में पुलिस ने जानबूझकर गैर अनुसूचित जाति समुदाय से संबंधित सरपंच के बयानों पर मुकदमा दर्ज किया तथा जानबूझकर उसमें एससी एसटी एक्ट ईजाद नहीं किया तथा गांव की किसी भी दलित ग्रामीण को मामले में ना तो शिकायतकर्ता बनाया गया और ना ही गवाह बनाया गया तथा इस मामले में केवल कठपुतली आरोपियों को ही गिरफ्तार किया गया है जबकि असल आरोपी गांव में खुला घूम रहे हैं।

कलसन ने कहा कि यह प्रदर्शन एक ट्रेलर मात्र है, अगर 15 दिन के अंदर ज्ञापन में दर्शाइ गई सारी मांगे पूरी नहीं की तो पूरे हरियाणा में डॉक्टर अंबेडकर की मूर्तियां खंडित करने के मामलों के चलते प्रदेश की दलित जनता हरियाणा के मुख्यमंत्री नायाब सिंह सैनी के आवास का घेराव करने का काम करेगी।

जिस प्रदर्शन के दौरान मौके पर मौजूद सैकड़ो प्रदर्शनकारियों ने लघुसचिवालय हिसार में हरियाणा सरकार तथा हरियाणा पुलिस के खिलाफ जमकर नारेबाजी की तथा सैकड़ो लोगों का जनसमूह जैसे ही ज्ञापन देने के लिए लघु सचिवालय के गेट पर पहुंचा वहां पर पुलिस ने प्रदर्शनकारियों के साथ हाथापाई की तथा पुलिस ने अधिवक्ता रजत कल्सन को धक्के मारे तथा प्रदर्शकारियों पर लाठीचार्ज करने की भी कोशिश की गई। इस दौरान अधिवक्ता रजत कल्सन ने मौके पर स्थिति को संभालते हुए प्रदर्शनकारियों को समझाया तथा शांतिप्रिय तरीके से लघु सचिवालय के गेट पर नारेबाजी की व अन्य वक्ताओं ने अपनी बातें रखी। इसके बाद आननफानन में प्रशासन ने उपायुक्त की अनुपस्थिति में एसडीएम ज्योति को मौके पर बुलाया जिसने प्रदर्शनकारियों का ज्ञापन रिसीव किया।

उपमंडल अधिकारी ज्योति से अपने मांगे रखते हुए अधिवक्ता रजत कलसन ने में गांव नंगथला के ग्रामीणों की मांग रखते हुए कहा कि इस मामले में तुरंत प्रभाव से एससी समाज के पांच ग्रामीणों को मुकदमे में गवाह व मुदई बनाया जाए तथा मुख्य आरोपियों को गिरफ्तार किया जाए इसके साथ गांव नंगथला में नाईट विज़न सीसीटीवी कैमरा इनस्टॉल कराया जाए व गांव में छात्रों के लिए पुस्तकालय व डिजिटल लाइब्रेरी की स्थापना की जाए । इस पर एसडीएम ने प्रदर्शनकारियों को आश्वासन दिया कि इस ज्ञापन को तुरंत ही मुख्यमंत्री के को भेज दिया जाएगा और जिला स्तर की मांगों के बारे में अभी से कार्रवाई शुरू कर दी जाएगी। ज्ञापन देने के उपरांत प्रदर्शकारियों ने हिसार राजगढ़ नेशनल हाईवे पर हरियाणा के पुलिस महानिदेशक शत्रुजीत कपूर का पुतला फुकां व इसके उपरांत इसके उपरांत धरना स्थल पर अधिवक्ता रजत कल्सन ने धरने को स्थगित करते हुए प्रशासन को चेतावनी दी कि ज्ञापन के माध्यम से उन्होंने सरकार को 15 दिन का समय दिया है और 15 दिन के अंदर मांगे पूरी नहीं की गई तो इस मामले में हरियाणा के मुख्यमंत्री के कुरुक्षेत्र स्थित आवास का घेराव करने का काम किया जाएगा ।जिसमें पूरे हरियाणा से हजारों प्रदर्शनकारी हिस्सा लेंगे।

इस प्रदर्शन का संचालन राजेश पावड़ा ने किया तथा इस दौरान सामाजिक कार्यकर्ता बजंरग खीचड़, अधिवक्ता प्रवेश महिपाल, अधिवक्ता दीपक सैनीपुरा, योगी नरवाल,अधिवक्ता नरेश गुणपाल, हेड़ी महासभा के अध्यक्ष संजय ढुल, प्रताप खोबर सचिन चोपड़ा, प्रदीप भानखुड, पंकज, मनोज, सुरेन्द्र, संतलाल, बिंटू, अनिल, विकास, मोहित, योगेश, नशीब, बलवान सिंह, दीपक चौहान, मनोज काजला, जितेन्द्र काजला, नैनपाल , नंगथला, मास्टर सूरजमल, मास्टर उमेद, जोगीराम, महावीर बिबान, सुरेश काजला, बहादुर सिंह भानखुड व सैकड़ो ग्रामीण मौजूद रहे।

एनटीए: नाम में 'नेशनल', काम में 'नेग्लिजेंस'

[नेशनल टेस्टिंग या टेंशन एजेंसी: कब बदलेगा सिस्टम?]

सपने वो नहीं जो सोते वक्त देखे जाते हैं, सपने वो हैं जो नींद उड़ा दें। लेकिन जब सपनों को साकार करने वाली परीक्षा की आंसर-की ही बार-बार बदल जाए, तो नींद नहीं, बल्कि भविष्य की उम्मीदें ही उड़ने लगती हैं। राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए), जो देश की सबसे प्रतिष्ठित जेईई मेन, नीट और सीयूईटी जैसी परीक्षाओं का संचालन करती है, आज खुद सवालों के कठघरे में खड़ी है। जेईई मेन की फाइनल आंसर-की में 11 बदलाव—1 सवाल ड्रॉप, 6 सवालों के उत्तर बदले गए, और 4 सवालों में दो-दो विकल्प सही माने गए—ने 9.5 लाख छात्रों के सपनों पर सवालिया निशान लगा दिया। यह कोई छोटी-मोटी चूक नहीं, बल्कि उन मेहनती युवाओं के भविष्य पर एक करारा प्रहार है, जो सालों की तपस्या के बाद अपने सपनों को हकीकत में बदलने की राह पर हैं। क्या यह वाकई ₹नेशनल टेस्टिंग एजेंसी₹ है, या "नेशनल टेंशन एजेंसी" या "नेशनल ट्रायल एंड एरर एजेंसी" बन चुकी है?

जेईई मेन में 10.5 लाख छात्रों ने रजिस्ट्रेशन कराया, और 9.5 लाख ने परीक्षा दी। एक ऐसी परीक्षा, जहाँ एक अंक का अंतर किसी की जिंदगी को स्वर्ग बना सकता है या नर्क में धकेल सकता है, वहाँ आंसर-की में इतने बड़े बदलाव ने छात्रों को असमंजस और निराशा के भँवर में डुबो दिया। यह समस्या सिर्फ जेईई मेन तक सीमित नहीं है। सीयूईटी पीजी की परीक्षा को 18 दिन से ज्यादा हो गए, लेकिन फाइनल आंसर-की का इंतजार अब तक खत्म नहीं हुआ। नीट में पहले हुई गड़बड़ियाँ—पेपर लीक से लेकर परिणामों में देरी तक—ने एनटीए की साख को पहले ही धूल में मिला दिया था। एक ऐसी संस्था, जिसे शिक्षा व्यवस्था का तकनीकी आधार माना जाता है, आज उसी आधार को खोखला करती नजर आ रही है।

एनटीए से निष्पक्षता, पारदर्शिता और तकनीकी दक्षता की उम्मीद की जाती है। लेकिन यह संस्था अब उन लाखों छात्रों के गुस्से की वजह बन चुकी है, जो अपने भविष्य को संवारने के लिए दिन-रात मेहनत करते हैं। जेईई मेन, नीट, और सीयूईटी जैसी परीक्षाएँ महज इम्तिहान नहीं, बल्कि देश के युवाओं के सपनों का प्रवेश द्वार हैं। लेकिन जब इस द्वार की चौखट ही दरकने लगे, तो सपनों का महल कैसे टिका रहेगा? पहले सत्र में भी 6 सवाल ड्रॉप किए गए थे, और अब फाइनल आंसर-की में 11 बदलाव। यह बार-बार होने वाली गलतियाँ महज संयोग नहीं, बल्कि एक प्रणालीगत विफलता का स्पष्ट संकेत हैं।

कल्पना करें, एक छात्र जो सालों तक जेईई मेन की तैयारी में जुटा रहा, जिसने अनगिनत रातें किताबों के साथ गुजारीं, और अपने परिवार की उम्मीदों को कंधों पर ढोया—उसके लिए आंसर-की में एक गलत सवाल या उसका बदलाव क्या मायने रखता है? यह सिर्फ नंबर का खेल नहीं, बल्कि उसके भविष्य का सवाल है। एक अंक का अंतर उसकी रैंक को सैकड़ों, बल्कि हजारों स्थानों तक नीचे ला सकता है। वह कॉलेज, वह करियर, वह सपना जो उसने सालों तक देखा, सब कुछ एक झटके में धूल में मिल सकता है। एनटीए की ऐसी लापरवाही उन युवाओं के सपनों के साथ विश्वासघात है, जो इस प्रणाली पर भरोसा करते हैं। यह स्थिति तब और गंभीर हो जाती है, जब हम देखते हैं कि नीट 2024 में पेपर लीक और परिणामों में देरी ने पहले ही एनटीए की विश्वसनीयता को तार-तार कर दिया था।

एनटीए की विफलताएँ केवल तकनीकी गड़बड़ियाँ नहीं, बल्कि उन लाखों छात्रों के आत्मविश्वास को तोड़ने वाली घटनाएँ हैं, जो इस प्रणाली पर भरोसा करते हैं। जेईई मेन की तैयारी के दौरान छात्र न केवल शारीरिक और मानसिक रूप से थकते हैं, बल्कि भावनात्मक रूप से भी एक कठिन दौर से गुजरते हैं। महीनों तक कोचिंग, मॉक टेस्ट, और प्रेशर के बीच वे अपने सपनों को साकार करने की उम्मीद पालते हैं। लेकिन जब आंसर-की में बार-बार बदलाव होता है, या परिणाम में देरी होती है, तो उनकी उम्मीदें टूटने लगती हैं। यह सिर्फ एक परीक्षा का सवाल नहीं है, बल्कि उनके मानसिक स्वास्थ्य और आत्मविश्वास का सवाल है। एक ऐसी प्रणाली, जो छात्रों को प्रोत्साहित करने के बजाय उन्हें हतोत्साहित कर रही है, वह कितनी प्रभावी हो सकती है?

सवाल उठता है—क्या एनटीए वाकई इस जिम्मेदारी के काबिल है? क्या करोड़ों छात्रों का भविष्य ऐसी संस्था के हवाले करना उचित है, जो समय पर आंसर-की तक जारी नहीं कर पा रही? यह महज प्रशासनिक चूक नहीं, बल्कि एक ऐसी व्यवस्था का पतन है, जो देश के भविष्य को आकार देने का दावा करती है। जब एक संस्था बार-बार अपनी अक्षमता का परिचय देती है, तो वह केवल अपनी साख नहीं खोती, बल्कि शिक्षा व्यवस्था के प्रति युवाओं का विश्वास भी डगमगा देती है। यह स्थिति तब और चिंताजनक हो जाती है, जब हम देखते हैं कि इन परीक्षाओं में शामिल होने वाले छात्र देश का भविष्य हैं। इंजीनियरिंग, मेडिकल, और उच्चशिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश के लिए ये परीक्षाएँ उनके करियर का आधार हैं। लेकिन जब इस आधार में ही दरारें पड़ने लगें, तो भविष्य की इमारत कैसे मजबूत होगी?

इस स्थिति से निपटने के लिए तत्काल और ठोस कदम उठाने की जरूरत है। सरकार और नीति-निर्माताओं को एनटीए की कार्यप्रणाली की गहन समीक्षा करनी होगी। सबसे पहले, प्रश्नपत्र तैयार करने की प्रक्रिया को सख्त करना होगा। विशेषज्ञों की एक स्वतंत्र समिति गठित कर प्रश्नों की गुणवत्ता और सटीकता सुनिश्चित करनी होगी। दूसरा, आंसर-की जारी करने से पहले उसे कई स्तरों पर जाँचना होगा, ताकि बाद में बदलाव की नौबत न आए। तीसरा, परिणामों और आंसर-की को समय पर जारी करने के लिए सख्त समयसीमा निर्धारित होनी चाहिए। साथ ही, छात्रों की शिकायतों के निवारण के लिए एक पारदर्शी और त्वरित प्रक्रिया स्थापित होनी चाहिए। इसके अलावा, एनटीए को अपनी कार्यप्रणाली में तकनीकी सुधार लाने होंगे। आधुनिक तकनीक का उपयोग कर प्रश्नपत्रों की जाँच और आंसर-की की सटीकता को सुनिश्चित करना होगा।

एनटीए की हर लापरवाही उन छात्रों के सपनों पर चोट है, जो अपने भविष्य के लिए मेहनत करते हैं। यह एक संस्था की असफलता नहीं, बल्कि एक ऐसी प्रणाली का पतन है, जो युवाओं के भविष्य को आकार देने का दम भरती है। जब शिक्षा व्यवस्था की नींव कमजोर हो जाए, तो देश का भविष्य भी डगमगा जाता है। अब समय आ गया है कि एनटीए अपनी जिम्मेदारी समझे और अपनी कार्यप्रणाली में सुधार करे। यह सिर्फ एक संस्था की साख का सवाल नहीं, बल्कि उन करोड़ों युवाओं के भविष्य का सवाल है, जो इस प्रणाली पर भरोसा करते हैं। क्योंकि जब सपने टूटते हैं, तो देश का भविष्य भी अधर में लटक जाता है। सरकार को इस मुद्दे को गंभीरता से लेना होगा और ऐसे कदम उठाने होंगे, जो न केवल एनटीए की साख को बहाल करें, बल्कि छात्रों का शिक्षा व्यवस्था पर भरोसा भी कायम करें। क्योंकि एक मजबूत शिक्षा व्यवस्था ही एक मजबूत राष्ट्र की नींव होती है।

प्रो. आर के जैन "अरिजीत",

सुप्रीम कोर्ट के खिलाफ़ टिप्पणी से बवाल-सांसद बनाम सुप्रीम कोर्ट-अवमानना की गाज़ गिरनें की संभावना?

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी
गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर पिछले कुछ वर्षों से हम देख रहे हैं कि विधायिका,कार्यपालिका व न्यायपालिका के बीच तालमेल डगमगाने की खबरें आती रहती है।विधायिका कानून बनाकर न्यायपालिकाओं के पर कतरनें में लगे हुए हैं, जिसका ताजा सटीक उदाहरण इज़राइल, पाकिस्तान जैसे कुछ देश हैं जिन्होंने कानून पारित कर न्यायपालिका के पर कतरे हैं। भारत में भी न्यायिक अपॉइंटमेंट कमीशन बिल सहित अनेक ऐसे सुझाव दिए हैं कि न्यायाधीशों की कॉलेजियम सिस्टम से नियुक्ति न करने तथा इसपर आयोग या कानून बनाकर न्यायाधीशों की नियुक्ति की जाए। परंतु न्यायपालिका कोई दखल नहीं चाहता। आज हम इस विषय पर चर्चा इसीलिए कर रहे हैं क्योंकि 17 अप्रैल 2025 को माननीय राष्ट्रपति ने,19 अप्रैल 2025 को सत्ताधारी पार्टी के सांसद ने सुप्रीम कोर्ट के एक फैसले पर टिप्पणी की, जिसके कारण विधायिका कार्यपालिका व न्यायपालिका में बवाल मचा हुआ है, व अवमानना की याचिकाएं उपरोक्त धाराओं के अंतर्गत अनुमति/सहमति के लिए फाइल कर दी गई है। परंतु मेरा मानना है कि सांसद पर अवमानना की कार्रवाई की संभावना कम नजर आ रही है,क्योंकि सॉलिसिटर जनरल अटॉर्नी जनरल की सहमति नहीं मिलेगी।परंतु मेरा मानना है कि इस तरह की टिप्पणियाँ बिना किसी बैकिंग पावर के नहीं दी जा सकती, इसकी जगह अगर कोई छोटा या साधारण आदमी होता तो कब का कंटेंप्ट ऑफ़ कोड हो जाता और सजा की संभावना बन जाती? चूँकि क्या बड़े बयांन किसी रणनीति के तहत बैकिंग सपोर्ट से दिए जाते हैं? तीर निशाने पर नहीं लगा तो बैकिंग का किनारा व निजी बयान की घोषणा की जाती है? तथा कंटेंप्ट ऑफ़ कोर्ट एक्ट 1971 की धारा 15 (1) (सी) व अवमानना संबंधी सुप्रीम कोर्ट के 1975 के नियम 3 (सी) के तहत अटॉर्नी/सॉलिसिटर जनरल की सहमति से ही कार्रवाई शुरू होगी, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल का माध्यम से चर्चा करेंगे, सुप्रीम कोर्ट के खिलाफ टिप्पणी से बवाल मचा, सांसद बनाम सुप्रीम कोर्ट, अवमानना की गाज गिरनें की संभावना?

साथियों बात अगर हम सांसद के खिलाफ़ अवमानना की कार्रवाई होने की संभावना की करें तो, सुप्रीम कोर्ट और सीजेआई के ख़िलाफ़ विवादित बयान के लिए सांसद पर अब अवमानना की तलवार लटक रही है। अब उनके ख़िलाफ़ आपराधिक अवमानना की कार्रवाई की मांग उठी है। सुप्रीम कोर्ट के एक वकील ने अटॉर्नी जनरल को पत्र लिखकर अवमानना कार्यवाही शुरू करनेकी अनुमति मांगी है। पत्र में कहा गया कि उनकी टिप्पणियां गंभीर रूप से अपमानजनक और ख़तरनाक रूप से उकसाने वाली' हैं, जो सुप्रीम कोर्ट की गरिमा और स्वतंत्रता पर हमला करती हैं। यह पत्र अवमानना अधिनियम की धारा 15 (1)(बी) और सुप्रीम कोर्ट की अवमानना नियमावली के नियम 3 (सी) के तहत लिखा गया। उन्होंने आरोप लगाया कि उन्होंने वक्फ़विधेयक के संदर्भ में सांप्रदायिक रूप से ध्रुवीकरण करने वाले बयान दिए जो कोर्ट की निष्पक्षता पर सवाल उठाते हैं, हालांकि, कार्यवाही शुरू करने के लिए अटॉर्नी जनरल की सहमति ज़रूरी है। यह क़दम तब उठाया गया है जब सुप्रीम कोर्ट और मुख्य न्यायाधीश के ख़िलाफ़ विवादित टिप्पणियों ने सियासी हलकों में भूचाल ला दिया है। 19 अप्रैल को दिए गए अपने बयान में सांसद ने सुप्रीम कोर्ट को धार्मिक युद्ध भड़काने और अराजकता की ओर ले जाने का ज़िम्मेदार ठहराया था। उन्होंने एक्स पर लिखा था, क़ानून यदि सुप्रीम कोर्ट ही बनाएगा तो संसद भवन को बंद कर देना चाहिए। इसके बाद एएनआई से बातचीत में उन्होंने कहा था, इस देश में जितने गृह युद्ध जैसे हालात बन रहे हैं, उसके लिए सीजेआई जिम्मेदार हैं। सुप्रीम कोर्ट धार्मिक युद्ध भड़काने का काम कर रहा उन्होंने कोर्ट पर न्यायिक अतिक्रमण का आरोप लगाया और कहा कि संविधान के अनुच्छेद 368 के तहत क़ानून बनाने का अधिकार सिर्फ़ संसद को है, न कि कोर्ट को। उन्होंने कोर्ट के उस फ़ैसले पर आपत्ति जताई, जिसमें राष्ट्रपति और राज्यपालों को विधेयकों पर निर्णय लेने के लिए समयसीमा तय की गई थी। इसके अलावा वक़्फ़ संशोधन विधेयक 2025 पर कोर्ट की सुनवाई के दौरान सरकार के कुछ प्रावधानों को लागू न करने के आश्वासन पर भी उन्होंने ने सवाल उठाए। उनके बयानों से उपजे विवाद के बाद सत्ताधारी पार्टी अध्यक्ष ने उनके बयानों से

सुप्रीम कोर्ट पर निशिकांत दुबे के बयान से BJP का किनारा

पार्टी को अलग करते हुए इसे उनकी व्यक्तिगत राय क़रार दिया था।19 अप्रैल की रात को उन्होंने ने एक्स पर लिखा, 'निशिकांत दुबे और दिनेश शर्मा के बयान व्यक्तिगत हैं।पार्टी इनसे सहमत नहीं है और न ही इनका समर्थन करती है। हम इन बयानों को पूरी तरह खारिज करते हैं। उन्होंने जोड़ा कि पार्टी न्यायपालिका को लोकतंत्र का मज़बूत स्तंभ मानती है और उसका सम्मान करती है। उन्होंने दोनों सांसदों को भविष्य में ऐसे बयान देने से मना किया लेकिन, नड्डा का यह बयान विवाद को शांत करने में नाकाम रहा। विपक्ष ने इसे बीजेपी की दिखावटी सफाई करार दिया। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने कहा, पार्टी सुप्रीम कोर्ट को कमजोर करने की कोशिश कर रही है। क्या उन्होंने ने सांसद को नोटिस भेजा?

साथियों बात अगर हम अवमानना सहमति में अटॉर्नी/ सॉलिसिटर जनरल की भूमिका की करें तो, अगर अटॉर्नी जनरल अवमानना कार्यवाही की अनुमति देते हैं तोउनको कोर्ट में पेश होना पड़ सकता है। हालांकि, पहले भी कपिल सिब्बल और पी.चिदंबरम जैसे मामलों में अवमानना की मांग खारिज हो चुकी है, जिससे इसकी संभावना कम लगती है। फिर भी, सुप्रीम कोर्ट स्वतः संज्ञान ले सकता है, जैसा कि विपक्ष मांग रहा है।दुबे का बयान उस बड़े टकराव का हिस्सा है, जिसमें उपराष्ट्रपति ने भी सुप्रीम कोर्ट के अनुच्छेद 142 के इस्तेमाल को लोकतांत्रिक ताक़तों के ख़िलाफ़ परमाणु मिसाइल क़रार दिया था। यह दिखाता है कि कुछ पार्टी नेता कोर्ट के फ़ैसलों को न्यायिक अतिक्रमण मानते हैं।उनकी बयानबाजी ने न केवल सुप्रीम कोर्ट की गरिमा पर सवाल उठाए, बल्कि पार्टी के लिए एक सियासी संकट भी खड़ा कर दिया है। अध्यक्ष की सफाई और पार्टी की दूरी के बावजूद यह विवाद पार्टी की छवि को नुक़सान पहुंचा सकता है, खासकर तब जब वह न्यायपालिका का सम्मान करने की बात करती है। सुप्रीम कोर्ट में अवमानना की कार्यवाही के लिए याचिका दाखिल करने से पहले अटॉर्नी जनरल की सम्मति अनिवार्य प्रक्रिया है, जिसमें एक विशेष समुदाय के खिलाफ पक्षपात का आरोप लगाया गया उन्होंने ने अपने पत्र में कहा है कि सार्वजनिक रूप से दिए गए दुबे के बयान घोर निंदनीय, भ्रामक हैं, इनका उद्देश्य सर्वोच्च न्यायालय की गरिमा और अधिकार को कमतर दिखाना है, पत्र में कहा गया है कि दुबे की टिप्पणियां न केवल तथ्यात्मक रूप से गलत हैं, बल्कि उनका मकसद सर्वोच्च न्यायालय की महिमा और छवि को धूमिल करना कीर्ति को बदनाम करना है ऐसे बयान देकर वोन्यायपालिका में जनता का विश्वास खत्म करना चाहते हैं, उनका असली उद्देश्य न्यायिक निष्पक्षता में सांप्रदायिक अविश्वास को भड़काना है. ये सभी कृत्य स्पष्ट रूप सेन्यायालय की अवमानना अधिनियम,1971 की धारा 2(सी) (आई) के तहत परिभाषित आपराधिक अवमानना के अर्थ में आते हैं.यह बयान खतरनाक रूप से भड़काऊ है'सीजेआई के खिलाफ बयान पर दुबे ने लिखा है कि यह बयान न केवल बेहद अपमानजनक है बल्कि खतरनाक रूप से भड़काऊ भी है. इसमें लापरवाही से राष्ट्रीय अशांति होने के आसार और वैसी स्थिति के लिए मुख्य न्यायाधीश को जिम्मेदार ठहराया गया है. उनके इस कृत्य से देश के सर्वोच्च न्यायिक पद पर कलंक लगाने की कोशिश की गई है. जनता में अविश्वास, आक्रोश और अशांति की भावना भड़काने का प्रयास किया गया है।पत्र में कहा गया है कि इस तरह का निराधार आरोप न्यायपालिका की अखंडता और स्वतंत्रता पर गंभीर हमला है तथा यह न्यायालय की अवमानना अधिनियम, 1971 के तहत तत्काल और अनुकरणीय कानूनी जांच का पात्र है।

साथियों बात अगर हम कंटेंप्ट ऑफ़ कोर्ट की धाराओं को समझने की करें तो, धारा 15 (1) (ख) यह निर्दिष्ट करती है कि यदि किसी व्यक्ति के खिलाफ न्यायालय की अवमानना की कार्यवाही अधीनस्थ न्यायालय के निर्देश पर शुरू की गई है, तो उस निर्देश की प्रतिलिपि भी वकील ने अटॉर्नी जनरल को पत्र लिखकर सांसद के खिलाफ अदालत के प्रति आपराधिक अवमानना की कार्यवाही के लिए सम्मति प्रदान करने का आग्रह किया है।धारा 15 (1) (ख) न्यायालय की अवमानना अधिनियम, 1971 की एक महत्वपूर्ण धारा है जो अवमानना की कार्यवाही शुरू करने की प्रक्रिया को निर्दिष्ट करती है। यह सुनिश्चित करती है कि सभी पक्ष उचित रूप से अवगत हों और उन्हें न्यायसंगत प्रक्रिया प्राप्त हो।धारा 2 (सी) (आई) की व्याख्याःयह धारा यह बताती है कि कोई भी प्रकाशन या कार्य, चाहे वह शब्दों, संकेतों या के माध्यम से हो, जो न्यायालय को बदनाम करता है, दृश्यों या उसके अधिकार को कम करता है, या न्यायिक कार्यवाही में बाधा डालता है, या न्याय के प्रशासन में हस्तक्षेप करता है, वह आपराधिक अवमानना होगा.उदाहरणः(1)अदालत की कार्यवाही के दौरान हंगामा करना या गवाहों को डराना।(2) न्यायालय के आदेश का पालन न करना। (3) न्यायालय की कार्यवाही के बारे में गलत या भ्रामक जानकारी फैलाना, सजाःआपराधिक अवमानना के लिए सजा छह महीने तक की जेल और/या दो हजार रुपये तक का जुर्माना हो सकता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे किसुप्रीम कोर्ट के खिलाफ़ टिप्पणी से बवाल- सांसद बनाम सुप्रीम कोर्ट- अवमानना की गाज़ गिरनें की संभावना?क्या बड़े बयांन किसी रणनीति के तहत बैकिंग सपोर्ट से दिए जाते हैं?तीर निशाने पर नहीं लगा तो,निजी बयान बोलकर बेकिंग से किनारा?कंटेंप्ट ऑफ़ कोर्ट एक्ट 1971 की धारा 15(1)(बी) व अवमानना संबंधी सुप्रीम कोर्ट 1975 के नियम 3(सी) के तहत अटॉर्नी/सॉलिसिटर जनरल की सहमति से ही कार्रवाई शुरू होगी।

मारुति सुजुकी विटारा का सीएनजी वर्जन हुआ बंद, अब सिर्फ पेट्रोल और हाइब्रिड के साथ आएगी एसयूवी

परिवहन विशेष न्यूज

ग्रैंड विटारा सीएनजी बंद देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Maruti Suzuki की ओर से कई सेगमेंट और तकनीक के साथ कारों को ऑफर किया जाता है। निर्माता की ओर से मिड साइज एसयूवी सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Grand Vitara के CNG वर्जन को बंद कर दिया गया है। अब एसयूवी को किस तरह के इंजन विकल्प में ऑफर किया जाएगा। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत की प्रमुख वाहन निर्माता Maruti Suzuki की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों को ऑफर किया जाता है। निर्माता की ओर से हाल में ही अपनी कारों के दाम बढ़ाए गए थे। जिसके साथ ही कई मॉडल्स को अपडेट भी किया गया था। इसी क्रम में मारुति की मिड साइज एसयूवी Grand Vitara के सीएनजी वेरिएंट्स को हटा (Grand Vitara CNG Discontinued) दिया गया है। अब किस तरह के इंजन विकल्प के साथ एसयूवी को ऑफर किया जा रहा है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Maruti Grand Vitara के CNG वेरिएंट्स हुए बंद

मारुति सुजुकी की ओर से मिड साइज एसयूवी के तौर पर ग्रैंड विटारा को ऑफर किया जाता है। निर्माता की ओर से हाल में ही एसयूवी की कीमतों को अपडेट किया गया था। 8 अप्रैल 2025 को एसयूवी की कीमत में 41 हजार रुपये तक बढ़ाए गए थे। जिसके साथ ही एसयूवी के कुछ वेरिएंट्स को बंद कर दिया गया है। इसमें CNG के सभी वेरिएंट शामिल हैं। बंद करने से पहले एसयूवी के डेल्टा और जेटा वेरिएंट्स में सीएनजी को ऑफर किया जाता था।

मिलती थी 26.60 की माइलेज

Maruti Grand Vitara के सीएनजी वर्जन में भी 1.5 लीटर का इंजन दिया जाता था। जिससे एसयूवी को 88 पीएस की पावर और 122 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता था। इस इंजन के साथ एसयूवी को एक किलोग्राम सीएनजी में 26.60 किलोमीटर तक चलाया जा सकता था।

क्या है कारण

मारुति की ओर से ग्रैंड विटारा के सीएनजी वेरिएंट्स को बंद करने की औपचारिक जानकारी नहीं दी गई है। लेकिन मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक यह संभावना जताई जा रही है कि कम मांग के कारण मारुति की ओर से सीएनजी वेरिएंट्स को हटा दिया गया है।

पेट्रोल और हाइब्रिड तकनीक के साथ मिलेगी एसयूवी

मारुति ग्रैंड विटारा एसयूवी को अब सिर्फ पेट्रोल और स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड तकनीक (Grand Vitara petrol and hybrid variants) के साथ ही ऑफर किया जा रहा है। इस एसयूवी में 1.5 लीटर का ही पेट्रोल और स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड इंजन दिया जाता है। जिसके साथ मैनुअल और ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के विकल्प ऑफर किए जाते हैं।

कितनी है कीमत

मारुति ग्रैंड विटारा में नए फीचर्स जोड़ने के बाद अब इसकी कीमत को भी अपडेट किया गया है। एसयूवी को 11.42 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर खरीदा जा सकता है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 20.68 लाख रुपये रखी गई है। एसयूवी के अब कुल 18 वेरिएंट्स को ऑफर किया जा रहा है।

किनसे है मुकाबला

मारुति की ओर से ग्रैंड विटारा एसयूवी को चार मीटर से ज्यादा बड़ी एसयूवी सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Toyota Urban Cruiser Hyryder, Honda Elevate, Hyundai Creta, Kia Seltos, MG Astor जैसी एसयूवी के साथ होता है।

एमजी विंडसर ईवी के बेस वेरिएंट को है घर लाना, दो लाख रुपये की अग्रिम भुगतान के बाद जाएगी कितनी ईएमआई

परिवहन विशेष न्यूज

कार फाइनेंस प्लान JSW MG की ओर से EV सेगमेंट में MG Windsor EV को ऑफर किया जाता है। इसके बेस वेरिएंट को खरीदकर घर लाने का मन बना रहे हैं तो सिर्फ दो लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर EV सेगमेंट की गाड़ी को घर लाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। ब्रिटिश वाहन निर्माता JSW MG मोटर्स की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से ऑफर की जाने वाली MG Windsor EV को काफी पसंद किया जाता है। अगर आप भी इसे खरीदने का मन बना रहे हैं तो एक लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर इसे घर लाया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

MG Windsor EV Price

एमजी मोटर्स की ओर से Windsor EV के बेस वेरिएंट को 13.99 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर ऑफर किया जाता है। इसे दिल्ली में खरीदने पर ऑन रोड कीमत करीब 14.93 लाख रुपये हो जाती है। इस कीमत में 13.99 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत के अलावा करीब 6200 रुपये आरटीओ और इंश्योरेंस के करीब 74 हजार रुपये देने होंगे। इसके अलावा इसके लिए टीसीएस चार्ज के 13998 रुपये देने होंगे। जिसके बाद इसकी ऑन रोड कीमत 14.93 लाख रुपये हो जाती है।

दो लाख रुपये Down Payment के बाद कितनी EMI

अगर इस गाड़ी के बेस वेरिएंट को आप खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में दो लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 12.93 लाख रुपये की राशि को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको नौ फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 12.93 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने सिर्फ 20814 रुपये हर महीने की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

कितनी महंगी पड़ेगी कार

अगर आप नौ फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 12.93 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 20814 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप MG Windsor EV के लिए करीब 4.54 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आप कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 19.48 लाख रुपये देंगे।

किनसे होगा मुकाबला

JSW MG की ओर से Windsor EV को इलेक्ट्रिक गाड़ी के तौर पर लाया जाता है। बाजार में इसे कई एसयूवी से चुनौती मिलती है, लेकिन इसका सीधा मुकाबला Tata Curvv EV, Mahindra BE6 जैसी इलेक्ट्रिक एसयूवी के साथ होता है।

बाइक टैक्सी बैन पर IAMAI की अपील- उद्योग से सलाह लें और डेटा जमा करने की तारीख बढ़ाएं

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (IAMAI) ने कर्नाटक सरकार से अपील की है कि उन्हें अपने व्हीकल फ्लीट की जानकारी देने के लिए दो महीने की मोहलत दी जाए। IAMAI में Zomato, Swiggy, Ola, Uber और Rapido जैसी बड़ी डिजिटल कंपनियां शामिल हैं।

हाईकोर्ट के आदेश के बाद मचा हलचल

कर्नाटक हाई कोर्ट ने हाल ही में आदेश दिया था कि मई के मध्य तक राज्य में बाइक टैक्सी सेवाओं को सस्पेंड कर दिया जाए। और साथ ही सरकार को इन सेवाओं के लिए एक रेग्युलेटरी पॉलिसी भी तैयार करनी होगी। इस आदेश के बाद IAMAI ने राज्य के परिवहन विभाग के सचिव एनवी प्रसाद को एक चिट्ठी लिखी है।

'नीति बनाते वक्त हमें भी साथ बैठाया जाए'

IAMAI ने चिट्ठी में यह साफ कहा कि बाइक टैक्सी आज शहरी ट्रांसपोर्ट सिस्टम का अहम हिस्सा बन चुकी है और इस पर पॉलिसी बनाने से पहले सरकार को उद्योग से बातचीत जरूर करनी चाहिए। उन्होंने बताया कि बंगलूरू जैसे बड़े शहरों में लाखों लोग रोजाना बाइक टैक्सी का इस्तेमाल करते हैं। जिससे न सिर्फ ट्रैफिक की दिक्कत कम होती है, बल्कि हजारों गिग वर्कर्स की रोजी-रोटी भी इससे जुड़ी है।

सरकार से की संयुक्त कमेटी बनाने की मांग

IAMAI ने यह भी सुझाव दिया कि सरकार एक संयुक्त कमेटी बनाए, जिसमें परिवहन विभाग के अधिकारी, इंडस्ट्री के प्रतिनिधि और गिग वर्कर्स या बाइक टैक्सी यूनियन के सदस्य हों। इस तरह सबकी राय से एक ऐसी नीति बनाई जा सकती है जो संतुलित और सबके हित में हो।

पॉलिसी बनने तक मिले अस्थायी परमिट

IAMAI ने यह मांग भी की है कि जब तक नई नीति लागू नहीं होती, जो एग्रीगेटर कंपनियां सुरक्षा नियमों का पालन कर रही हैं, उन्हें अस्थायी परमिट दिया जाए। ताकि वे अपनी सेवाएं जारी रख सकें और लोगों को असुविधा न हो।

IAMAI ने दोहराया कि वे सरकार के साथ मिलकर एक संतुलित, न्यायसंगत और टिकाऊ रेग्युलेटरी फ्रेमवर्क तैयार करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं, जिससे आम जनता की सुविधा भी बनी रहे और गिग इकोनॉमी को भी नुकसान न पहुंचे।

सरकार की तरफ से अब तक कोई जवाब नहीं

फिलहाल कर्नाटक सरकार ने IAMAI की इस चिट्ठी का कोई आधिकारिक जवाब नहीं दिया है। लेकिन यह साफ है कि आने वाली नीति बाइक टैक्सी ऑपरेटरों और गिग वर्कर्स की आजीविका पर बड़ा असर डाल सकती है।

बार-बार नहीं देना होगा टोल टैक्स, एक ही बार में सालभर की हो जाएगी छुट्टी, फास्टैग पर नितिन गडकरी ला रहे नई पॉलिसी

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। देश में हजारों लोग रोजाना नेशनल हाइवे और एक्सप्रेस वे पर सफर करते हैं। इन पर सफर करने के लिए Toll Tax भी वसूल किया जाता है। बार बार टोल देने के कारण कई बार लोग परेशान भी हो जाते हैं। अब इसका समाधान केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय की ओर से किया जा रहा है। किस तरह से लोगों को राहत देने की बात कही जा रही है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

जल्द लागू होगी नई टोल नीति

केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय की ओर से देशभर में जल्द ही नई टोल नीति को लागू किया जा सकता है। जिससे टोल से संबंधित परेशानियों का समाधान हो सकता है। हालांकि अभी इस बारे में किसी भी तरह की आधिकारिक जानकारी नहीं दी गई है।

कैसे होगा समाधान

जानकारी के मुताबिक नई नीति में सरकार की ओर से लोगों को यह सुविधा दी जाएगी कि वह अपने Fastag को तीन हजार रुपये में रिचार्ज करवा सकते हैं, जिसके बाद अगले एक साल तक उनको किसी भी टोल प्लाजा पर टैक्स नहीं देना होगा। इस रिचार्ज के बाद वह असिमित संख्या में टोल प्लाजा पार कर सकते हैं। जिससे बार बार टोल प्लाजा पर टैक्स देने और मिनिमम बैलेंस रखने की परेशानी से छुटकारा मिल सकता है।

एक और विकल्प पर किया गया था विचार

रिपोर्ट्स के मुताबिक केंद्र सरकार की ओर से एक और विकल्प पर भी विचार किया गया था। जिसके मुताबिक नई कार खरीदने पर ही 30 हजार रुपये दिए जाएं तो अगले 15 सालों तक किसी भी टोल प्लाजा पर पेमेंट नहीं देनी होगी। लेकिन लाइफटाइम पास पर सभी पक्षों में सहमति नहीं बन पाई, जिस कारण इस विकल्प को छोड़ दिया गया।

किसे मिलेगा फायदा

सरकार की ओर से नई नीति के तहत तीन हजार रुपये के फॉर्मूले को लागू किया जाता है तो इसका सबसे ज्यादा फायदा ऐसे लोगों को होगा जो हर महीने एक शहर से दूसरे शहर जाने के लिए नेशनल हाइवे और एक्सप्रेस वे का उपयोग करते हैं।

कैसे होगी नुकसान की भरपाई

रिपोर्ट्स के मुताबिक सरकार की ओर से इस तरह के फैसले को लागू किया जाता है तो इसका नुकसान कंसेसनरों और कांट्रेक्टर्स को होगा। जिसकी भरपाई सरकार की ओर से एक खास फॉर्मूले के तहत की जाएगी। फॉर्मूले के तहत टोल प्लाजा से निकलने वाले वाहनों का डिजिटल रिकॉर्ड रखा जाएगा और कंसेसनर और कांट्रेक्टर्स के दावे और वास्तविक वसूली में जो अंतर मिलेगा उसकी भरपाई एक खास फॉर्मूले के साथ की जाएगी।

वोक्सवैगन टिगुआन आर लाइन हुई भारत में लॉन्च, फॉर्च्यूनर, ग्लोस्टर को मिलेगी चुनौती, कीमत 48.99 लाख रुपये से शुरू

परिवहन विशेष न्यूज

टिगुआन आर लाइन एसयूवी भारतीय बाजार में एसयूवी सेगमेंट के वाहनों को सबसे ज्यादा किया जाता है। जर्मनी की वाहन निर्माता Volkswagen की ओर से औपचारिक तौर पर देश में फुल साइज एसयूवी के तौर पर Tiguan R Line SUV को लॉन्च कर दिया गया है। इसमें किस तरह के फीचर्स मिलेंगे। कितना दमदार इंजन मिलेगा। किस कीमत पर इसे लॉन्च किया गया है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। जर्मनी की वाहन निर्माता Volkswagen की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से 14 April 2025 को औपचारिक तौर पर Volkswagen Tiguan R-Line को लॉन्च कर दिया गया है। इसमें किस तरह के फीचर्स दिए गए हैं। कितना दमदार इंजन दिया गया है। किस कीमत पर एसयूवी को खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च हुई Volkwagen Tiguan R-Line

फॉक्सवैगन की ओर से भारतीय बाजार में औपचारिक तौर पर Tiguan R-Line को लॉन्च कर दिया गया है। निर्माता की ओर से इसे फुल साइज एसयूवी सेगमेंट में लॉन्च किया गया है।

कितना दमदार इंजन

फॉक्सवैगन की ओर से तिगुआन आर-लाइन एसयूवी में दो लीटर की क्षमता का टीएसआई ईवो पेट्रोल इंजन दिया गया है। जिससे 204 पीएस की पावर और 320 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा। इसमें 7स्पीड डीएसजी ट्रांसमिशन को दिया गया है। इसके साथ ही इसमें 4मोशन ऑल व्हील ड्राइव क्षमता को दिया गया है, जिससे इसे किसी भी तरह की सड़क पर चलाया जा सकता है।

कैसे हैं फीचर्स

Volkswagen Tiguan R Line में निर्माता की ओर से कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया गया है। जिसमें 15 इंच का इंफोटेनमेंट सिस्टम स्क्रीन, वायरलेस एंड्राइड ऑटो, एपल कार प्ले, 10.25 इंच डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, आईडीए वॉयस असिस्टेंट, रोटरी कंट्रोलर के साथ स्क्रीन, आठ स्पीकर ऑडियो सिस्टम, हेड-अप डिस्प्ले, मल्टी जोन क्लाइमेट कंट्रोल, दो वायरलेस चार्जिंग पॉड, एंबिएंट लाइट, पैनोरमिक सनरूफ, मैट्रिक्स हेडलाइट, फ्रंट वेंटिलेटिड सीट, एलईडी डीआरएल, रूफ रेल जैसे फीचर्स को भी दिया गया है।

कैसे हैं सेफ्टी फीचर्स

एसयूवी में सुरक्षा का भी पूरा ध्यान रखा गया है। इसमें नौ एयरबैग, टीपीएमएस, हिल स्टार्ट असिस्ट और हिल डीसेंट कंट्रोल, फ्रंट और रियर में डिस्क ब्रेक, 21 फीचर्स के साथ Level 2 ADAS जैसे सेफ्टी फीचर्स को दिया गया है।

कितनी है कीमत

फॉक्सवैगन की ओर से एसयूवी को 48.99 लाख रुपये की इंट्रोडक्ट्री कीमत पर लॉन्च किया गया है। कुछ समय बाद इसकी कीमतों में बदलाव भी किया जा सकता है।

किनसे है मुकाबला

Volkswagen Tiguan R-Line एसयूवी को फुल साइज एसयूवी सेगमेंट में लॉन्च किया गया है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Toyota Fortuner, Legender, JSW MG Gloster और जल्द लॉन्च होने वाली Skoda Kodiaq से होगा।

फैमिली के साथ जाने के लिए बेस्ट हैं ये सात सीटों वाली MPV, कीमत 6.09 लाख रुपये से शुरू

परिवहन विशेष न्यूज

भारत में सर्वश्रेष्ठ एमपीवी अक्सर लोग अपने परिवार के साथ लंबी दूरी की यात्रा करना पसंद करते हैं। छोटी कार में पांच से ज्यादा लोगों के साथ सफर करने में परेशानी होती है। आप भी इस तरह अपने परिवार के साथ सफर करते हैं तो सात सीटों वाली MPV को किस कंपनी की ओर से ऑफर किया जाता है। किन विकल्पों पर आप विचार कर सकते हैं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में सड़कों की स्थिति में पिछले कुछ सालों में काफी सुधार हुआ है। जिस कारण लोग अब कार से भी लंबी दूरी की यात्रा करना पसंद करते हैं। कई लोग अपने बड़े परिवार के साथ भी कार से सफर करते हैं। अगर आप भी पांच से ज्यादा लोगों के साथ सफर करना चाहते हैं तो किस निर्माता की ओर से कौन सी सात सीटों वाली एमपीवी (7 Seater MPVs in India) को ऑफर किया जाता है। किस कीमत पर इनको खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Renault Triber MPV

भारतीय बाजार में सबसे सस्ती एमपीवी के तौर पर रेनो की ओर से ट्राइबर की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से इस गाड़ी में एक लीटर की क्षमता का पेट्रोल इंजन दिया जाता है। जिसमें कई बेहतरीन फीचर और सेफ्टी फीचर मिलते हैं। रेनो ट्राइबर एमपीवी की एक्स शोरूम कीमत 6.09 लाख रुपये से शुरू हो जाती है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 8.97 लाख रुपये तक है। रिपोर्ट्स के मुताबिक रेनो की ओर से जल्द ही इसके फेसलिफ्ट वर्जन को बाजार में पेश किया जा सकता है।

Maruti Ertiga है पसंदीदा एमपीवी

मारुति सुजुकी की ओर से एमपीवी सेगमेंट में अर्टिगा की बिक्री की जाती है। इस गाड़ी को भी 1.5 लीटर पेट्रोल और सीएनजी इंजन के विकल्प के साथ ऑफर किया जाता है। मारुति की यह गाड़ी अपने सेगमेंट में सबसे ज्यादा पसंद की जाने वाली एमपीवी है। इसकी एक्स शोरूम कीमत 8.96 लाख रुपये से शुरू होती है और इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 13.25 लाख रुपये है।

Kia Carens को भी किया जाता है पसंद

पेट्रोल के साथ ही डीजल इंजन को पसंद करने वालों को Kia की ओर से Carnes एमपीवी का विकल्प दिया जाता है। इस गाड़ी में 1.5 लीटर की क्षमता के पेट्रोल और डीजल इंजन दिए जाते हैं। इसमें नेचुरल एस्पिरेटिड के साथ ही टर्बो इंजन के विकल्प भी मिलते हैं। एमपीवी की एक्स शोरूम कीमत 10.59 लाख रुपये से लेकर 19.49 लाख रुपये के बीच है। रिपोर्ट्स के मुताबिक अगले कुछ महीनों के दौरान एमपीवी के फेसलिफ्ट को लॉन्च किया जा सकता है।

Toyota Rumion की भी है मांग

मारुति अर्टिगा की तरह ही डिजाइन वाली टोयोटा की एमपीवी Rumion को भी बाजार में ऑफर किया जाता है। इसमें भी 1.5 लीटर की क्षमता का नेचुरल एस्पिरेटिड और सीएनजी इंजन का विकल्प मिलता है। एमपीवी की एक्स शोरूम कीमत 10.54 लाख रुपये से लेकर 13.83 लाख रुपये के बीच है।

चिकित्सा विज्ञान का वरदान बन रहा अभिशाप

विजय गर्ग

बीसवीं सदी में प्लेग, हैजा, तपेदिक, डिप्थीरिया और निमोनिया जैसे असंख्य रोगों के आगे लाचार मानव जाति को एंटीबायोटिक्स ने नई आशा दी। यह विज्ञान का वह वरदान था, जिसने जीवन प्रत्याशा को बढ़ाया, नवजात शिशुओं की मृत्यु दर को घटाया और सर्जरी को सुरक्षित बनाया। परंतु आज, जब हम एंटीबायोटिक प्रतिरोध की वैश्विक महामारी के मुहाने पर खड़े हैं, तो हमें यह सोचने को विवश होना पड़ रहा है कि कहीं यह वरदान हमारे अपने ही हाथों एक अभिशाप में तो नहीं बदल गया है।

हाल ही में मर्डोक चिल्ड्रन रिसर्च इंस्टीट्यूट और क्लिंटन हेल्थ एक्सेस इनिशिएटिव द्वारा प्रकाशित एक अध्ययन में यह चौंकाने वाला राजफाश सामने आया है कि वर्ष 2022 में 30 लाख से अधिक बच्चों की मृत्यु ऐसे संक्रमणों के कारण हुई जो अब एंटीबायोटिक्स के प्रति प्रतिरोधी हो चुके हैं। यह आंकड़ा केवल मृत्यु का नहीं, बल्कि हमारी वैज्ञानिक मानसिकता के पतन का भी संकेत है।

रोगाणुरोधी प्रतिरोध का यह संकट दर्शाता है कि हमने विज्ञान को केवल त्वरित समाधान के रूप में अपनाया, न कि उसके दीर्घकालिक संदर्भों को समझा।

एएमआर तब पैदा होता है जब सूक्ष्मजीव जैसे बैक्टीरिया, वायरस, और फफूंद इस तरह से विकसित हो जाते हैं कि दवाएं उन पर असर नहीं करतीं। इसका प्रमुख कारण एंटीबायोटिक्स का अत्यधिक और अनुचित प्रयोग है - बिना चिकित्सकीय परामर्श के दवाइयां लेना, अधूरा इलाज छोड़ देना या मामूली लक्षणों पर भी इन दवाओं का उपयोग करना। कोविड महामारी ने इस प्रवृत्ति को और गहरा कर दिया। डर और अनिश्चितता के माहौल में एंटीबायोटिक्स का अंधाधुंध उपयोग हुआ, विशेषकर अस्पतालों में, जहां इन दवाओं को वायरस के संक्रमण पर भी दिया जाने लगा, जबकि वे वायरल बीमारियों पर असर नहीं करतीं।

इसका सबसे भयानक प्रभाव बच्चों पर पड़ा है, खासकर उन क्षेत्रों में जहां स्वास्थ्य सुविधाएं पहले से ही कमजोर हैं। अफ्रीका और दक्षिण-पूर्व एशिया में बच्चों की मृत्यु दर में असामान्य वृद्धि देखी गई है। इन क्षेत्रों में एक और दवाओं की गुणवत्ता और उपलब्धता की समस्या है, तो दूसरी और जागरूकता की कमी और अनियंत्रित औषधि वितरण ने समस्या को और विकराल बना दिया है। भारत में बिना चिकित्सक की सलाह के फार्मेसी से दवाइयां लेना आम बात है, जिससे गलत अधूरा इलाज होता है और बैक्टीरिया को प्रतिरोधी बनने का अवसर मिलता है।

इस संकट से निकलने का मार्ग भी विज्ञान के पास है, बशर्ते हम उसे विवेक और सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ अपनाएं। पहली आवश्यकता है नीतिगत स्तर पर एंटीबायोटिक्स के उपयोग पर कड़े नियंत्रण की। यदि हमने नीतियों में बदलाव नहीं किया, तो वह समय दूर नहीं जब साधारण संक्रमण भी जानलेवा बन जाएंगे और हम उसी अंधकार में लौट जाएंगे जहां से विज्ञान ने हमें निकाला था।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

जंजाल की जेलें

विजय गर्ग

दरअसल, जेल बनाने का मूल मकसद देशकाल, परिस्थिति, भावनात्मक उद्वेग या आपराधिक मनोवृत्ति से अपराध की दुनिया में कदम रखने वाले लोगों में सुधार लाना ही रहा है। जिससे भटके हुए लोग समाज की मुख्यधारा से अलग रहकर आत्ममंथन कर सकें। सजा का मकसद दंड के बजाय सुधार रहा है। लेकिन भारतीय जेलें जिस हाल में हैं, उससे यह मकसद पूरा होता नजर नहीं आता। निस्संदेह, देश में जेलें संकटग्रस्त हैं। ये सभ्य नागरिकों की राह से भटके लोगों को भेड़-बकरियों की तरह भरने वाले स्थानों जैसी हैं। इस बाबत इंडिया जस्टिस रिपोर्ट २०२५ कमोबेश इन्हीं स्थितियों का खुलासा करती है। वर्ष २०२२ तक 4.36 लाख कैदियों के रहने हेतु बनायी गई जेलों में 5.73 लाख कैदी बंद थे। जो निर्धारित से 131 फीसदी अधिक है। अनुमान है कि वर्ष २०30 तक जेलों में कैदियों की संख्या ६.६ लाख तक पहुंच सकती है। जो निर्धारित 5.15 लाख की अनुमानित क्षमता से कहीं अधिक होगी। निस्संदेह, यह संकट अनुमान से कहीं अधिक गहरा है। निश्चित रूप से इसे कैदियों के मानवाधिकार का आपातकाल कहा जा सकता है। लेकिन संकट सिर्फ भीड़भाड़ का ही नहीं है। विडंबना देखिए कि पूरी जेल आबादी के लिये सिर्फ २५ मनोचिकित्सक ही हैं। एक अनुमान के अनुसार वर्ष २०१२ के बाद कैदियों में मानसिक रोग दुगने आंके गए हैं। इनमें ज्यादातर वे कैदी हैं जो विचाराधीन हैं। जिनका अपराध तय नहीं हो पाया है। न्यायिक प्रक्रिया में विलंब की कीमत उन्हें चुकानी पड़ रही है। वहीं दूसरी ओर जेलों में चिकित्सा व्यवस्था का संकट भी उतना ही गहरा है। जेलों में चिकित्सा अधिकारियों के 43 फीसदी पद रिक्त पड़े हैं। यह व्यवस्थागत खामियों की ही तसवीर है कि देश की राजधानी में २०६ कैदियों पर एक चिकित्सक नियुक्त है। यही वजह है कि उचित देखभाल के अभाव में जेलों में तमाम कैदी मानसिक व शारीरिक कष्ट झेल रहे हैं। लेकिन इसके बावजूद इस गंभीर समस्या के समाधान के लिये गंभीर प्रयास नहीं हो रहे हैं।

निश्चित रूप से कैदियों के हितों की अनदेखी कोई नई बात नहीं है। देश की शीर्ष अदालत अकसर दीर्घकालीन जेल नियोजन की आवश्यकता पर बल देती रही है। लेकिन शासन-प्रशासन की कार्यवाही या तो धीमी है या फिर इन समस्याओं के प्रति उदासीन रवैया दर्शाया जाता है। जबकि कैदियों के मानवाधिकारों के मद्देनजर इस मामले में संवेदनशील रवैया अपनाया जाना चाहिए। इस समस्या का सबसे बड़ा संकट कर्मचारियों की भारी कमी भी है। विडंबना यह है कि कुछ क्षेत्रों में तो सुधारात्मक कार्यों के लिये स्वीकृत पदों पर रिक्तियां साठ फीसदी तक पहुंच गई हैं। उदाहरण के लिये दिल्ली की जेलें २५० फीसदी से अधिक क्षमता के साथ संचालित की जा रही हैं। एक विसंगति यह भी है कि इन जेलों में वंचित समाज और हाशिये पर गए वर्गों के लोगों की संख्या अधिक है। जो न्याय प्रणाली में गहराई तक जड़ जमा चुकी असमानता को ही दर्शाती है। वहीं दूसरी ओर इस संकट से निबटने के लिये जरूरी राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी नजर आती है। जैसा कि शीर्ष अदालत बार-बार विचाराधीन कैदियों के मुद्दे को प्राथमिकता के आधार पर संबोधित करने के निर्देश देती है, उस पर गंभीरता से अमल करने की जरूरत है। यदि फास्ट-ट्रैक कोर्ट और वैकल्पिक विवाद समाधान से विचाराधीन कैदियों की संख्या को कम कर दिया जाए, तो जेल व्यवस्था में बड़ा सुधार लाया जा सकता है। देश की जेलों में कैदियों की बढ़ती संख्या के अनुरूप बुनियादी ढांचे में तत्काल निवेश करने की जरूरत है। समाज के वंचित वर्गों के लिये सहज कानूनी सहायता उपलब्ध कराने की दिशा में भी कदम उठाने की आवश्यकता है। जेलों को लंबे समय तक सजा देने की जगह नहीं बनाया जाना चाहिए। जेल को सुधार का केंद्र बना रहना देना चाहिए। किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वहां कैदियों के साथ कितना सम्मानजनक व्यवहार किया जाता है। उनकी देखभाल के प्रति कितना संवेदनशील रवैया अपनाया जाता है। यदि हम ऐसा करते हैं तो हम उन पर कोई उपकार नहीं कर रहे होते हैं, बल्कि यह उनका संवैधानिक अधिकार है।

एक गणितज्ञ ने साहित्य में नोबेल पुरस्कार जीता ...

विजय गर्ग

स्पेनिश गणितज्ञ, नाटककार और राजनीतिज्ञ, 1904 में सिद्ध कवि फ्रेडेरिक मिस्ट्राल के साथ साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1854 से 1868 तक, उन्होंने मैड्रिड स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग में गणित और भौतिकी पढ़ाया, जहां वह 20 साल की उम्र में उच्चतम अंकों के साथ स्नातक करने वाले छात्र थे। 32 साल की उम्र में वह साहित्य के प्रति अपने जुनून की खेती करते हुए रियल एकेडेमिया डी लास सिएंसियस एक्सेक्टास का हिस्सा थे। उन्हें स्पेन में 19 वीं शताब्दी का सबसे महत्वपूर्ण गणितज्ञ माना जाता था, जो पहली बार माइकल चेसल्स की ज्यामिति, isvariste Galois के सिद्धांत, अण्डाकार कार्यों, और भौतिकी और गणित में उनके व्यक्तिगत योगदान के लिए पेश किया गया था, जिससे जूलियो रे पादरी कहते हैं कि, स्पेनिश गणित के लिए, 19 वीं शताब्दी 1865 में ईचेग्रे के साथ शुरू होती है। उन्होंने 1874 में शुरू होने वाले साहित्य के लिए खुद को समर्पित किया, जब उन्होंने ₹एल लिब्रो टैलोनारियो₹ के साथ शुरुआत की (हालांकि कुछ साल पहले, 1865 में उन्होंने लिखा था, बिना प्रकाशन के, ₹ला हिजा नेचुरल₹)। उनके उत्पादन में गद्य और गीत दोनों में साठ से अधिक नाटक शामिल हैं। पहले काम रोमांटिक उदासी से भरे होते हैं जबकि बाद वाले हेनरिक इब्सेन के काम के प्रभाव को महसूस करते हैं। उनके कार्यों को जनता द्वारा बहुत अच्छी तरह से प्राप्त किया गया था और 1904 में उन्हें साहित्य का नोबेल पुरस्कार दिया गया था। हालांकि, मैड्रिड के नाटककार को पुरस्कार प्रदान करने के बारे में गंभीर रूप से बात करने वाले मिगुएल डी उनामुनो और रूबेन डारियो सहित '98' की तथाकथित पीढ़ी के आलोचकों और प्रमुख वक्ताओं द्वारा इस तरह की प्रशंसा कभी साझा नहीं की गई। हालांकि, वह अपने समय में बहुत प्रसिद्ध थे और प्रतिष्ठित पदों पर थेः मैड्रिड के एटेनियो के अध्यक्ष (1888), रियल एकेडेमिया एस्पानोला (1896 से) के सदस्य, जीवन के लिए सीनेटर (1900 से) और, दो बार (1894-1896 और 1901-1916) अकादमी के अध्यक्ष सटीक, शारीरिक और प्राकृतिक विज्ञान। वैज्ञानिक काम करता है उन्होंने भौतिकी और गणित पर कई निबंध प्रकाशित किए, जिनमें से कुछ इस चेतावनी के साथ नीचे सूचीबद्ध हैं कि जोस एचेगारे का वैज्ञानिक उत्पादन उनकी मृत्यु तक जारी रहा x भिन्नता की गणना (1858) x फ्लैट ज्यामिति समस्याएं (1865) विश्लेषणात्मक ज्यामिति समस्याएं (1865), गार्सिया डी गैल्डेनो द्वारा एक उत्कृष्ट कृति मानी जाती हैं x भौतिकी के आधुनिक सिद्धांत (1867) x उच्च ज्यामिति का परिचय (1867), जहां चेसल्स ज्यामिति को उजागर करता है। x निर्धारक (1868) के सिद्धांत पर स्मृति, इस विषय पर स्पेन में पहला काम x ट्रेटाडो एलिमेंटल डी टर्मोडिनामिका (1868), विज्ञान पर लघु निबंध जो तब उभर रहा था साहित्यिक ओपेरा x एवेंजर की पत्नी (1874) x तलवार की मुट्ठी में (1875) x पागलपन या पवित्रता (1876) x एल ग्रैन गैलोटो (1881) x मारियाना (1892) x डॉन जुआन का बेटा (1892) x दाग जो साफ करता है (1895) x भगवान का पागल आदमी (1900)

कहानी:कांच

विजय गर्ग

बचपन में मैं कुछ अधिक ही शरारती था। सब कहते थे, 'बड़ा ही दुष्ट है।' पल भर के लिए भी मैं आराम से नहीं बैठता। मेरी मां कहा करती थीं, 'इसी को लेकर मैं हमेशा परेशान रहती हूं। सारा दिन नाक में दम किए रहता है। मुझे पल भर के लिए भी शांति नहीं मिलती।'

मैं यह नहीं कहता कि भला लड़का बनने का प्रयास नहीं करता था। किताब-कॉपियां लेकर बैठता, परंतु ज़रा भी मन नहीं लगता। पढ़ते-लिखते समय ही दिमाग न जाने कहां-कहां भटकने लग जाता। नील गगन में नीलू की पतंग उड़ती दिखाई देने लगती, समीप के मैदान में प्रताप और गोपाल गुल्ली-डंडा खेलते नज़र आते। इसमें भला मेरे मस्तिष्क का क्या दोष?

उन दिनों हम एक अत्यंत पुराने घर में रहते थे। घर के दो हिस्से थे—बाहरी और अंदरूनी। उनमें कई कमरे थे। एक लंबा-चौड़ा बरामदा भी था। तीन मंज़िले मकान की छत बहुत बड़ी थी। मन करता तो फुटबॉल भी खेल लेते। आसपास के दो कमरे ऐसे थे, जिनमें कोई एकांत में रहना चाहे तो रह सकता था। एक कमरे में मेरी बड़ी बहन के कई किस्म के खिलौने थे—बड़ी गुड़िया, छोटी गुड़िया। वह अपनी सहेलियों के साथ शाम को जाकर वहां खेलती और मैं बीच-बीच में उनके पास जाकर शरारतें करता। बहन तब अपनी सहेलियों से कहती, 'देखो, मेरे भाई की बंदर जैसी हरकतें।' दीदी मुझे बंदर कहती तो मुझे बहुत अच्छा लगता। मेरी दुष्टता और धृष्टता पर दीदी को भी शायद मज़ा आता। कभी-कभार हमारी खूब लड़ाई भी होती। तब दीदी कहती, 'देखना, जब मैं कहीं चली जाऊंगी तब तुम्हारे होश ठिकाने आएंगे। तब कौन तुम्हें गर्मियों की छुट्टियों में अचार बनाकर खिलाएगा, देखूंगी।'

हर रोज़ रात को घर में कुरुक्षेत्र कांड हो जाता। पिताजी दफ्तर से लौटकर मुझे पढ़ने बिठाते। सारा दिन की भागदौड़ के कारण तब मेरी आंखें बोझिल होतीं। जो कुछ जानता था, वह भी अक्सर भूल जाता। पिताजी बार-बार संख्याओं को जोड़ने के लिए देते। कोई भी उत्तर सही नहीं होता। 'वीक' की स्पेलिंग हमेशा ग़लत होती। सप्ताह के लिए 'कमज़ोर' और कमज़ोर के लिए 'सप्ताह' लिख बैठता। तब वे माताजी को बुलाकर पूछते, 'सारा दिन दोपहर में तुम करती क्या रहती हो? लड़के पर बिल्कुल ध्यान नहीं देती क्या?'

तब मां दिन भर की मेरी सारी गतिविधियां उनके सामने रख देतीं—कि इसने यह किया, वह किया। तब पिताजी गंभीर मुद्रा में उठकर लंबे बरामदे में टहलने लगते और चिंता व्यक्त करते, 'नहीं, हो नहीं पाया। कुछ भी तो नहीं हो सका। फेल्योर, फेल्योर।' रात को खाने बैठते तो कहते, 'पुलाव खाकर भी क्या होगा अगर बेटा कुछ बन नहीं पाए।'

इतना कुछ होने के बावजूद मुझ पर इसका कोई असर नहीं होता। रात को आराम से निद्रा देवी की गोद में सो जाता। फिर दीदी आकर धीरे से कहती, 'चलो, चलकर कुछ खा लो। आइंदा से ज़रा ध्यान से पढ़ना। तुम्हें जब भला-बुरा कहा जाता है तो मुझे तनिक भी अच्छा नहीं लगता।' कभी-कभार दीदी मुझे अपने हाथों से ही खिला दिया करती।

इसी तरह समय बीतते-बीतते गर्मी की छुट्टियां आ गईं। एक दिन दोपहर को सभी सो रहे थे। मैं भी मां के बगल में लेटा हुआ था। दीदी कुछ दिनों के लिए मामा के घर गई हुई थीं। लेटे-लेटे मैं उठ खड़ा हुआ। सोकर समय नष्ट करना उचित नहीं। मैं जिस कमरे में था, उसके बगल के कमरे से एक टेनिस बॉल लेकर अपनी करामात दिखाने लगा। अभी से अभ्यास न किया जाए तो बड़े होकर पेले जैसा खिलाड़ी कैसे बन पाऊंगा? पिताजी ही तो कहते थे कि साधना से ही सिद्धि प्राप्त होती है।

शुरू में सावधानी से ही सब कुछ करता रहा। फिर अत्यंत उत्तेजना में एक शॉट दे मारा और इसके साथ ही पिताजी की पुस्तकों की अलमारी का शीशा चकनाचूर हो गया। बगल के कमरे से मां दौड़कर आईं और मुझ पर दो हाथ जमा दिए। मुझे उनका मारना उचित ही लगा, परंतु पिताजी ने यह कह रखा था कि कभी इसके साथ मारपीट मत करना। इसका डर चला जाएगा। भले दूसरी कोई सज़ा दे देना।

मां मुझे खींचते हुए छत वाले कमरे में ले गईं और मुझे अंदर धकियाते हुए बाहर से दरवाजे की कुंडी बंद कर दी। कहा, 'अब यहीं रहो, जब तक तुम्हारे पिताजी आ नहीं जाते। कुछ ज़्यादा ही दिमाग ख़राब हो गया तुम्हारा। निर्जला उपवास में रहो।'

धूप चारों ओर से बरस रही थी। दोपहर के नीले आकाश में कई चील उड़ रहे थे। खिड़की के पास बैठा मैं बोझिल मन के साथ बैठा रहा। पिताजी का मैं बहुत आदर करता हूं। अलमारी का सारा कांच टूटकर बिखर गया था। अन्याय हो गया था मुझसे। न जाने मुझमें कब अक्ल आएगी। यही सब सोचे जा रहा था। गर्मी बहुत अधिक थी। ज़रा भी हवा नहीं थी। पेड़ के एक भी पत्ते हिल नहीं रहे थे। आख़िरकार थोड़ी ही देर में मुझे नींद आ ही गई।

कुछ समय बाद ऐसा लगा कि किसी ने मेरे शरीर पर हाथ रखा हो। मैं हड़बड़ाकर उठ बैठा। सामने ही खड़े थे पिताजी। आसमान में उस समय भी दिन की अंतिम धूप मौजूद थी। मैं डर से सहम गया। पिताजी की ओर देखा तो वे हंस रहे थे। कहीं सपना तो नहीं देख रहा? दरवाज़े की ओर देखा तो वह अधखुला था। तब मैंने उनसे अचरज से पूछा, 'पिताजी, आज आप इतनी जल्दी आ गए?' उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। वे हंसते जा रहे थे। बस हंसते जा रहे थे। मैंने कहा, 'पिताजी, मैंने सारा कांच तोड़ दिया। मैंने बहुत अन्याय किया है।'

वे तब भी मुस्कुरा रहे थे। चेहरे पर ज़रा भी क्रोध नहीं। तब मैं उनके पांव छूने के लिए आगे बढ़ा, परंतु वहां कोई नहीं था। कमरा खाली पड़ा था, दरवाज़ा आधा खुला। गर्मी की शाम की तेज़ हवा चली। मैं डर से कांप उठा। अवश्य ही कोई सपना था। जब थोड़ी हिम्मत जुटी तो तेजी से नीचे आया। देखा, मां रसोई में पके मटर की सब्ज़ी—घूघनी—बना रही थीं। मुझे देखकर आश्चर्य से पूछा, 'कैसे बाहर आए? दरवाज़ा किसने खोला?'

पिताजी को घूघनी बहुत पसंद थी, इसलिए मां बना रही थीं। कांच टूटने पर एक बड़ा कांड हो जाने के बाद घूघनी ही आकर परिस्थिति को संभाल लेगी। मैंने मां को सारी घटना सुनाई।

'तुम्हारे पिताजी आ गए? कहां हैं?'

'दरवाज़ा तो उन्होंने ही खोला।'

'परंतु मुख्य द्वार के मेरे न खोलने पर वे अंदर आएंगे कैसे?'

सारे घर में खोजबीन शुरू हुई। पिताजी के पढ़ने के कमरे, शयनकक्ष, पूजाघर, बाथरूम। अलगनी में देखा। वहां पिताजी के दफ्तर के उतरे कपड़े नहीं थे। घर लौटकर जो पोशाक पहनते हैं, वे भी तह करके रखे हुए थे।

तब हम बगल के घर में जाकर पिताजी के दफ्तर में फोन करने गए। किसी अधिकारी से मां ने बात की तो पता चला कि वह बहुत पहले से साइट पर गए हुए हैं, यानी कि उलुबेड़िया। वहां कंपनी की नई फैक्टरी बन रही है।

मां ने उनसे प्रार्थना की, 'कृपया आप ज़रा पता कीजिए। मुझे लग रहा है, जैसे कुछ हुआ हो।'

फोन नंबर उन्हें दे दिया गया। हम टेलीफोन को घेरे बैठे रहे। बहुत देर तक बैठे रहे। उधर मां की घूघनी जलकर राख हो चुकी थी। तकरीबन घंटे बाद फोन आया। कंस्ट्रक्शन साइट में एक लोहे का बीम क्रेन को तोड़कर पिताजी के सिर पर गिरा था। यह हादसा साढ़े चार बजे के करीब हुआ था।

मैं ऐसा मूर्ख ठहरा कि उस समाचार को सुनने के बाद भी मां से कहा, 'जानती हो, मैंने कांच तोड़ डाला है, यह जानते हुए भी पिताजी तनिक भी क्रोधित नहीं हुए। बस मुस्कुरा रहे थे।'

उस समय मेरी उम्र आठ वर्ष की थी। आज अस्सी का हूं। मैंने उसके बाद आज तक कुछ नहीं तोड़ा—न कांच, न संपर्क, न परिवार, न जीवन। पिताजी का वह मुस्कुराता चेहरा कभी धूमिल न हो जाए, यही प्रयत्न मैंने हमेशा किया है।

'एक गर्म लहर बना देती है आगे के लिए भी आधार

विजय गर्ग

जलवायु परिवर्तन का असर दुनियाभर में लोगों को परेशान कर रहा है। चरम मौसमी घटनाओं के कारण कई तरह की आपदाएं आए दिन सामने आती हैं। इसलिए इसका पैटर्न समझने की कोशिश की जा रही है। इस क्रम में आइआइटी बांबे और जर्मनी के जोहान्स रटेनबर्ग यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं की एक टीम ने इस बात की पड़ताल की है कि मार्च और अप्रैल 2022 के दौरान दक्षिण एशिया में एक के बाद एक अत्यधिक गर्मी की क्यों पड़ी। भारत और पाकिस्तान सहित पूरे क्षेत्र में उस समय के लिए तापमान असाधारण स्तर पर पहुंच गया, जो लगातार औसत से 3-8 डिग्री सेल्सियस अधिक था। गर्म मौसम की लंबी अवधि मई में भी जारी रही। इस संबंध में हुए इस अध्ययन में बताया गया है कि एक हीटवेव (गर्म लहर या लू की स्थिति) वातावरण में अगले हीटवेव के लिए अनुकूल स्थितियां पैदा कर सकती है, जिससे एक सिलसिला चल पड़ता है। और फिर गर्मी का मौसम लंबा खिंचने की संभावना बन सकती है।

शोधकर्ताओं ने कहा कि : जर्नल आफ जियोफिजिकल रिसर्च एटमास्फियर में प्रकाशित अध्ययन के निष्कर्षो में शोधकर्ताओं ने बताया है कि यह एक ₹चिंताजनक पैटर्न₹ दिखाता है, जिसके अनुसार अगली हीटवेव अधिक तीव्र होती है। पहली हीटवेव की अत्यधिक गर्मी मिट्टी से नमी को हटा देती है, जिससे यह सूख जाती है। अत्यधिक सूखापन वायुमंडलीय प्रक्रियाओं के एक चक्र को चालू कर सकता है, जिससे अगली अवधि और भी खराब हो सकती है।

अध्ययन की सह-लेखिका आइआइटी बांबे की एसोसिएट प्रोफेसर अर्पिता मंडल के मुताबिक, जब मिट्टी में नमी होती है तो साफ आसमान की स्थिति में सूर्य की कुछ ऊर्जा हवा को गर्म करने के बजाय उस नमी को वाष्पित करने में चली जाती है। लेकिन जब मिट्टी पहले से ही सूखी होती है तो वह सारी ऊर्जा सीधे हवा को गर्म करने में लगती है। मार्च और अप्रैल की हीटवेव की तुलना करते हुए टीम ने पाया कि प्रत्येक हीटवेव एक अलग वायुमंडलीय प्रक्रिया द्वारा संचालित थी। पहली उच्च ऊंचाई पर हवाओं द्वारा और दूसरी शुष्क मिट्टी की स्थिति द्वारा, जो पूर्व के परिणामस्वरूप बनी थी। अध्ययन के प्रमुख लेखक आइआइटी बांबे के रोशन झा का कहना है कि हमारा विश्लेषण दिखाता है कि मार्च की हीटवेव मुख्य रूप से अल्पकालिक वायुमंडलीय रास्बी तरंगों के आयाम में अचानक वृद्धि से जुड़ी थी, जो उच्च ऊंचाई वाली हवाओं में बड़े पैमाने पर घुमावदार हैं, जो घुमावदार नदी में मोड़ की तरह हैं। आगे लहरें और अधिक शक्तिशाली हो गईं, क्योंकि ध्रुवों के निकट उच्च ऊंचाई वाली पश्चिमी हवाओं (एक्स्ट्राट्रापिकल जेट स्ट्रीम) ने ऊर्जा को भूमध्य रेखा के निकट आने वाली पश्चिमी हवाओं (सबट्रापिकल जेट स्ट्रीम) में स्थानांतरित कर दिया, क्योंकि वे हीटवेव के दौरान करीब आ गई।

हालांकि, अप्रैल की गर्मी की लहर अलग तरह से शुरू हुई, जो मुख्य रूप से बहुत शुष्क मिट्टी की स्थिति और पाकिस्तान और अफगानिस्तान के उत्तर- पश्चिमी भूमि क्षेत्रों से भारत में गर्मी के आने के कारण हुई। शोधकर्ताओं का कहना है कि ये शुष्क परिस्थितियां आंशिक रूप से मार्च की पिछली गर्मी की लहर से बनी थीं, जिसने पहले ही उच्च तापमान और साफ आसमान के कारण भूमि को सुखा दिया था।

₹अध्ययन के निष्कर्ष संकेत देते हैं कि भूमध्य रेखा की और एनर्जी ट्रांसफर के साथ वेबगाइड इंटरैक्शन मार्च में शुरुआती गर्मी को बढ़ाता है, जिसके बाद मिट्टी की नमी के स्तर को कम करके अगले हफ्तों में और अधिक गर्मी के लिए आधार तैयार होता है। आइआइटी बांबे के चेयर प्रोफेसर सुबिमल घोष का कहना है कि हाल के दिनों में गर्म भविष्य के अधिक निश्चित होने के साथ हवा के पैटर्न प्रभावित होते रहते हैं और इन परिवर्तनों की पहचान करने से भविष्य की गर्मी की लहरों के प्रभावों का बेहतर अनुमान लगाने और उन्हें कम करने में मदद मिलती है। दक्षिण एशिया में अत्यधिक गर्मी की घटनाओं का पूर्वानुमान लगाने और उनके लिए तैयार रहने की हमारी क्षमता में सुधार के लिए इन तंत्रों को समझना महत्वपूर्ण है। एन्वायर्नमेंटल रिसर्च क्लाइमेट नामक जर्नल में 2023 में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, मार्च और अप्रैल 2022 में हुई अत्यधिक गर्मी की घटनाओं के 100 वर्षों में एक बार होने की संभावना है तथा जलवायु परिवर्तन के कारण इन घटनाओं की संभावना 30 गुना अधिक हो गई है।

विनाश के पाँच तोप: शिक्षा से तहसील तक

शिक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा, थाना और तहसील जैसे पाँच संस्थानों की विफलता गंभीर चिंता का विषय है। शिक्षा अब ज्ञान नहीं, कोचिंग और फीस का बाजार बन चुकी है। स्वास्थ्य सेवाएँ निजीकरण की भेंट चढ़ चुकी हैं, जहाँ इलाज से ज्यादा पैकेज बिकते हैं। चिकित्सा व्यवस्था मुनाफाखोरी का अड्डा बन गई है। थाने न्याय की जगह रिश्वत का केंद्र और तहसील एक कागज़ी भूलभुलैया बनकर रह गई है। इन संस्थाओं को सुधारने की जरूरत हैं।

-प्रियंका सौरभ

**"शिक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा, थाने औ तहसील। सब मिलकर ताबूत में, ठोंक रहे हैं कील।।"

यह दो पंक्तियाँ महज़ अलंकार नहीं, बल्कि उस निराशा का संगीन उद्घोष हैं, जो आम आदमी की उम्मीदों को कुचलकर उसे निराशा की चुम्बक बनाती हैं। ये पाँच स्तंभों से हमारा समाज अपनी नाज़ुक मिट्टी का संतुलन बनाये रखता है — पर, अफ़सोस, वे स्वयं पत्थर बन चुके हैं।

शिक्षा: जहाँ विद्या बिक रही है

बचपन से हमें सिखाया गया कि शिक्षा से इंसान का चरित्र बनता है। पर अब चरित्र कहीं बिकता नहीं, बल्कि कोचिंग सेंटर की दीवारों पर टंगा पाया जाता है। दसवीं बोर्ड हो या मेडिकल प्रवेश, सवाल योग्यता का नहीं, पक्षपात और सिफ़ारिश का होता है। वर्दीधारी शिक्षक उस जादुई इकाई में बदल चुके हैं, जहाँ से विद्वता कम, फीस वसूली ज़्यादा जरूरी है। स्मार्ट क्लासरूम में धूल जमी पाठ्यपुस्तकें नहीं, बल्कि अभिभावकों के कष्ट होते हैं। एनआईटी का सपना देखता छात्र, एनपीए (नॉन-परफ़ॉर्मिंग असेट) बन जाता है, क्योंकि रोजगारदाता अब 'डिग्री' नहीं, 'प्रैक्टिकल स्किल्स' मांगते हैं — जिन्हें हासिल करने का रास्ता फीस के अतिरिक्त टेस्ट में दिक्कतें है।

वह कोचिंग सेंटर जहाँ प्रवेश परीक्षा की तैयारी होती थी, वह अब नक़दी की परीक्षा लेता है। हर साल लाखों अभिभावक 'अब्ज़ॉर्ब' हो जाते हैं — एक कोचिंग सेंटर की माला में पिरोकर, दूसरा सेंटर की रस्सी से लटका दिए जाते हैं। नतीजा? शिक्षा की किरणें फीकी पड़ चुकी हैं।

स्वास्थ्य: सेवा नहीं, सेवा शुल्क

स्वास्थ्य सेवा का नाम सुनते ही सरकारी अस्पतालों के मरघट जैसे माहौल की याद ताज़ा हो जाती है। जहाँ प्रतीक्षा कक्ष में पंखे हवा नहीं, बल्कि बीमारी फैलाने की तैयारी करते हैं। डॉक्टर गिनती में कम, प्राइवेट विभागीकरण में ज़्यादा। मरीज तो बस एक 'कैश-काउंटर' बन कर रह गया है।

निजी अस्पतालों ने बीमार ग्राहक को 'लक्षित बाजार' मान लिया है। जांच-परीक्षण, एमआरआई, सर्जरी — सब कुछ पैकेज में बिका जाता है। एक छोटी सी खांसी के लिए भी प्रोसिज़र चार्ज लगता है, जबकि कमरे में बिताई एक रात का बिल हृदयाघात से कम नहीं। अगर ग़रीब मौत को गले लगा लेता है, तो उसे सकुशल ताबूत में अंतिम यात्रा के लिए भी केवल 'शव-परिवहन शुल्क' अदा करना होता है।

एक मरीज की ज़िद्दी साँसें किसी को नहीं रुलाती; केवल उसका बिल रुलाता है। डॉक्टर अब जीवनदायी गुंजन नहीं, जीवनदायी इनकम-रसीद बन गए हैं। चिकित्सकीय कौशल की जगह, बीमा कंपनी के क्रेडेंशियल्स की कीमत पर सौदा होता है। और जब बीमारी हिम्मत हार जाती है, तो अस्पताल भी 'फ्री डिस्चार्ज' का विज्ञापन ऑफ़र कर देता है — ग़रीबों के आखिरी 'मोक्ष' का प्रचार।

चिकित्सा: इलाज नहीं, मर्ज का मॉल

चिकित्सा शब्द का अर्थ होता है बीमारी का निवारण, पर अब मिक्स-फेक्स का बाज़ार सजीव हो गया है। जनरल प्रैक्टिशनर अब बहुराष्ट्रीय फार्मास्युटिकल कंपनियों के एजेंट की भूमिका निभाते हैं। हर खांसी पर टेबलेट, हर दर्द पर इंजेक्शन; मर्ज मायाजाल बनता चला जाता है।

बिना एमआरआई या सीटी—स्कैन के कोई डॉक्टर अब मर्ज का अंदाज़ा नहीं लगाता। कटघरे में तब मरीज आता है, जब उसकी जेब से दवा का डिब्बा गायब हो जाता है। जॉइंट पेन के इंजेक्शन से 'मेरुदण्ड का व्यापार' फल-फूल रहा है, और किडनी ट्रांसप्लांट का 'वॉर रूम' हड्डियों की चिमत्कार कर रहा है। हर दिन नए मर्ज की लिस्ट एप्रूवल के लिए सीईओ के टेबल पर जमा होती है। यहाँ तक कि आयुर्वेद और यूनानी भी 'लक्ज़री-ब्रांडेड' काउंटर में बिकने लगे हैं। प्रभावी हर्बल फ़ॉर्मूलों की जगह, चाय-पत्ती का ढेर और 'SUV के चक्के' तुल्य कीमतों में दवा बिक रही है। मरीज तो बस 'फलता प्रमाणपत्र' बन कर रह जाता है, जिसकी असली कीमत उसे तब पता चलती है, जब वह बैंक शाखा में 'सुसाइड नोट' लिखने बैठता है।

थाने: न्याय नहीं, नोट छापने की मशीन

हमारी कल्पना में पुलिस 'न्याय का प्रहरी' थी, पर अब वह 'प्रहार का दूत' बन चुकी है। थानों में धूल नहीं, बल्कि रिश्वत का आयोजन होता है। मोल-भाव के बाद मुकदमा दर्ज होता है या ठुकरा दिया जाता है। शिकायतकर्ता को पहले परमिशन लेनी पड़ती है — और यदि रुपये नहीं दिए, तो परमिशन के साथ 'ख़ामोशी' भी थमा दी जाती है।

मारुति गाड़ी से टकरा भी जाओ, तो कोर्ट-कचहरी की झकझोराहट से पहले चार्जशीट का पेपर वसूली होती है। फास्ट-ट्रैक की जगह, फास्ट-पेमेंट ट्रैकिंग सिस्टम चालू हो गया है। भारी भरकम बजट मिलने के बावजूद, पुलिस स्टेशन का एकमात्र फ़ंड 'मुझबक्कों की रकम' बन चुका है। इंसान इतना छोटा हो गया है कि दर्ज शिकायत से पहले उसका 'राशन कार्ड' पूछा जाता है।

केस फ़ास्ट-ट्रैक की हकीकत
एफआईआर के लिए रिश्वत
बरी होने के लिए और रिश्वत
डीटेंशन में खाने के लिए रिश्वत

और जब इंसाफ़ नसीब हो, तब भी वह 'याचिका शुल्क' में डूबकर मर जाता है। एक बार पुलिस की अक्षुण्ण मशीन में फँस गए तो पत्ते नहीं, रुपए उड़ते हैं।

तहसील: लोकतंत्र का कागज़ी जंगल

तहसील एक ऐसा महल है, जहाँ दस्तावेज़ों की भीड़ में इंसान गुम सा हो जाता है। भूमि का बंटवारा हो या जाति-प्रमाण-पत्र, हर चीज़ के लिए 'पर्ची' की महफ़िल सजती है। सरकारी स्टांप पेपर, ई-सिग्नेचर, ऑनलाइन पोर्टल — सब आधुनिकता के नाम पर जंजाल हैं।

कागज़ी जंगल में सफ़र करते हुए, आदमी भूल जाता है कि उसका मकान है या कागज़ों का 'ब्रोकरेज'। लैंड रजिस्ट्रेशन के लिए लाइन में पसीना सुखता है, लेकिन 'कमेटी शुल्क' नहीं सूखता। जाति प्रमाण पत्र के लिए 'बैकडेटेड' दस्तावेज़ों का जादूगर हीरो बन जाता है। एक भूल से दस्तावेज़ रद्द, और फिर 'नया दस्तावेज़' यानी नया बिल।

यहाँ 'नवाचार' नाम पर फ्लिपकार्ट-पोशाक की तरह 'डिजिटल इमेजिंग' बिक रही है — पर असल में मोबाइल पर मैसेज चेक कराते-कराते आदमी की आत्मा सूख जाती है। 'ऑनलाइन आवेदन' में करंसी के बजाय 'क्रेडिट कार्ड' रोल करता है। और जो भारी-भरकम फीस भरता है, वही असली 'अदालत' में दर्शक बनकर रह जाता है।

कब बदलेंगी कीलें?

ये पाँचों स्तंभ, जो हमारे विश्वास के आधार थे, आज ताबूत की कीलें बन चुके हैं। हर समाज में विकार होते हैं, पर जहाँ विकार व्यवस्था की आत्मा बन जाए, वहाँ परिवर्तन की पुकार गूँज उठती है। पर क्या हमारी पुकार चुप्पी तोड़ पाएगी?

हमारी ज़िम्मेदारी है:

शिक्षा के निजी कोचिंग मॉल के बजाय सामुदायिक ज्ञान-केन्द्रों का निर्माण करें।
स्वास्थ्य सेवाओं को मुनाफ़े के बजाय मानवता के सिद्धांत पर पुनर्निर्मित करें।
चिकित्सा व्यावसायीकरण को विनियमन के जरिए रोके—लाभ का नहीं, इलाज का मानदंड बनाए।
पुलिस सुधार अधिनियमों को लागू करें—न्याय के प्रहरी को रिश्वत की मशीन न बनने दें।
तहसील और प्रशासनिक सेवाओं में पारदर्शिता लाकर 'कागज़ी जंगल' को 'सुनहरे बग़ीचे' में बदल दें।

तब तक तक़दीर की ठोकरें चलेंगी, पर हम खेती की कलम से अंकुरित करेंगे न्याय, सेवा और गरिमा के बीज। तभी शायद ये कीलें ताबूत से जुदा हों, और देश की आत्मा फिर से फड़फड़ाए।

-प्रियंका सौरभ
आज़ाद विचारों की पैरोकार

दोस्त ही अपना होता है।

'वही सच्चा साथी होता है,
जो दु:ख-सुख में साथ दे
जो एक-दूसरे का कभी भी साथ ना छोड़े,
क्योंकि दोस्त ही हमारा अपना होता है।

उसकी दोस्ती सच्ची,
जो अपने दोस्तों को कभी नहीं भूलता
दो जिस्म जरूर होते हैं, पर एक जान हैं,
वही हमारा सच्चा दोस्त जो अपना होता है।

रिश्ते तो बहुत हैं दुनिया में,
दोस्ती के आगे सब बेरंग
दोस्त और उसकी दोस्ती रंगों का आसमान,
वही हमारा सच्चा दोस्त जो अपना होता है।

दुनिया के हैं अलबेले रास्ते,
उतार-चढ़ाव है ज़िंदगी
इस भंवर में जो साथ दे वही दोस्ती,
क्योंकि हमारा सच्चा दोस्त जो अपना होता है।

कृष्ण-सुदामा की वह पक्की दोस्ती,
जो जीवन के हर एक पल में याद रहती है
दोस्त कोई भी हो, दोस्ती हमेशा साथ रहती है,
क्योंकि हमारा सच्चा दोस्त जो अपना होता है॥

हरिहर सिंह चौहान जबरी बाग़ नसिया इन्दौर

उ.फ़ ये गर्मी, आओ करें बात शरबत की।

गर्मियों के मौसम में ठंडक पाने के लिए शरबत एक अच्छा विकल्प है। यहाँ कुछ बेहतरीन शरबत बनाने के तरीके दिए गए हैं।

1. पुदीने का शरबत।पुदीने की पत्तियां, चीनी, नींबू का रस, पानी, बनाने का तरीका, पुदीने की पत्तियों को पानी में उबालें, फिर छान लें और चीनी और नींबू का रस मिलाएं। ठंडा होने पर परोसें।

2.तरबूज का शरबत। तरबूज़ का रस, चीनी, पानी, पुदीने की पत्तियां

बनाने का तरीका, तरबूज का रस निकालें और चीनी और पानी मिलाएं। पुदीने की पत्तियां डालकर ठंडा करें और परोसें।

3. गुलाब का शरबत,

गुलाब की पंखुड़ियां, चीनी, पानी, नींबू का रस

गुलाब की पंखुड़ियों को पानी में उबालें, फिर छान लें और चीनी और नींबू का रस मिलाएं। ठंडा होने पर परोसें।

4. खीरे का शरबत, खीरा, चीनी, पानी, पुदीने की पत्तियां,

बनाने का तरीका, खीरे का रस निकालें और चीनी और पानी मिलाएं। पुदीने की पत्तियां डालकर ठंडा करें और परोसें।

इन शरबतों को बनाकर आप गर्मियों के मौसम में ठंडक पा सकते हैं।

शरबत में दही, रंग, आइसक्रीम और सूखे मेवे भी मिलाए जाएं तो क्या बात है।आप शरबत में दही मिला सकते हैं और यह एक अच्छा विकल्प हो सकता है। दही मिलाने से शरबत को एक क्रीमी और ठंडक देने वाला स्वाद मिल सकता है।आप शरबत में दही मिलाने के लिए निम्नलिखित तरीकों का पालन कर सकते हैं।

शरबत में दही मिलाकर ब्लेंड करें और फिर परोसें।

दही को शरबत के ऊपर परोसने से पहले डालें और फिर सूखे मेवे और आइसक्रीम डालें।

आप शरबत में रंग मिलाने के लिए निम्नलिखित तरीकों का पालन कर सकते हैं।

प्राकृतिक रंग जैसे कि बीटरूट (चुकंदर), या पुदीने का उपयोग कर सकते हैं।

रंग को शरबत में मिलाने से पहले थोड़े पानी में घोल लें और फिर शरबत में मिलाएं।

आप शरबत में आइसक्रीम और सूखे मेवे मिलाने के लिए निम्नलिखित तरीकों का पालन कर सकते हैं, आइसक्रीम को शरबत के ऊपर परोसने से पहले डालें।सूखे मेवे जैसे कि बादाम, काजू, या पिस्ता को शरबत के ऊपर परोसने से पहले डालें।आप शरबत में दही, आइसक्रीम और सूखे मेवे मिलाकर एक स्वादिष्ट और ठंडक देने वाला पेय बना सकते हैं।आप शरबत के स्वाद और रंग को बदलने के लिए विभिन्न फलों और मसालों का उपयोग कर सकते हैं।

चुकंदर का शरबत बनाने की विधि।

2-3 चुकंदर
1 कप चीनी
1 लीटर पानी
1 नींबू का रस
पुदीने की पत्तियां (वैकल्पिक)

1. चुकंदर को उबालकर या कच्चा पीसकर उसका रस निकालें।
2. एक बड़े पैन में पानी और चीनी मिलाकर उबालें।
3. चीनी घुलने के बाद इसमें चुकंदर का रस और नींबू का रस मिलाएं।
4. अच्छी तरह मिलाकर ठंडा करें।
5. परोसने से पहले पुदीने की पत्तियां डालें और बर्फ के साथ परोसें।

यह शरबत स्वास्थ्यवर्धक और स्वादिष्ट होता है, और गर्मियों में ठंडक प्रदान करता है।

डॉ मुश्ताक अहमद, शाह
सहज हरदा मध्यप्रदेश

[प्रसंगवश — 22 अप्रैल: विश्व पृथ्वी दिवस]
पृथ्वी दिवस: प्रकृति के साथ एक नई शुरुआत का संकल्प

धरती की पुकार आज हर दिल तक पहुँच रही है। उसके जंगल आग की लपटों में सुलग रहे हैं, नदियाँ सिसकियों में सूख रही हैं, और हवा, जो कभी जीवन की ताजगी थी, अब ज़हर बन चुकी है। यह धरती—हमारा एकमात्र आश्रय—हमसे सवाल कर रही है: हमने उसे क्या दिया, जिसने हमें अनमोल जीवन, शुद्ध जल, और हरियाली की गोद दी? विश्व पृथ्वी दिवस, जो हर साल 22 अप्रैल को मनाया जाता है, केवल एक दिन नहीं, बल्कि एक जागृति का आलम है। यह वह क्षण है जब हमें रुकना होगा, अपने कर्मों पर विचार करना होगा, और उस ग्रह की रक्षा के लिए कदम उठाना होगा, जिसने हमें सब कुछ दिया। यह दिन हमें याद दिलाता है कि हम धरती के मालिक नहीं, बल्कि इसके रखवाले हैं। इसका स्वास्थ्य ही हमारी आने वाली पीढ़ियों का भविष्य है।

1970 में अमेरिकी सीनेटर गेलॉर्ड नेल्सन ने पर्यावरणीय तबाही के खिलाफ एक क्रांतिकारी कदम उठाया। उस दौर में औद्योगिक प्रगति ने प्रकृति का बेरहमी से दोहन किया था। कारखानों का धुआँ आकाश को ढँक रहा था, नदियाँ रसायनों से जहरीली हो रही थीं, और प्राकृतिक संसाधनों की लूट मानवता को विनाश की ओर धकेल रही थी। 22 अप्रैल 1970 को पहले पृथ्वी दिवस में दो करोड़ लोगों ने हिस्सा लिया। यह एक ऐतिहासिक पल था, जिसने पर्यावरण संरक्षण की वैश्विक चेतना को जागृत किया। इस आंदोलन ने अमेरिका में स्वच्छ वायु अधिनियम (1970) और स्वच्छ जल अधिनियम (1972) जैसे कानूनों को जन्म दिया। आज 193 से अधिक देश इस दिन को मनाते हैं, जो इसे दुनिया का सबसे बड़ा धर्मनिरपेक्ष उत्सव बनाता है। यह दिन हमें अतीत की गलतियों से सीखने और भविष्य को संवारने की प्रेरणा देता है।

धरती आज अभूतपूर्व संकटों से गुजर रही है। संयुक्त राष्ट्र की 2023 की जलवायु रिपोर्ट चेतावनी देती है कि यदि तुरंत कार्रवाई न हुई, तो 2050 तक वैश्विक तापमान 2.7 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ सकता है। इसके परिणामस्वरूप सूखा, बाढ़, और तूफान 30% अधिक तीव्र और बार-बार होंगे। जैव विविधता का ह्रास भी भयावह है—10 लाख प्रजातियाँ विलुप्ति के कगार पर हैं। समुद्र का स्तर 2100 तक 1 मीटर तक बढ़ सकता है, जिससे कोलकाता, मुंबई जैसे तटीय शहर डूबने के खतरे में हैं। प्लास्टिक प्रदूषण ने स्थिति को और गंभीर किया है। हर साल 400 मिलियन टन प्लास्टिक उत्पादित होता है, जिसमें से 14 मिलियन टन समुद्रों में पहुँचता है, जो समुद्री जीवन और मानव खाद्य श्रृंखला को नष्ट कर रहा है। भारत में स्थिति चिंताजनक है—गंगा और यमुना जैसी नदियाँ 70% तक प्रदूषित हैं, और दिल्ली का वायु गुणवत्ता सूचकांक अक्सर 300 से ऊपर रहता है, जो "खतरनाक" स्तर है। ये आँकड़े हमें बताते हैं कि अब और देर नहीं की जा सकती।

पृथ्वी दिवस केवल सामूहिक अभियानों का दिन नहीं है; यह हमारी जीवनशैली को बदलने का अवसर है। यह हमें मजबूर करता है कि हम अपनी आदतों पर सवाल उठाएँ। छोटे-छोटे कदम बड़े बदलाव की नींव रख सकते हैं। मसलन, एक रीयूजेबल बोतल अपनाने से हर व्यक्ति सालाना 156 प्लास्टिक बोतलों का कचरा रोक सकता है। एक पेड़ अपने जीवनकाल में 48 पाउंड कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है। अगर भारत का हर नागरिक एक पेड़ लगाए, तो 1.4 अरब पेड़ जलवायु परिवर्तन से लड़ सकते हैं। एलईडी बल्ब इस्तेमाल करने से 50% तक बिजली बचेगी। 5 मिनट की छोटी शॉवर से 10 गैलन पानी की बचत हो सकती है। ये कदम न केवल पर्यावरण की रक्षा करते हैं, बल्कि हमारे संसाधनों को भी संरक्षित करते हैं।

पृथ्वी दिवस की सबसे बड़ी ताकत यह है कि यह हर व्यक्ति को बदलाव का हिस्सा बनने का मौका देता है। स्कूलों में बच्चे पौधे रोपते हैं, युवा साइकिल रैलियों में उत्साह दिखाते हैं, और समुदाय कचरा प्रबंधन में जुटते हैं। लेकिन बदलाव केवल बाहरी प्रयासों तक सीमित नहीं है। यह हमारी रोजमर्रा की आदतों में झलकना चाहिए। कपड़े का थैला अपनाना, बिजली बचाना, पानी का दुरुपयोग रोकना, या कार पूलिंग जैसे कदम सामूहिक रूप से धरती के लिए चमत्कार कर सकते हैं। भारत में स्वच्छ गंगा मिशन, 2030 तक 50% नवीकरणीय ऊर्जा का लक्ष्य, और 2070 तक नेट-जीरो उत्सर्जन का संकल्प जैसे प्रयास प्रेरणा देते हैं। पृथ्वी दिवस हमें इन पहलों का हिस्सा बनने और स्थानीय स्तर पर बदलाव लाने का आह्वान करता है।

यह दिन हमें एक गहरे नैतिक दायित्व की याद दिलाता है। धरती हमारी माता है, और उसकी रक्षा हमारा कर्तव्य। हमने उससे शुद्ध हवा, पानी, और उपजाऊ मिट्टी जैसे अनमोल उपहार लिए, लेकिन बदले में उसे प्रदूषण, कचरा, और विनाश दिया। पृथ्वी दिवस हमें सिखाता है कि हमें उपभोक्ता नहीं, संरक्षक बनना होगा। यह सोच केवल 22 अप्रैल तक सीमित नहीं रहनी चाहिए; इसे हमारी जीवनशैली का हिस्सा बनना होगा। हर निर्णय—चाहे वह खरीदारी हो, यात्रा हो, या भोजन हो—धरती के स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर लेना होगा। बेवजह बिजली जलाना या कचरे को बिना छाँटे फेंकना जैसे छोटे-छोटे काम धरती पर भारी बोझ डालते हैं।

पृथ्वी दिवस की असली ताकत इसकी वैश्विक एकता में है। यह वह दिन है जब अमीर-गरीब, विकसित और विकासशील देश एक साझा लक्ष्य के लिए एकजुट होते हैं। 2016 का पेरिस समझौता, जिसमें 196 देशों ने जलवायु परिवर्तन से लड़ने का वादा किया, इसी एकता का प्रतीक है। लेकिन यह एकता केवल नीतियों और समझौतों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए; इसे हर व्यक्ति के दिल और दिमाग में उतरना होगा। धरती हमारी साझा विरासत है, और इसे बचाना हमारी साझा जिम्मेदारी। अगर हम आज चुप रहे, तो कल की पीढ़ियाँ हमें कभी माफ नहीं करेंगी। वे एक ऐसी धरती पर जीने को मजबूर होंगी जहाँ शुद्ध हवा, पानी, और हरियाली दुर्लभ होंगे।

वर्तमान में धरती की हालत चिंताजनक है। ग्लेशियर पिघल रहे हैं, समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है, और चरम मौसमी घटनाएँ बढ़ रही हैं। भारत जैसे देश में, जहाँ जनसंख्या का दबाव और औद्योगिक विकास पर्यावरणीय चुनौतियों को और जटिल बनाते हैं, पृथ्वी दिवस का महत्व और बढ़ जाता है। फिर भी, भारत ने राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन और 2030 तक कार्बन उत्सर्जन कम करने का संकल्प जैसे कदम उठाए हैं। यह दिन हमें इन प्रयासों में हिस्सेदार बनने की प्रेरणा देता है। पृथ्वी दिवस हमें सिखाता है कि धरती का हर प्राणी, हर पेड़, और हर नदी हमारे जीवन का हिस्सा है। हमारा अस्तित्व प्रकृति के साथ संतुलन में ही संभव है। यह दिन एक संकल्प लेने का अवसर है—कि हम अपने दैनिक जीवन में पर्यावरण के प्रति जागरूक रहेंगे। धरती ने हमें जीवन का अनमोल उपहार दिया है; अब हमारी बारी है कि हम उसे प्यार, देखभाल, और सम्मान लौटाएँ। आइए, इस पृथ्वी दिवस पर वादा करें कि हम वह बदलाव बनेंगे जो धरती को फिर से हरा-भरा और जीवंत बनाएगा। क्योंकि धरती बचेगी, तभी हम बचेंगे।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत",
बड़वानी (मप्र)

मनुष्य और प्रकृति का रिश्ता है शाश्वत !

हाल ही में जम्मू-कश्मीर में बादल फट जाने से बहुत तबाही मची।सच तो यह है कि प्रकृति समय-समय पर मानव को अपना प्रकोप दिखा रही है और कहीं न कहीं मानव को आगाह कर रही है कि अभी भी यदि हमने अपने पर्यावरण और प्रकृति पर ध्यान नहीं दिया तो आने वाले समय में हमें और भी अधिक प्राकृतिक प्रकोपों का सामना करना पड़ सकता है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार हाल ही में रामबन जिले के सेरी बागना इलाके में 20 अप्रैल को सुबह बारिश के बाद बादल फटने से 3 लोगों की मौत हो गई। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक पुलिस ने करीब 100 लोगों को रेस्क्यू किया। बादल फटने की इस दुखद घटना (तीन लोगों की मौत पर) पर उपराज्यपाल मनोज सिन्हा और मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने गहरा दुख व्यक्त किया है। उपमुख्यमंत्री सुरिंदर चौधरी स्थिति का जायजा लेने के लिए प्रभावित इलाकों का दौरा कर रहे हैं।नेशनल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष फारूक अब्दुल्ला ने सरकार से प्रभावित परिवारों को पर्याप्त राहत प्रदान करने के लिए केंद्र से वित्तीय सहायता का अनुरोध करने की बात कही है। बहरहाल, जानकारी के अनुसार जम्मू-कश्मीर में की दिनों से बारिश हो रही है और बादल फटने से अचानक बाढ़ आने के कारण पहाड़ का मलबा गांव की तरफ आ गया, जिसकी चपेट में कई लोग और घर आ गए। किश्तवाड़ में तो पूरा पहाड़ दरक गया बताया जा रहा है।जानकारी के अनुसार रामबन जिले के बनिहाल इलाके में कई जगह लैंडस्लाइड (भूस्खलन) हुई हैं। इसके कारण जम्मू-श्रीनगर नेशनल हाईवे बंद कर दिया गया है। बताया जा रहा है कि बारिश व लैंडस्लाइड के कारण सैकड़ों वाहन फंसे हुए हैं और किश्तवाड़-पद्दर मार्ग भी बंद बताया जा रहा है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार यहां वाहनों की आवाजाही रोक दी गई है और अधिकारियों ने मौसम साफ होने के बाद ही हाईवे पर सफर करने की अपील की है। पाठक जानते होंगे कि भूकंप, बाढ़, चक्रवात, ज्वालामुखी विस्फोट, भूस्खलन, सूखा, हिमस्खलन, ओलावृष्टि, और तूफ़ान जैसी घटनाएं प्राकृतिक प्रकोप या आपदाओं के अंतर्गत आतीं हैं। इससे हमारे पर्यावरण, हमारी पारिस्थितिकी, मानव को तो नुकसान होता ही है, ऐसी घटनाओं से आर्थिक नुकसान भी पहुंचता है। स्वास्थ्य सेवाओं पर भी प्राकृतिक आपदाओं के कारण दबाव बढ़ता है। हालांकि, प्रकृति का मनुष्य के पास आज भी कोई तोड़ नहीं है और हम प्रकृति का कभी सामना नहीं कर सकते हैं। प्रकृति के प्रकोपों के लिए कहीं न कहीं हम मानव ही कहीं न कहीं जिम्मेदार हैं। वास्तव में हमें यह चाहिए कि हम किसी भी हाल और परिस्थितियों में प्रकृति से छेड़छाड़ नहीं करें ,क्योंकि प्रकृति मनुष्य के साथ ही धरती के सभी जीव-जंतुओं के लिए बहुत अहम और महत्वपूर्ण है। पाठक जानते हैं कि प्रकृति से हमें भोजन, पानी, दवा, ईंधन, आश्रय, और ऑक्सीजन प्राप्त होती है।सच तो यह है किप्रकृति के बिना हमारा अस्तित्व नहीं रह सकता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि 'दश कूप समा वापी, दशवापी समोह्नद्रः। दशह्नद समः पुत्रों, दशपुत्रो समो द्रमुः।।' इसका भावार्थ यह है कि एक पेड़ दस कुओं के बराबर, एक तालाब दस सीढ़ी के कुएं के बराबर, एक बेटा दस तालाब के बराबर, एक पेड़ दस बेटों के बराबर होता है। बहरहाल, यह प्रकृति ही के कारण है कि इस धरती पर हमारा, जीव-जंतुओं और वनस्पतियों का अस्तित्व संभव है। आज मनुष्य अपने स्वार्थों और लालच के चलते प्राकृतिक संसाधनों का असीमित और अंधाधुंध दोहन कर रहा है। दूसरे शब्दों में कहें तो प्राकृतिक संसाधनों का संयमी इस्तेमाल करना बहुत जरूरी है। प्रकृति में संसाधनों की कमी नहीं है, यदि हम इनका विवेकपूर्ण तरीके से और संयमी इस्तेमाल करें। आज हम कहने को तो प्रकृति के प्रति जागरूक हैं, लेकिन सच तो यह है कि हम लगातार खनन, पेड़ों की कटाई, पानी व खनिज संसाधनों का दोहन करने में लगे हैं। विकास के नाम पर हमने प्रकृति को आज कहीं का नहीं छोड़ा है। आज अंधाधुंध प्रदूषण (मिट्टी, वायु, जल) फैलाया जाता है, लेकिन इसको ढंग से प्रबंधित नहीं किया जाता है। जीवाश्म ईंधन जलाया जाता है, जैसा कि आबादी बढ़ने के साथ ही इसमें अभूतपूर्व वृद्धि हुई है, हालांकि आज जीवाश्म ईंधन को कम करने के लिए इलैक्ट्रिक वाहनों और अन्य ईंधनों पर जोर दिया जा रहा है, लेकिन हमें प्रकृति संरक्षण के लिए और अधिक आगे बढ़कर काम करने की आवश्यकता है।सच तो यह है कि आज मानव को जरूरत इस बात की है कि वह प्रकृति से नाता जोड़ें और लालच और स्वार्थ से नाता तोड़े। वास्तव में हम मनुष्यों ने आज पर्यावरण और प्रकृति का बहुत बड़ा नुकसान किया है। कहना ग़लत नहीं होगा कि अंधाधुंध विकास ने हमारे पूरे प्राकृतिक चक्र को बिगाड़ कर रख दिया है।हम जल, जंगल और जमीन का संरक्षण कृतसंकल्पित होकर नहीं कर पा रहे हैं। हमारी भारतीय संस्कृति में शुरू से ही प्रकृति और पर्यावरण को विशेष महत्त्व दिया गया है और यहां तक कहा गया है कि 'माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः' अर्थात यह पृथ्वी ही हमारी माता है और हम सभी देशवासी इस धरा की संतान हैं। हमारी भारतीय संस्कृति में वृक्षों, जल, वायु, अग्नि, नदियों, समुद्र, और धरती को पूज्य माना गया है। आज कुंआ, सरोकार, तालाब, झीलें, जोहड़ पहले की तुलना में कम रह गये हैं, उनका पुनरूद्धार नहीं हो पा रहा है। वास्तव में, आज पर्यावरणीय समस्याओं को हल करने के लिए सामूहिक और व्यापक-आधारित कार्रवाई की ज़रूरत है। इतना ही नहीं, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक सीमाओं के पार लोगों को शामिल करने वाले संरक्षण प्रयासों की ज़रूरत है। आज जरूरत इस बात की है कि हम प्रकृति के प्रति संवेदनशील और जागरूक बनें। हमें वृक्षों का संरक्षण और संवर्धन करना होगा। बहरहाल, यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि आज हमने अंधाधुंध विकास को ही सब कुछ मान लिया है, जिसका परिणाम हमारे सामने है। आज धरती का तापमान लगातार बढ़ रहा है, प्रदूषण के बारे में तो कहना ही क्या ? हमने नदियों के जल को पानी या विद्युत स्रोत मान कर उनका दोहन किया। नदियों को प्रदूषण का केंद्र बना डाला है। मिट्टी, वायु प्रदूषित हो चुके हैं। हम फसलों के अवशेषों को जलाते हैं। सार्वजनिक वाहनों का प्रयोग कम करते हैं। अंधाधुंध निर्माण कार्य कर रहे हैं। वास्तव में पहले के जमाने में हमारा प्राकृतिक दुनिया के प्रति गहन सम्मान था और हम पारिस्थितिकीय परस्पर निर्भरता के प्रति जागरूक थे, शायद आज उतने जागरूक और संवेदनशील हम नहीं रहे, क्यों कि इसमें हमारा स्वार्थ और लालच आड़े आ गया है।हम प्रकृति से सबकुछ छीन कर अपनी गोदी में भर लेना चाहते हैं। वास्तव में आज जरूरत इस बात की है कि आज हम मानव समाजों के साथ-साथ पर्यावरण के अस्तित्व और कल्याण की गारंटी पर कृतसंकल्पित होकर ईमानदारी से काम करें। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि जम्मू-कश्मीर में जो तबाही आई है, उसके लिए कहीं न कहीं स्थानीय प्रशासन, वन विभाग और जिला प्रशासन की लापरवाही, मिलीभगत या भ्रष्टाचार को जिम्मेदार माना जा सकता है। वास्तव में, आज हमारा समाज इतना लालची व स्वार्थी हो गया है कि इसे अपनी आने वाली पीढ़ियों की भी कोई परवाह नहीं रह गई है। आज हम प्रकृति को संरक्षित नहीं कर पा रहे हैं। क्या यह हमारे की विडंबना नहीं है कि आज हमारे देश में गोचर भूमि ,वन भूमि पर अत्यधिक अतिक्रमण हो रहे है। वहां कंक्रीट की दीवारें (आवासीय भवन) खड़े किए जा रहे है। आज पशु-पक्षियों, पेड़ों , वनस्पतियों की अनेक जातियाँ लुप्त होती जा रही हैं। हमारे जल स्त्रोत आज कचरादान बनते जा रहे है। रिसाइकिल (पुनर्चक्रण) की ठोस व्यवस्थाएं नहीं हैं। प्लास्टिक प्रदूषण ने इस धरती का बेड़ा गर्क करके रख दिया है। जिन नदियों को हम मातृवत पूजते रहे हैं, अब उनमें कल-कारखानों का प्रदूषित जल (रासायनिक व गंदा जल) प्रवाहित हो रहा है। पर्यावरण संरक्षण को लेकर आज हमारी पुरातन परम्पराएं और रीति-रिवाज समाप्त प्रायः हो गये है। वर्तमान सभ्यता (पाश्चात्य संस्कृति) और भौतिकता की विषबेल इतनी फलित हो गई हैं कि इसने हमारे देश की समग्र संस्कृति को खत्म प्रायः सा कर दिया है। पाश्चात्य संस्कृति हम सब पर हावी होती चली जा रही है। वास्तव में आज हम सब यह भूल चुके हैं कि 'पर्यावरणनाशेन, नश्यन्ति सर्वजन्तवः।पवनः दुष्टतां याति, प्रकृतिर्विकृतायते।' अर्थात पर्यावरण के प्रदूषित होने से सभी प्राणी नष्ट हो जाते हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि 'शाश्वतम्, प्रकृति-मानव-सङ्गतम्, सङ्गतं खलु शाश्वतम्।तत्त्व-सर्वं धारकं सत्त्व-पालन-कारकं वारि-वायु-व्योम-वह्नि-ज्या-गतम्। शाश्वतम्, प्रकृति-मानव-सङ्गतम्।।' इसका तात्पर्य यह है कि प्रकृति और मनुष्य के बीच का संबंध शाश्वत है।यह रिश्ता शाश्वत है।जल, वायु, आकाश के सभी तत्व, अग्नि और पृथ्वी वास्तव में धारक हैं और जीवों के पालनहार। बहरहाल, पर्वतीय राज्यों उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश के बाद अब जब जम्मू-कश्मीर में तबाही आई है, तो इसमें कोई हैरान होने की बात नहीं है , बल्कि आज हमें इस बात की चिंता करने की जरूरत है कि आखिर हम कब तक प्रवृति से खिलवाड़ करके अपने जीवन को संकट में डालते रहेंगे। अंत में यही कहूंगा कि मानव और प्रकृति का रिश्ता एक अटूट रिश्ता है। मसलन, सूर्य धरती के समस्त जीवों और वनस्पतियों के जीवन का स्त्रोत है, यह धरती हम सभी का घर है, वायु प्राणशक्ति की संचालक है, और जल जीवन का असली आधार है।प्रकृति हमें निःस्वार्थ भाव से सब कुछ देती है, वैसे ही हमारा भी कर्तव्य है कि हम प्रकृति के प्रति कृतज्ञ रहें और उसकी रक्षा करें।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

ओडिशा में जाति आधारित जनगणना और पिछड़े वर्गों के संवैधानिक अधिकार , सामाजिक न्याय के लिए आंदोलन का आह्वान

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर : ओडिशा की राजनीतिक स्थिति और दोगली सरकार की विफलता ने राज्य के लोगों को अभिभूत कर दिया है। इस संदर्भ में, समाजवादी पार्टी ओडिशा, राज्य समिति ने ओडिशा के पिछड़े, हाशिए पर और अल्पसंख्यक समुदायों के अधिकारों और संवैधानिक अधिकारों के लिए अपना रुख स्पष्ट किया है। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के 17 तारीख के ओडिशा दौरे के बाद ओडिशा के पिछड़े वर्गों, दलितों, आदिवासियों और अल्पसंख्यक समुदायों के लिए सामाजिक न्याय का द्वार खुल गया है और राज्य में राजनीतिक तूफान खड़ा हो गया है।

कई वर्षों तक पार्टी के ओडिशा अध्यक्ष रहे पूर्व अध्यक्ष की पार्टी विरोधी गतिविधियों और लालची रवैये के कारण पार्टी का संगठन कमजोर हो गया था। इसका पता चलने पर राष्ट्रीय अध्यक्ष ने पूर्व अध्यक्ष को पार्टी से निष्कासित कर दिया। उन्हें पार्टी फंड हड़पने के आरोप में नोटिस भी दिया गया है और कानूनी कार्रवाई चल रही है। तथा नये अध्यक्ष शिव हाथी के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी ओडिशा में अपने संगठन को मजबूत करेगी, यह बात राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने ओडिशा दौरे के दौरान स्पष्ट कर दी है। इसलिए पार्टी अध्यक्ष बदलने के बारे में मीडिया में प्रसारित की जा रही खबरें पूरी तरह से निराधार और झूठी हैं।

ओडिशा की जनता जानती है कि लंबे समय तक कांग्रेस और बीजद ओडिशा में सत्ता में रही और तथाकथित नेताओं ने कभी भी ओबीसी के हितों की बात नहीं की। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि जिन लोगों ने केन्द्रीय व राज्य मंत्री रहते हुए पिछड़े वर्गों के हितों की अनदेखी की और अपने हितों को साधा, वे अब सत्ता से बाहर होने के बाद खुद को पिछड़े वर्गों का हितैषी बता रहे हैं।

समाजवादी पार्टी डी.ए.: राम मनोहर लोहिया, अम्बेडकर और मुलायम सिंह यादव के आदर्शों पर बनी एक अनुशासित पार्टी, जो पिछड़े वर्गों के संवैधानिक अधिकारों के संघर्ष से उभरी है।

ओडिशा के वर्तमान राजनीतिक माहौल में कुछ नेताओं द्वारा खुद को पिछड़े वर्गों का हिमायती बताकर राज्य की जनता को गुमराह करने के प्रयास निरर्थक हैं। साथ ही, यदि किसी अन्य राजनीतिक दल का नेता समाजवादी पार्टी का समर्थक बनना चाहता है तो समाजवादी पार्टी उसका स्वागत करेगी।

ओडिशा में जाति आधारित जनगणना और सामाजिक न्याय के लिए समाजवादी पार्टी जमीनी स्तर से अपनी सांगठनिक स्थिति को मजबूत करेगी और आगामी 2027 के पंचायत चुनाव में समाजवादी पार्टी ओडिशा प्रदेश अध्यक्ष श्री शिव हाथी यादव के नेतृत्व में पूरे ओडिशा से अपने उम्मीदवार उतारेगी। ओडिशा की डबल इंजन सरकार ने पिछले 11 महीनों में ओडिशा के खनन, जल और विभिन्न सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों को विभिन्न निजी कंपनियों को हस्तांतरित करके ओडिशा की अर्थव्यवस्था को लूट लिया है। समाजवादी पार्टी इसका कड़ा विरोध करती है। इसी प्रकार, समाजवादी पार्टी राज्य समिति मांग करती है कि मंडल आयोग की रिपोर्ट के अनुसार ओडिशा में पिछड़े वर्गों के लिए त्रिस्तरीय पंचायत राज चुनाव, शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में 27 प्रतिशत आरक्षण लागू किया जाए।

ओडिशा पर कई वर्षों तक उच्च वर्गों का शासन रहा है। जिन्होंने कभी भी पिछड़े वर्गों के हितों के लिए कोई कदम नहीं उठाया। अब अपनी राजनीतिक स्थिति मजबूत करने के लिए पिछड़े वर्गों के हितों की लड़ाई का आह्वान करना उनके लिए एक साजिश और मजाक है। समाजवादी पार्टी ओडिशा राज्य समिति, ओडिशा के शिव हाथी के नेतृत्व में, 54% ओबीसी या पिछड़े वर्गों के संवैधानिक अधिकारों और सामाजिक न्याय के लिए अपना संघर्ष जारी रखेगी। इसके साथ ही जाति जनगणना को कानूनी प्रक्रिया में बदलने के लिए राज्यव्यापी आंदोलन किया जाएगा, जिसमें बड़ी संख्या में शामिल लोगों की भागीदारी होगी। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के ओडिशा दौरे के बाद प. समाजवादी पार्टी का दृढ़ निश्चय है कि डीए समीकरण की राजनीति में नया मानक स्थापित करेगी।

प्रधानमंत्री के हाथों पी एम पुरस्कार से नवाजे गये रविशंकर शुक्ला

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

सरायकेला। झारखंड के सरायकेला खरसावां जिले के गम्हरिया प्रखंड को आकांक्षी प्रखंड कार्यक्रम श्रेणी में लोक प्रशासन में उत्कृष्टता के लिए उन्नत पाया गया है ।इसी बाबत नीति आयोग की प्रधानमंत्री पुरस्कार सरायकेला खरसांवां के उपायुक्त रविशंकर शुक्ला ने आज दिल्ली जाकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हाथों ग्रहण किया ।

आज सिविल सेवा दिवस समारोह में पीएम पुरस्कार, 2024 की आकांक्षात्मक ब्लॉक कार्यक्रम श्रेणी के तहत 5 शीर्ष प्रदर्शन करने वाले ब्लॉकों को सम्मानित किया गया ।नीति आयोग की यह पुरस्कार विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित समारोह में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने झारखंड के ईमानदार , व्यबहार कुशल आई ए एस रवि शंकर शुक्ला को दी है ।

सनद रहे कि आजादी के बाद घोर उपेक्षित सरायकेला का का एक ब्लॉक गम्हरिया हेतु यह पारितोषिक मिला है । जिसने देश भर के 500 आकांक्षात्मक ब्लॉकों में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। स्वास्थ्य और पोषण, शिक्षा, कृषि और संबद्ध सेवाओं, बुनियादी ढांचे और सामाजिक विकास जैसे पांच फोकस क्षेत्रों में बेहतर शासन, सेवा वितरण और प्रमुख संकेतकों की निगरानी के माध्यम से सामाजिक-आर्थिक विकास में तेजी लाने हेतु दी गयी है ।

ममता को बर्खास्त कर बंगाल में राष्ट्रपति शासन की मांग पर धरना प्रदर्शन

विश्व हिन्दू परिषद ने राष्ट्रपति के नाम सरायकेला उपायुक्त को दिया ज्ञापन

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

सरायकेला , सरायकेला खरसावां जिला में वक्फ बिल संशोधन की आड़ में पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद में जारी हिंसा पर विरोध प्रदर्शन करते हुए बंगाल में राष्ट्रपति शासन लागू कराने हेतु सैकड़ों की तादाद में लोगों ने उपायुक्त कार्यालय में पहुंच कर बेनर पोस्टर के साथ प्रदर्शन किया । कभी कांग्रेस फिर भाजपा फिर झामुमो-भाजपा नेतृत्वकर्ताओं का राजनीतिक गढ़ रहा सरायकेला मे अब यह प्रदर्शन काफी समय बाद विश्व हिंदू परिषद एवं सहयोगी इकाई के सदस्यों की तरफ से जिलाध्यक्ष जेएन दास के नेतृत्व में शनिवार को जिला मुख्यालय में हिन्दू हित में देखा गया ।

प्रदर्शन के पश्चात भारत के राष्ट्रपति के नाम सरायकेला खरसावां के उपायुक्त रविशंकर शुक्ला को एक ज्ञापन भी गया सौंपा गया । उक्त ज्ञापन में विश्व हिंदू परिषद ने राष्ट्रपति से पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी की सरकार को बर्खास्त करते हुए राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग कर डाला है । हिंसा फैलने का कारण दर्शाते हुए निराकरण राष्ट्रपति शासन लागू करने की बात कही गयी है । यहां धरना-प्रदर्शन के दौरान बंगाल हिंसा पर आक्रोश व्यक्त करते नारे भी लगाये गये।

प्रदर्शन कारियों में भाजपा नेता रमेश हांसदा , बजरंग दल के नगर संयोजक राज रंजन दे, विश्व हिंदू परिषद के जिला उपाध्यक्ष अजय मिश्रा, खरसावां प्रखंड अध्यक्ष सुब्रत सिंहदेव, बजरंग जिला मंत्री उमाकांत महतो, जिला संयोजक अरुण गोराई, कोषाध्यक्ष संजय चौधरी, सरायकेला नगर पंचायत के पूर्व अध्यक्षा मिनाक्षी पट्टनायक , पिंकी मोदक ,रितिका मुखी , लक्ष्मण सिंह, आदित्यपुर से संघ के अनेकों अनुषंगी

धर्मगुरू दीवान साहब के बधावा में उमड़ा आस्था का जनसैलाब

जगदीश सीरवी

बिलाड़ा : सीरवी समाज अटबड़ा की ओर से अटबड़ा में समाज के भूखंड पर तीन दिवसीय समाज भवन व मुख्य द्वारा के निर्माण के उपलक्ष में तीन दिवसीय धार्मिक कार्यक्रम का आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में धर्मगुरू दीवान साहब व आईमाता बैल का भव्य बधावा किया गया। इससे पूर्व संध्या में भजन गायक गजेन्द्र अजमेरा व हेमराज गोयल, महेंद्र सीरवी ने आईमाता एवं अन्य देवी-देवताओं के भजनों की प्रस्तुतियां दी। भजनों के कार्यक्रम में चढ़ावो की बोलियां में समाज बधुओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। धर्मगुरू दीवान साहब के स्वागत के लिए वरघोड़ा निकाला गया। नवयुक मंडल के सदस्य धर्म ध्वज के साथ आईमाता के जयकारें लगाते चल रहे थे। शोभायात्रा जहां जहां गुजरी लोगो ने पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। सीर पर कलश धारण कर मंगल गान करते महिलाएं चल रही थी। वरघोड़े रथ में सवार धर्मगुरू दीवान माधवसिंह सभी का अभिवादन कर रहे थे। वरघोड़े में अनेक गैर मंडलों ने भाग लिया। रंग बिरंगी छतरियां एवं कलर पेपर से सुसज्जित डांडिया के साथ गैर नृत्य कर रहे सदस्य सभी के आकर्षक का केन्द्र रहे। वरघोड़ा विभिन्न मार्गों से होता हुआ समाज भूखंड परिसर में पहुंचकर धर्मसभा में परिवर्तित हो गया। धर्मगुरू दीवान साहब ने कहा की धर्म की नीव मजबूत होनी चाहिए। व्यकि को अपने धर्म का पालन करना चाहिए। धर्भ ही हमारी पहचान है। धर्म गुरू दीवान साहब ने चढ़ावो के लाभार्थियों का सम्मान किया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे सेवानिवृत्त पुलिस महानिरीक्षक पुखराज सीरवी ने कहा की सीरवी समाज के लिए गर्व की बात है की अपनी समाज बहुत ही मेहनती कोम है। सीरवी समाज ने व्यापार और सरकारी नौकरी में अपनी पहचान बनाई है। उन्होंने समाज के युवाओं को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। समाज बंधुओ ने आईमाता धर्मरथ बेल का भव्य बधावा किया। श्रद्धालुओं ने आईमाता के बेल रथ के दर्शन किए। धर्मसभा में कर्नाटक ओर अन्य प्रातों से आए सभी सीरवी समाज संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने समाज विकास पर चिंतन कर सुदृढ समाज का निर्माण करने की बात कही। वक्ताओं ने कहा कि आने वाली पीढ़ी को समाज के बुजुर्गो को साथ लेकर समाज विकास में आगे बढ़े। इस मौके पर सोजत विधानसभा क्षेत्र की विधान शौभा चौहान ने कहा की संगठित समाज के निर्माण के लिए सभी को मिलजुल कर कार्य करना चाहिए। इस अवसर पर कोटवाल मोहनलाल पंवार, जिमेदारी जिवाराम काग, अध्यक्ष मोहनलाल आगलेचा, बाबूलाल आगलेचा, जगदीश चोयल,मोहनलाल बर्फा, रामलाल गेहलोत, भगवान राम चोयल सहित समाज के अनेक गणमान्य उपस्थित रहे।

ट्रेन से कुचला गया युवक: भद्रक में शरीर, भुवनेश्वर में सिर

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: भद्रक में शाम करीब छह बजे रेलवे ट्रैक पर एक युवक की कुचलकर मौत हो गई। मृतक की पहचान भद्रक ग्रामीण थाना अंतर्गत पालो गांव निवासी रामकृष्ण पांडा (35) के रूप में हुई है। यह घटना रामकृष्ण कपाली रोड स्टेशन के पहले घटी। पता चला है कि रामकृष्ण ने कोलकाता से भुवनेश्वर आ रही शताब्दी एक्सप्रेस के सामने आकर आत्महत्या कर ली।बड़ी बात यह है कि रामकृष्ण का शव घटनास्थल पर पड़ा था, जबकि उसका सिर भुवनेश्वर से बरामद किया गया। घटनास्थल पर लोको पायलट ट्रेन के आगे ग्रिल में फंसे कटे सिर को निकालने में असमर्थ रहा। ट्रेन की देरी से बचने के लिए लोको पायलट को भुवनेश्वर जाने के लिए मजबूर होना पड़ा। लोको पायलट के अनुसार कपाली रोड के पास एक युवक अचानक रेलवे ट्रैक के पास आ गया। इसलिए ट्रेन को रोकना संभव नहीं था। बाद में जब ट्रेन रुकी तो पता चला कि युवक का सिर धड़ से अलग होकर जाल में फंस गया था। लोको पायलट और अन्य कर्मचारी करीब 10 मिनट की कोशिश के बावजूद कटे हुए सिर को निकालने में असफल रहे। इसलिए, ट्रेन उसी हालत में भुवनेश्वर पहुंची और रेलवे कर्मचारियों ने कटा हुआ सिर वहां से हटा दिया। इस बीच, भद्रक में स्थानीय लोगों ने रामकृष्ण की पहचान कर ली। इसी प्रकार, भुवनेश्वर के एक जेआईआरपी का कटा हुआ सिर जेआईआरपी भद्रक से बरामद होने की सूचना मिली थी। रामकृष्ण के परिवार के सदस्य भद्रक से भुवनेश्वर आ रहे हैं। यहां परिजनों द्वारा पहचान करने के बाद सिर सौंप दिया जाएगा।

करणी सेना के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सह झारखंड अध्यक्ष विनय सिंह की गोली मारकर हत्या

टाटा में एन एच जाम -आगजनी , 48 घंटे का अल्टिमेटम अन्यथा झारखंड बंद

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

जमशेदपुर, जमशेदपुर के बालीगुमा में करणी सेना के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सह प्रदेश अध्यक्ष विनय सिंह की रविवार को गोली मारकर हत्या कर दी गई। उनका शव एनएच-33 पर दिल्ली वर्ल्ड पब्लिक स्कूल मोड़ से करीब 500 मीटर अंदर खेत में पड़ा हुआ मिला। उनके सिर में गोली मारी गई थी। मौके से विनय की स्कूटी और पिस्तौल बरामद की गई है ।

इससे गुस्साए करणी सेना के सदस्यों ने आगजनी के बाद एनएच जाम कर दिया। तीन घंटे बाद सिटी एसपी के आश्वासन के बाद प्रदर्शनकारी माने। इसके बाद देर रात 1 बजे एनएच-33 से जाम खत्म हुआ। डिमना रोड आस्था स्पेश टाउन निवासी विनय सिंह की हत्या घटना की सूचना मिलते ही बड़ी संख्या में करणी सेना के समर्थक घटनास्थल पर पहुंच गए। सरायकेला खरसांवां जिले के समर्थक भी वाहा पहुंचे लगे । वहां मौजूद पुलिस टीम से उनकी बहस हुई और लोगों ने पुलिस को धक्का देकर घटनास्थल से खदेड़ दिया ।ह

स्थिति को बिगड़ते देख पटमदा डीएसपी बचनदेव कुजूर, उलीडीह थाना प्रभारी कुमार अभिषेक, मानगो थाना प्रभारी निरंजन कुमार और सिदगोड़ा थाना प्रभारी गुलाम रब्बानी मौके पर पहुंचे और किसी तरह भीड़ को शांत कराया। इस दौरान करीब तीन घंटे तक शव वहीं पड़ा रहा और हंगामा होता रहा। आक्रोशित भीड़ पुलिस को शव नहीं उठाने दे रही थी। बाद में पुलिस ने लोगों को शांत करवाकर शव को एमजीएम अस्पताल भेजा। शव को मोर्चरी में रखा गया है।

विनय सिंह की हत्या के बाद घटनास्थल से लेकर डिमना चौक तक बवाल होता रहा। रात 10 बजे से लेकर एक बजे तक समर्थकों ने आंदोलन किया और एनएच-33 को पूरी तरह जाम कर दिया। इससे वाहनों की लंबी कतार लग गई।

इधर, घटना से नाराज समर्थकों ने डिमना चौक के पास एनएच-33 को जाम कर दिया। इससे सड़क पर वाहनों की लंबी कतारें लग गईं और यातायात ठप हो गया। मौके पर भाजपा और आजसू पार्टी के कई नेता भी पहुंचे और हत्या की निंदा करते हुए जल्द आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग की।

विनय सिंह उलीडीह थाना क्षेत्र के आस्था स्पेस टाउन में रहते थे। डिमना चौक पर ही उनका टाइल्स की दुकानें हैं। परिजनों के मुताबिक, वे रविवार सुबह 11 बजे घर से निकले थे। आमतौर पर वे दोपहर 4 बजे तक खाना खाने घर लौटते थे, लेकिन न तो दुकान पहुंचे और न ही घर आए। जब काफी देर तक उनका पता नहीं चला और फोन भी बंद आया तो परिजन रात 8 बजे उलीडीह थाना पहुंचे और पुलिस से मदद मांगी। पुलिस ने मोबाइल लोकेशन के आधार पर खोजबीन शुरू की और रात 8 बजे उनका शव बरामद किया। पुलिस का कहना है कि शव पर चीटियां लग चुकी थीं, जिससे यह साफ है कि हत्या दोपहर 12 बजे के आसपास उनकी हत्या की गई होगी। पुलिस को विनय के बाएं हाथ में एक पिस्तौल मिली है, जिससे शुरुआती जांच में यह बात सामने आ रही है कि या तो हत्या को आत्महत्या का रूप देने की कोशिश हुई है, या फिर यह पूरी तरह सुनियोजित तरीके से हत्या की गई है। पुलिस सीसीटीवी फुटेज, मोबाइल कॉल डिटेल व अन्य सबूतों के आधार पर जांच कर रही है।

22 अप्रैल - विश्व पृथ्वी दिवस पर विशेष

पृथ्वी हमारे अस्तित्व का आधार...!

राजा पृथु ने धरती का किया दोहन,
हुई ये धरा समतल उपजाऊ मोहन।
भारत में पृथ्वी को माता कहा जाता,
राजा का पूरी पृथ्वी से ही रहा नाता।
सबसे पहले धरती पे उगाया अनाज,
संपूर्ण विश्व पे पृथु ने ही किया राज।

राजा पृथु ने धरती का किया दोहन,
हुई ये धरा समतल उपजाऊ मोहन।
सुबह नींद से जाग करों चरण स्पर्श,
जीवन सुखदायी हो धरा पे हो हर्ष।
माता भूमि : पुत्रोअहम पृथिव्या : मंत्र,
धरती पे पैर रख उच्चारण करों यत्र।

राजा पृथु ने धरती का किया दोहन,
हुई ये धरा समतल उपजाऊ मोहन।
संस्कारों में जन्म से लेकर मृत्यु तक,
कृषि से लेकर भवन के निर्माण तक।
'पृथ्वी' आराधना शुभ कार्यों में होती,

अन्न,जल,औषधि,फलफूल,वस्त्र देती।

राजा पृथु ने धरती का किया दोहन,
हुई ये धरा समतल उपजाऊ मोहन।
हम धरती के ऋण से कभी न मुक्त,
सबकुछ असीम दें कर देती हैं तृप्त।
पृथ्वी हमारे अस्तित्व का आधार है,
दिया हमें जो आश्रय ये उपकार हैं।

संजय एम तराणेकर

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023